एम. ए. द्वितीय सत्र **पाठ्यक्रम – MSKTC-204**

संस्कृत
व्याकरण
(कृदन्त प्रकरण से लेकर अन्त तक तथा कारक प्रकरण)
इकाई 1-20

सम्पादक: डॉ. देवराज

दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला - 5

विषयानुक्रमणिका

इकाई क्रमांक	इकाई	पृष्ठ संख्या
प्रथम इकाई	पूर्वकृदन्त-1	2-15
द्वितीय इकाई	पूर्वकृदन्त-2	16-45
तृतीय इकाई	पूर्वकृदन्त-3	46-65
चतुर्थ इकाई	पूर्वकृदन्त-4	66-88
पञ्चम इकाई	उत्तरकृदन्त-1	89-97
षष्ठ इकाई	उत्तरकृदन्त-2	98-107
सप्तम इकाई	उत्तरकृदन्त-3	108-121
अष्टम इकाई	उत्तरकृदन्त-4	122-134
नवम इकाई	समास-1	135-152
दशम इकाई	समास-2	153-168
एकादश इकाई	समास-3	169-176
द्वादश इकाई	समास-4	177-181
त्रयोदश इकाई	तद्धित-1	182-193
चतुर्दश इकाई	तद्धित-2	194-203
पञ्चदश इकाई	स्त्रीप्रत्यय-1	204-221
षोडश इकाई	स्त्रीप्रत्यय-2	222-228
सप्तदश इकाई	कारक प्रकरण- प्रथमा व द्वितीया विभक्ति	229-237
अष्टादश इकाई	कारक प्रकरण- तृतीया व चतुर्थ विभक्ति	238-243
नवदश इकाई	कारकप्रकरण-पञ्चमी व षष्ठी विभक्ति	244-250
विंशतिः इकाई	कारक प्रकरण- सप्तमी विभक्ति	251-254

प्रथम इकाई
पूर्वकृदन्त-1

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 वर्णित प्रत्यय

1.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 769 से 786 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

1.5 सारांश

1.6 कठिन शब्दावली

1.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1.8 सहायक ग्रन्थ

1.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों, प्रथम सत्र में आपने नाटक तथा काव्य के विषय में अध्ययन किया, जिसके अन्तर्गत आपने उत्तररामचरित नाटक और नैषधीयचरित महाकाव्य को पढ़ा। इसके अतिरिक्त आपने कादम्बरी, साहित्यदर्पण, तर्कभाषा और साँख्य तथा वेदान्त का भी अध्ययन किया। इस सत्र के अष्टम पत्र में हम वरदराजकृत लघुसिद्धान्तकौमुदी के कृदन्त प्रकरण से लेकर अन्त तक तथा वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कारक प्रकरण का अध्ययन करेंगे। इस पाठ में पूर्वकृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत कृत् संज्ञा, तव्यत्, अनीयर्, केलिमर्, यत्, क्यप्, तथा ण्यत् प्रत्यय का अध्ययन किया जायेगा। धातु में जिस प्रत्यय को जोड़कर संज्ञा, विशेषण या अव्यय बनता है, उसको कृत् प्रत्यय कहते हैं और उसके द्वारा जो शब्द सिद्ध होता है उसको कृदन्त कहते हैं। जैसे- कृ धातु से तृच् प्रत्यय जोड़कर कर्तृ शब्द बना। यहाँ पर तृच् (कृत्) प्रत्यय है और कर्तृ कृदन्त शब्द है। इस अध्याय में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित सूत्रों को उदाहरण सहित वर्णित करने का प्रयास किया जा रहा है।

1.2 उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप जानने में समर्थ होंगे-

- लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित सूत्रों का अर्थ।
- धातु के साथ प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाने में सक्षम हो जायेंगे।
- किसी शब्द को बनाने में प्रयुक्त प्रत्ययों और सूत्रों को जानने में सक्षम हो जायेंगे।

1.3 वर्णित प्रत्यय

इस अध्याय में पूर्वकृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत कृत् संज्ञा, तव्यत्, अनीयर्, केलिमर्, यत्, क्यप्, तथा ण्यत् प्रत्यय का वर्णन किया गया है। संस्कृत के नाम पद दो अर्थवत् तत्त्वों के योग से बनते हैं। प्रतिपदिक+सुप्। प्रातिपदिक दो प्रकार के होते हैं - व्युत्पन्न तथा अव्युत्पन्न। जिन प्रातिपदिकों में प्रकृति और प्रत्यय की कल्पना सरलता से की जाती है उन्हें व्युत्पन्न तथा जिनमें प्रकृति प्रत्यय की कल्पना नहीं की जा सकती उन्हें अव्युत्पन्न प्रातिपादिक कहते हैं। निरुक्तकार तथा शाकटायन आदि कुछ वैयाकरण सभी नाम अर्थात् प्रातिपदिकों को धातुज होने के कारण व्युत्पन्न नहीं मानते। इसलिए उन्होंने प्रतिपदिक संज्ञा के लिए दो सूत्र बनाये हैं। वे 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' अव्युत्पन्न नामों की तथा 'कृत्तद्धितसमासाश्च' व्युत्पन्न नामों की प्रातिपदिक संज्ञा करते हैं।

संस्कृत के व्युत्पन्न नाम दो प्रकार के प्रत्ययों के योग से बनते हैं-कृत् तथा तद्धित। जो प्रत्यय धातु के साथ जुड़कर नाम बनाते हैं उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं। इन्हीं को आधुनिक भाषा वैज्ञानिक प्राथमिक प्रत्यय (प्राइमरी सफिक्स) कहते हैं। कृदन्त तथा अन्य अन्युत्पन्न नामों से जुड़कर अर्थ परिवर्द्धन करने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय (सैकेण्डरी सफिक्स) कहलाते हैं। प्रस्तुत अध्याय में कृत् संज्ञा, तव्यत्, अनीयर्, केलिमर्, यत्, क्यप्, तथा ण्यत् प्रत्यय पर विचार किया जायेगा।

जैसा कि आपने प्रस्तावना में पढ़ा होगा कि धातु में जिस प्रत्यय को जोड़कर संज्ञा, विशेषण और अव्यय बनाया जाता है, उसे कृत प्रत्यय कहते हैं। कृत प्रत्ययान्त अतिङ् होते हैं। अतिङ् का अर्थ है जिसके अन्त में तिङ्न्त नहीं होते। तिङ्न्त सदा क्रिया ही होते हैं। किन्तु कृत् प्रत्ययान्त संज्ञा, विशेषण या अव्यय होते हैं। इस पाठ में लघुसिद्धान्तकौमुदी में प्रयुक्त सूत्रों का अर्थ लिखकर उसे उदाहरण देकर स्पष्ट करने का प्रयास किया जायेगा।

1.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 769 से 786 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- **धातोः**

इस सूत्र से लेकर तृतीय अध्याय की समाप्ति पर्यन्त जो प्रत्यय कहे गये हैं, वह धातु से परे हो। कहने का तात्पर्य यह है कि यह सूत्र तृतीय अध्याय के प्रथम पाद का 19 वाँ सूत्र है, इस सूत्र से लेकर तृतीयाध्याय की समाप्ति पर्यन्त जो भी प्रत्यय हों वे धातु के बाद हों, ऐसा अधिकार यह सूत्र करता है।

- **कर्तरि कृत्**

कृत् प्रत्यय कर्त्ता अर्थ में ही होते हैं।

- **तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः**

कृत्य, क्त और खलर्थ भाव और कर्म अर्थ में ही होते हैं।

- **तव्यत्तव्यानीयरः**

धातु से तव्यत्, तव्य और अनीयर् प्रत्यय होते हैं।

- **एधितव्यम्-**

एध् धातु से 'तव्यत्तव्यानीयरः' सूत्र से तव्यत् प्रत्यय होने पर

एध्+तव्यत् (तव्य) तव्यत् के त् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होने पर तव्य शेष रहा।

एध्+तव्य 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से इट् आगम तथा ट् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्यलोपः' से लोप

एध्+इ+तव्य = एधितव्य 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

एधितव्य+सु नपुंसकलिंग होने के कारण सु को 'अतोऽम्' से अम् आदेश

एधितव्य+अम् 'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप होकर

एधितव्यम् सिद्ध हुआ।

- **एधनीयम्-**

एध् धातु से 'तव्यत्तव्यानीयरः' सूत्र से अनीयर् प्रत्यय होने पर

एध्+अनीयर् र् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञातथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होने पर

एध्+अनीय = एधनीय 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

एधनीय+सु नपुंसकलिंग होने के कारण सु को 'अतोऽम्' से अम् आदेश

एधनीय+अम् 'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप होकर

एधनीयम् सिद्ध हुआ।

- **चेतव्यः -**

चि धातु से 'तव्यत्तव्यानीयरः' सूत्र से तव्यत् प्रत्यय होने पर

चि+तव्यत् (तव्य) तव्यत् के त् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होने पर तव्य शेष रहा।

चि+तव्य 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण होकर

चे+तव्य = चेतव्य 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

चेतव्य+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' सेउसका लोप होकर

चेतव्य+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

चेतव्य+रु	‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर

चेतव्य+र्	‘खरवसानयोर्विसर्जनीयः’ सूत्र से र् को विसर्ग होकर

चेतव्यः	सिद्ध हुआ।

- **चयनीयः -**

चि धातु से ‘तव्यत्तव्यानीयरः’ सूत्र से अनीयर् प्रत्यय होने पर

चि+अनीयर्	र् की ‘हलन्त्यम्’ से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होने पर

चि+अनीय	‘सार्वधातुकार्धधातुकयोः’ सूत्र से गुण होकर

चे+अनीय	‘एचोऽयवायावः’ सूत्र से ए को अय् आदेश

च्+अय्+अनीय = चयनीय ‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर

चयनीय+सु	‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर

चयनीय+स्	‘ससजुषो रुः’ सूत्र से स् को रु आदेश होकर

चयनीय+रु	‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर

चयनीय+र्	‘खरवसानयोर्विसर्जनीयः’ सूत्र से र् को विसर्ग होकर

चयनीयः	सिद्ध हुआ।

- **वार्तिक - केलिमर उपसंख्यानम्** धातुओं में केलिमर प्रत्यय का भी उपसंख्यान करना चाहिए अर्थात् धातुओं से केलिमर् प्रत्यय भी होता है।

- **पचेलिमाः -**

पच् धातु से ‘केलिमर उपसंख्यानम्’ इस वार्तिक से केलिमर् प्रत्यय

पच्+केलिमर्	‘लशक्वतद्धिते’ सूत्र से क् की तथा ‘हलन्त्यम्’ से र् की इत्संज्ञा करके ‘तस्य लोपः’ से उनका लोप करने पर एलिम शेष रहा।

पच्+एलिम = पचेलिम	‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से जस् विभक्ति होने पर

पचेलिम+जस्	‘चुटू’ सूत्र से ज् की इत्संज्ञा करके ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर

पचेलिम+अस्	‘प्रथमयोः पूर्वसवर्णः’ सूत्र से सवर्ण दीर्घ एकादेश होने पर

पचेलिमास्	‘ससजुषो रुः’ सूत्र से स् को रु आदेश होकर

पचेलिमारु	‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर

पचेलिमार्　　‘खरवसानयोर्विसर्जनीयः’ सूत्र से र् को विसर्ग होकर

पचेलिमाः　　सिद्ध हुआ।

- **भिदेलिमाः -**

भिद् धातु से ‘केलिमर उपसंख्यानम्’ इस वार्तिक से केलिमर् प्रत्यय

भिद्+केलिमर्　‘लशक्वतद्धिते’ सूत्र से क् की तथा ‘हलन्त्यम्’ से र् की इत्संज्ञा करके ‘तस्यलोपः’ से उनका लोप करने पर एलिम शेष रहा।

भिद्+एलिम = पचेलिम　‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से जस् विभक्ति होने पर

भिदेलिम+जस्　चुटू’ सूत्र से ज् की इत्संज्ञा करके ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर

भिदेलिम+अस्　‘प्रथमयोः पूर्वसवर्णः’ सूत्र से सवर्ण दीर्घ एकादेश होने पर

भिदेलिमास्　　‘ससजुषो रुः’ सूत्र से स् को रु आदेश होकर

भिदेलिमारु　　‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप हो

भिदेलिमार्　　‘खरवसानयोर्विसर्जनीयः’ सूत्र से र् को विसर्ग होकर

भिदेलिमाः　　सिद्ध हुआ।

- **कृत्यल्युटो बहुलम्**　कृत्य और ल्युट् प्रत्यय बहुल होते हैं।

- **स्नानीयम् -**

स्ना धातु से ‘कृत्यल्युटो बहुलम्’ सूत्र से अनीयर् प्रत्यय हुआ

स्ना+अनीयर्　　र् की ‘हलन्त्यम्’ से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होने पर

स्ना+अनीय　　‘अकः सवर्णे दीर्घः’ सूत्र से सवर्ण दीर्घ होकर

स्नानीय　　‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर

स्नानीय+सु　　नपुंसकलिंग होने के कारण सु को ‘अतोऽम्’ से अम् आदेश

स्नानीय+अम्　‘अमिपूर्वः’ से पूर्वरूप होकर

स्नानीयम्　　सिद्ध हुआ।

- **दानीयः -**

दा धातु से ‘कृत्यल्युटो बहुलम्’ सूत्र से अनीयर् प्रत्यय हुआ

दा+अनीयर्　　र् की ‘हलन्त्यम्’ से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होने पर

दा+अनीय　　‘अकः सवर्णे दीर्घः’ सूत्र से सवर्ण दीर्घ होकर

दानीय 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

दानीय+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

दानीय+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

दानीय+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

दानीय+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

दानीयः सिद्ध हुआ।

अचो यत् अजन्त धातु से यत् प्रत्यय होता है।

- **चेयम् -**

चि धातु से 'अचो यत्' सूत्र से यत् प्रत्यय हुआ

चि+यत् त् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से इसका लोप हुआ

चि+य 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण होकर

चेय 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

चेय+सु सु को 'अतोऽम्' से अम् आदेश

चेय+अम् 'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप होकर

चेयम् सिद्ध हुआ।

- **ईद्यति** यत् प्रत्यय के परे होन पर धातु के अन्त में आकार को ईकार आदेश होता है।

- **देयम् -**

दा धातु से 'अचो यत्' सूत्र से यत् प्रत्यय हुआ

दा+यत् त् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से इसका लोप हुआ

दा+य 'ईद्यति' सूत्र से आ को ई आदेश होने पर

दी+य 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण होकर

देय 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

देय+सु सु को 'अतोऽम्' से अम् आदेश

देय+अम् 'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप होकर

देयम् सिद्ध हुआ।

- **ग्लेयम् -**

ग्लै धातु से 'अचो यत्' सूत्र से यत् प्रत्यय हुआ

ग्लै+यत्		त् की ‘हलन्त्यम्’ से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से इसका लोप हुआ

ग्लै+य		‘आदेच उपदेशेऽशिति’ सूत्र से ऐकार को आकार

ग्ला+य		‘ईद्यति’ सूत्र से आ को ई आदेश होने पर

ग्ली+य		‘सार्वधातुकार्धधातुकयोः’ सूत्र से गुण होकर

ग्लेय		‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर

ग्लेय+सु		सु को ‘अतोऽम्’ से अम् आदेश

ग्लेय+अम्		‘अमिपूर्वः’ से पूर्वरूप होकर

ग्लेयम्		सिद्ध हुआ।

- **पोरदुपधात्**	पवर्गान्त तथा ”स्व अकार उपधा वाली धातु के साथ यत् प्रत्यय होता है।
  - **शप्यम् -**

शप् धातु से ‘पोरदुपधात्’ सूत्र से यत् प्रत्यय हुआ

शप्+यत्		त् की ‘हलन्त्यम्’ से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से इसका लोप हुआ

शप्+य = शप्य	‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर

शप्य+सु		सु को ‘अतोऽम्’ से अम् आदेश

शप्य+अम्		‘अमिपूर्वः’ से पूर्वरूप होकर

शप्यम्		सिद्ध हुआ।

- **लभ्यम्-**

लभ् धातु से ‘पोरदुपधात्’ सूत्र से यत् प्रत्यय हुआ

लभ्+यत्		त् की ‘हलन्त्यम्’ से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से इसका लोप हुआ

लभ्+य = लभ्य	‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर

लभ्य+सु		सु को ‘अतोऽम्’ से अम् आदेश

लभ्य+अम्		‘अमिपूर्वः’ से पूर्वरूप होकर

लभ्यम्		सिद्ध हुआ।

- **एति-स्तु-शास्-वृ-दृ-जुषः क्यप्**	इण्, स्तु, शास्, वृ, दृ और जुष् धातुओं से क्यप् प्रत्यय होता है।
- **ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्**	पित् कृत प्रत्यय के परे रहने पर ”स्व वर्ण को तुक् आगम होता है।
  - **इत्यः -**

इ धातु से ‘एति-स्तु-शास्-वृ-दृ-जुषः क्यप्’ सूत्र से क्यप् प्रत्यय

इ+क्यप्		क् की ‘लशक्वतद्धिते’, प् की ‘हलन्त्यम्’ से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से इनका लोप होकर

य शेष रहा

इ+य 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से तुक् (त्) आगम

इ+त्+य = इत्य 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

इत्य+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

इत्य+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

इत्य+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

इत्य+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

इत्यः सिद्ध हुआ।

- **स्तुत्यः -**

स्तु धातु से 'एति-स्तु-शास्-वृ-दृ-जुषः क्यप्' सूत्र से क्यप् प्रत्यय

स्तु+क्यप् क् की 'लशक्वतद्धिते', प् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से इनका लोप होकर य शेष रहा

स्तु+य 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से तुक् (त्) आगम

स्तु+त्+य = स्तुत्य 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

स्तुत्य+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

स्तुत्य+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

स्तुत्य+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

स्तुत्य+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

स्तुत्यः सिद्ध हुआ।

- **शास् इदङ्हलोः** अङ् या हलादि कित् और ङित् परे होने पर शास् धातु की उपधा को ह्रस्व इकार आदेश होता है।

- **शिष्यः -**

शास् धातु से 'एति-स्तु-शास्-वृ-दृ-जुषः क्यप्' सूत्र से क्यप् प्रत्यय

शास्+क्यप् क् की 'लशक्वतद्धिते', प् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से इनका लोप होकर य शेष रहा

शास्+य 'शास इदङ्हलोः' सूत्र से उपधा आ को इकार आदेश

शिस्+य 'शासिवसिघसीनां च' सूत्र से स् को ष् आदेश

शिष्+य = शिष्य 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

शिष्य+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

शिष्य+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

शिष्य+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

शिष्य+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

शिष्यः	सिद्ध हुआ।

- **वृत्यः -**

वृ धातु से 'एति-स्तु-शास्-वृ-दृ-जुषः क्यप्' सूत्र से क्यप् प्रत्यय

वृ+क्यप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', प् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से इनका लोप होकर य शेष रहा

वृ+य	'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से तुक् (त्) आगम

वृ+त्+य = वृत्य 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

वृत्य+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

वृत्य+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

वृत्य+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

वृत्य+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

वृत्यः	सिद्ध हुआ।

- **आदृत्यः -**

आ उपसर्ग पूर्वक दृ धातु से 'एति-स्तु-शास्-वृ-दृ-जुषः क्यप्' सूत्र से क्यप् प्रत्यय

आदृ+क्यप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', प् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से इनका लोप होकर य शेष रहा

आदृ+य	'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से तुक् (त्) आगम

आदृ+त्+य = आदृत्य 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

आदृत्य+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

आदृत्य+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

आदृत्य+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

आदृत्य+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

आदृत्यः	सिद्ध हुआ।

- **जुष्यः-**

जुष् धातु से 'एति-स्तु-शास्-वृ-दृ-जुषः क्यप्' सूत्र से क्यप् प्रत्यय

जुष्+क्यप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', प् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से इनका लोप होकर य शेष रहा

जुष्+य = जुष्य कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

जुष्य+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

जुष्य+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

जुष्य+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

जुष्य+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

जुष्यः	सिद्ध हुआ।

- **मृजेर्विभाषा** मृज् धातु से क्यप् प्रत्यय विकल्प से होता है।
  - **मृज्यः -**

मृज् धातु से 'मृजेर्विभाषा' सूत्र से क्यप् प्रत्यय हुआ

मृज्+क्यप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', प् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से इनका लोप होकर य शेष रहा

मृज्+य = मृज्य 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

मृज्य+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

मृज्य+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

मृज्य+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

मृज्य+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

मृज्यः	सिद्ध हुआ।

- **ऋहलोर्ण्यत्**
  ऋवर्णान्त और हलन्त धातुओं से ण्यत् प्रत्यय होता है।
  - **कार्यम्, हार्यम्, धार्यम् -**

कृ, हृ, धृ धातु से 'ऋहलोर्ण्यत्' सूत्र से ण्यत् प्रत्यय

कृ, हृ, धृ+ण्यत्	ण् की 'चुटू', त् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर य शेष रहता है।

कृ, हृ, धृ+य	'अचोञ्णिति' सूत्र से ऋ को आर् वृद्धि

क्+आर्+य, ह्+आर्+य्, ध्+आर्+य = कार्य, हार्य, धार्य

कार्य, हार्य, धार्य 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

कार्य, हार्य, धार्य+सु	सु को 'अतोऽम्' से अम् आदेश

कार्य, हार्य, धार्य+अम् 'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप होकर

कार्यम्, हार्यम्, धार्यम् सिद्ध हुआ।

- **चजोः कु घिण्ण्यतोः**

  घित् और ण्यत् प्रत्यय के परे होने पर चकार और जकार के स्थान पर कवर्ग आदेश होता है।

- **मृजेर्वृद्धिः**

  सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे रहते 'मृज्' अङ्ग के 'इक्' को वृद्धि होती है।

- **भोज्यं भक्ष्ये**

  भक्ष्य अर्थ में 'भुज्' धातु से 'ण्यत्' प्रत्यय परे रहते कुत्व का अभाव निपातन से होकर 'भोज्यम्' शब्द बनता है अर्थात् ण्यत् परे रहते चजोः कु घिण्ण्यतोः से प्राप्त कुत्व नहीं होता।

  - **मार्ग्यः -**

मृज् धातु से 'ऋहलोर्ण्यत्' सूत्र से ण्यत् प्रत्यय

मृज्+ण्यत्	ण् की 'चुटू', त् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर य शेष रहता है।
मृज्+य	'चजोः कु घिण्ण्यतोः' सूत्र से ज् को कवर्ग आदेश
मृग्+य	'मृजेर्वृद्धिः' सूत्र से ऋ को आर् वृद्धि
म्+आर्+ग्+य = मार्ग्य	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
मार्ग्य+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
मार्ग्य+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर
मार्ग्य+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
मार्ग्य+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
मार्ग्यः	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए–

अभ्यास प्रश्न 1

1. कृत् प्रत्यय किस अर्थ में होते हैं
2. कृत्य, क्त एवं खलर्थ प्रत्यय किस अर्थ में होते हैं
3. एध् धातु से अनीयर् प्रत्यय करने वाला सूत्र है?
4. भिदेलिमा में किस सूत्र से तथा कौन सा प्रत्यय होता है?

5. दानीय में अनीयर् प्रत्यय करने वाला सूत्र है?
6. 'दा+यत्' में ईकार के लिए प्रयुक्त सूत्र है?
7. शप् धातु से यत् प्रत्यय करने वाला सूत्र बताएं?
8. वृत्यः में तुकागम करने वाला सूत्र है?
9. मार्ग्य में प्रयुक्त धातु और प्रत्यय है?
10. कार्यम् एवं हार्यम् में प्रातिपदिक संज्ञा किस सूत्र से हुई?

1.5 सारांश

इस अध्याय में कृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत कृत्यसंज्ञा विधायक सूत्र, ण्वुल्तृच् प्रत्यय विधायक सूत्र, तव्यत् प्रत्यय, अनीयर् प्रत्यय, केलिमर् प्रत्यय, यत् प्रत्यय, ल्युट् प्रत्यय, क्यप् प्रत्यय एवं ण्यत् प्रत्यय के सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि प्रक्रिया को वर्णित किया गया है। यह अध्याय विद्यार्थियों को सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझाने में सहायक सिद्ध होगा।

1.6 कठिन शब्दावली

- **वार्त्तिकम्**

  एक व्याख्यापरक अतिरिक्त नियम जो उक्त, अनुक्त या किसी अधूरी बात की व्याख्या करता है अथवा किसी छूटी हुई बात को जोड़ देता है।

- **उपसंख्यानम्**

  जोड़ना, बाद में जोड़ा हुआ, अतिरिक्त निर्देशन। यह शब्द प्रायः कात्यायन के वार्तिकों के लिए प्रयुक्त होता है, जिनका आशय पाणिनि के सूत्रें में रह रही छूट व भूलों को सुधारना है, अतः यह परिशिष्ट का काम देते हैं।

- **केलिमर्**

  तव्यत् आदि के समान केलिमर् प्रत्यय भी भाव और कर्म में होता है।

- **क्यप्**

  इण्, स्तु, शास, वृ, दृ और जुष् धातु से क्यप् प्रत्यय होता है। क्यप् प्रत्यय यत् और ण्यत् का बाधक है। क्यप् के ककार और पकार की इत्संज्ञा होती है, शेष केवल य रहता है।

1.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. कर्ता अर्थ में	2. भाव और कर्म में
3. तव्यत्तव्यानीयरः	4. केलिमर् उपसंख्यानम् से केलिमर्
5. कृत्यल्युटो बहुलम्	6.ईद्यति
7. पोरदुपधात्	8. ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्

9. मृज्+ण्यत्   10. कृत्तद्धितसमासाश्च

1.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

1.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. **निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-**

तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः। वा० केलिमर उपसंख्यानम्। कृत्यल्युटो बहुलम्। ईद् यति। ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्। मृजेर्विभाषा। चजोः कु घिण्ण्यतोः।

2. **निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-**

पचेलिमाः, दानीय, ग्लेयम्, शप्यम्, स्तुत्यः, शिष्यः, मृज्यः तथा हार्यम्।

द्वितीय इकाई
पूर्वकृदन्तम्-2

संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 वर्णित प्रत्यय

2.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 787 से 813 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

2.5 सारांश

2.6 कठिन शब्दावली

2.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

2.8 सहायक ग्रन्थ

2.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों, प्रथम अध्याय में आपने लघुसिद्धान्तकौमुदी के कृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत 769 से 786 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि पढ़ी, जिसमें कृत् संज्ञा, तव्यत्, अनीयर्, केलिमर्, यत्, क्यप्, तथा ण्यत् प्रत्यय का अध्ययन किया। अब कृदन्त प्रकरण के 787 से 813 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि की जाएगी, जिसमें आप ण्वुल्, तृच्, ल्यु, णिनि, अच्, क, अण्, ट, खश्, खच्, मनिन्, क्वनिप्, वनिप्, विच् तथा क्विप आदि प्रत्ययों का अध्ययन करेंगे । इस अध्याय में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित सूत्रों को उदाहरण सहित वर्णित करने का प्रयास किया जा रहा है।

2.2 उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप जानने में समर्थ होंगे-

- लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत पूर्वकृदन्त के सूत्रों का अर्थ।
- धातु के साथ प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाने में सक्षम हो जायेंगे।
- किसी शब्द को बनाने में प्रयुक्त प्रत्ययों और सूत्रों को जानने में सक्षम हो जायेंगे।

2.3 वर्णित प्रत्यय

द्वितीय अध्याय में पूर्वकृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत ण्वुल्, तृच्, ल्यु, णिनि, अच्, क, अण्, ट, खश्, खच्, मनिन्, क्वनिप्, वनिप्, विच् तथा क्विप प्रत्यय का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में कृदन्त प्रकरण के 784 से 813 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि की जाएगी। जिससे विद्यार्थी पूर्वकृदन्त के सूत्रों को उदाहरण सहित जानने में समर्थ हो सकेंगे।

2.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 787 से 813 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- **ण्वुल्तृचौ** धातु से ण्वुल् और तृच् होते हैं।
- **युवोरनाकौ** यु और वु के स्थान पर अन और अक आदेश होते है।
  - **कारकः -**

कृ धातु से 'ण्वुल्-तृचौ' सूत्र से ण्वुल् प्रत्यय

कृ+ण्वुल् ण् की 'चुटू', ल् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर वु शेष रहता है।

कृ+वु 'युवोरनाकौ' सूत्र से वु को अक आदेश

कृ+अक 'अचोञ्णिति' सूत्र से ऋ को आर् वृद्धि

क्+आर्+अक = कारक 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

कारक+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कारक+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

कारक+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कारक+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर कारकः सिद्ध हुआ।

  - **कर्ता -**

कृ धातु से 'ण्वुल्-तृचौ' सूत्र से तृच् प्रत्यय

कृ+तृच् च् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर तृ शेष रहा।

कृ+तृ 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से क् के ऋ को अर् गुण

क्+अर्+तृ = कर्तृ 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

कर्तृ+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कर्तृ+स् 'ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च' सूत्र से ऋ को अनघ् आदेश

क+र्+त्+अनङ्+स् ङ् की 'हलन्त्यम्', न के अ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्यलोपः' से इनका लोप होने पर अन् शेष रहा।

कर्तन्+स्		'असृन्तृच्स्वसृनसृनेष्टृत्वष्टृक्षतृहोतृपोतृप्रशास्तृणाम्' सूत्र से उपधा को दीर्घ होकर

कर्तान्+स्		'अपृक्त एकाल् प्रत्ययः' सूत्र से स् की अपृक्तसंज्ञा करके तथा 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से उसका लोप होने पर

कर्तान्		'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर

कर्ता		सिद्ध हुआ।

- **नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः**

नन्दि, ग्रहि और पच् आदि धातुओं से क्रमशः ल्यु, णिनि और अच् प्रत्यय होते हैं।

- **नन्दनः -**

नन्दि धातु से 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' सूत्र से ल्यु प्रत्यय हुआ।

नन्दि+ल्यु		ल् की 'लशक्वतद्धिते' से इत्संज्ञा तथा उसका 'तस्य लोपः' से लोप होकर यु शेष

नन्दि+यु		'णेरनिटि' सूत्र से इ का लोप

नन्द्+यु		'युवोरनाकौ' सूत्र से यु को अन आदेश

नन्द्+अन = नन्दन		'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

नन्दन+सु		'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

नन्दन+स्		'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

नन्दन+रु		'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

नन्दन+र्		'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

नन्दनः		सिद्ध हुआ।

- **जनार्दनः -**

जन शब्दपूर्वक अर्दि धातु से 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' सूत्र से ल्यु प्रत्यय हुआ।

जन+अर्दि+ल्यु	ल् की 'लशक्वतद्धिते' से इत्संज्ञा तथा उसका 'तस्य लोपः' से लोप होकर यु शेष

जन+अर्दि+यु	'णेरनिटि' सूत्र से इ का लोप

जन+अर्द्+यु	'युवोरनाकौ' सूत्र से यु को अन आदेश

जन+अर्द्+अन

जन+अर्दन		'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर

जनार्दन		'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

जनार्दन+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

जनार्दन+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

जनार्दन+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

जनार्दन+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

जनार्दनः	सिद्ध हुआ।

- **लवणः -**

लू धातु से 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' सूत्र से ल्यु प्रत्यय हुआ।

लू+ल्यु	ल् की 'लशक्वतद्धिते' से इत्संज्ञा तथा उसका 'तस्य लोपः' से लोप होकर यु शेष

लू+यु	'युवोरनाकौ' सूत्र से यु को अन आदेश

लू+अन	'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से उ को गुण होकर

लो+अन	'एचोऽयवायावः' सूत्र से ओ को अव् आदेश

ल्+अव्+अन = लवन	नन्द्यादिगण में निपातन से न को णत्व होकर

लवण	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

लवण+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

लवण+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

लवण+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

लवण+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

लवणः	सिद्ध हुआ।

- **ग्राही -**

ग्रह् धातु से 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' सूत्र से णिनि प्रत्यय हुआ।

ग्रह्+णिनि	ण् की 'चुटू', न् के इ की 'उपदेशे{जनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा तथा उनका 'तस्य लोपः' से लोप होकर इन् शेष रहा।

ग्रह्+इन्	'अत उपधायाः' सूत्र से धातु के उपधा अकार को वृद्धि

ग्राह्+इन् = ग्राहिन्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

ग्राहिन्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

ग्राहिन्+स्	'सौ च' सूत्र से उपधा इ को दीर्घ होकर

ग्राहीन्+स्	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से उसका लोप होने पर

ग्राहीन्	'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर

ग्राही सिद्ध हुआ।

- **स्थायी -**

स्था धातु से 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' सूत्र से णिनि प्रत्यय हुआ।

स्था+णिनि णू की 'चुटू', न् के इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा तथा उनका 'तस्य लोपः' से लोप होकर इन् शेष रहा।

स्था+इन् 'आतो युक् चिण्कृतोः' सूत्र से युक् आगम

स्था+युक्+इन् क् की 'हलन्त्यम्', उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा तथा उनका 'तस्य लोपः' से लोप होकर य् शेष रहा

स्था+य्+इन् = स्थायिन् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

स्थायिन्+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

स्थायिन्+स् 'सौ च' सूत्र से उपधा इ को दीर्घ होकर

स्थायीन्+स् 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से उसका लोप होने पर

स्थायीन् 'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर

स्थायी सिद्ध हुआ।

- **मन्त्री -**

मन्त्रि धातु से 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' सूत्र से णिनि प्रत्यय हुआ।

मन्त्रि+णिनि णू की 'चुटू', न् के इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा तथा उनका 'तस्य लोपः' से लोप होकर इन् शेष रहा।

मन्त्रि+इन् 'णेरनिटि' सूत्र से इन् के इ का लोप होकर

मन्त्रि+न् =मन्त्रिन् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

मन्त्रिन्+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

मन्त्रिन्+स् 'सौ च' सूत्र से उपधा इ को दीर्घ होकर

मन्त्रीन्+स् 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से उसका लोप होने पर

मन्त्रीन् 'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर

मन्त्री सिद्ध हुआ।

- **पचः -**

पच् धातु से 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' सूत्र से अच् प्रत्यय हुआ।

पच्+अच् अच् के च् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप हुआ।

पच्+अ = पच 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

पच+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

पच+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

पच+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

पच+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

पचः सिद्ध हुआ।

- **इगुपध-ज्ञा-प्री-किरः कः**

जिसकी उपधा में इक् हो ऐसी ज्ञा, प्री और कृ धातुओं से क प्रत्यय होता है।

- **बुधः, कृशः -**

बुध्, कृश् धातु से 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' इस सूत्र से क प्रत्यय हुआ।

बुध्, कृश्+क 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

बुध्, कृश्+अ = बुध, कृश 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

बुध, कृश+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

बुध, कृश+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

बुध, कृश+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

बुध, कृश+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

बुधः, कृशः सिद्ध हुए।

ज्ञः -

ज्ञा धातु से 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' इस सूत्र से क प्रत्यय हुआ।

ज्ञा+क 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

ज्ञा+अ 'आतो लोप इटि च' सूत्र से ज्ञा के आ का लोप होकर

ज्ञ्+अ = ज्ञ 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

ज्ञ+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

ज्ञ+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

ज्ञ+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

ज्ञ+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

ज्ञः सिद्ध हुआ।

प्रियः -

प्री धातु से 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' इस सूत्र से क प्रत्यय हुआ।

प्री+क 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

प्री+अ 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से इयङ् आदेश होकर

प्+र्+इयङ्+अ ङ् की 'हलन्त्यम्', य के अ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्यलोपः' से उनका लोप होने पर इय् शेष रहा।

प्+र्+इय्+अ = प्रिय 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

प्रिय+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

प्रिय+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

प्रिय+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

प्रिय+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

प्रियः सिद्ध हुआ।

- **किरः -**

कृ धातु से 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' इस सूत्र से क प्रत्यय हुआ।

कृ+क 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

कृ+अ 'ऋत इद्धातोः' सूत्र से ऋकार के स्थान पर रपर करके इर् आदेश

क्+इर्+अ = किर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

किर+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

किर+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

किर+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

किर+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

किरः सिद्ध हुआ।

- **आतश्चोपसर्गे**

  उपसर्ग के उपपद रहने पर आकारान्त धातुओं से क प्रत्यय होता है।

- **प्रज्ञः -**

प्र उपसर्ग पूर्वक ज्ञा धातु से 'आतश्चोपसर्गे' सूत्र से क प्रत्यय हुआ।

प्र+ज्ञा+क 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

प्र+ज्ञा+अ 'आतो लोप इटि च' सूत्र से ज्ञा के आ का लोप होकर

प्र+ज्ञ्+अ = प्रज्ञ 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

प्रज्ञ+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

प्रज्ञ+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

प्रज्ञ+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

प्रज्ञ+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

प्रज्ञः सिद्ध हुआ।

सुग्लः -

सु उपसर्ग पूर्वक ग्लै धातु से 'आतश्चोपसर्गे' सूत्र से क प्रत्यय हुआ।

सु+ग्लै+क 'आदेच उपदेशेऽशिति' सूत्र से ऐ को आ

सु+ग्ला+क 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अशेष रहा।

सु+ग्ला+अ 'आतो लोप इटि च' सूत्र से ग्ला के आ का लोप होकर

सु+ग्ल्+अ = सुग्ल 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

सुग्ल+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

सुग्ल+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

सुग्ल+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

सुग्ल+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

सुग्लः सिद्ध हुआ।

- **गेहे कः**

  ग्रह् धातु से क प्रत्यय होता है।

- **गृहम् -**

ग्रह् धातु से 'गेहे कः' सूत्र से क प्रत्यय हुआ।

ग्रह्+क 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

ग्रह्+अ 'ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च' सूत्र से र् को सम्प्रसारण ऋ

ग्+ऋ+अह्+अ 'सम्प्रसारणाच्च' सूत्र से पूर्वरूप एकादेश (ऋ+अ=ऋ)

गृह 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

गृह+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
गृह+स्	'अतोऽम्' सूत्र से स् को अम् आदेश
गृह+अम्	'अमिपूर्वः' सूत्र से पूर्वरूप होकर
गृहम्	सिद्ध हुआ।

- **कर्मण्यण्**

कर्म उपपद रहने पर धातुओ से अण् प्रत्यय होता है।

- **कुम्भकारः -** (कुम्भं करोति इति)

कुम्भ अम् उपपद पूर्वक कृ धातु से 'कर्मण्यण्' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ।

कुम्भ+अम्+कृ+अण्	'हलन्त्यम्' सूत्र से ण् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कुम्भ+अम्+कृ+अ	'अचोञ्णिति' सूत्र से ऋ को आर् वृद्धि

कुम्भ+अम्+क्+आर्+अ =कुम्भ+अम्+कार 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप

कुम्भ+कार = कुम्भकार	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
कुम्भकार+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कुम्भकार+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर
कुम्भकार+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कुम्भकार+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
कुम्भकारः	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए

अभ्यास प्रश्न 1

1. कारकः में कृ धातु से कौन सा प्रत्यय होता है?
2. नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः सूत्र से कौन-कौन से प्रत्यय होते हैं?
3. बुधः में "इगुपध-ज्ञा-प्री-किरः कः" सूत्र से कौन सा प्रत्यय हुआ?
4. मन्त्रिन्+स में उपधा को दीर्घ किस सूत्र से हुआ?
5. कर्म उपपद रहने पर धातुओं से कौन सा प्रत्यय हुआ?

- **आतोऽनुपसर्गे कः**

कर्म के उपपद रहने पर उपसर्ग रहित आकारान्त धातु से क प्रत्यय होता है।

- **गोदः** - (गां ददाति)

गो अम् उपपदपूर्वक दा धातु से 'आतोऽनुपसर्गे कः' सूत्र से क प्रत्यय हुआ।

गो+अम्+दा+क 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

गो+अम्+दा+अ 'आतो लोप इटि च' सूत्र से दा के आ का लोप होकर

गो+अम्+द्+अ 'सुपोधातुप्रातिददिकयोः' सूत्र से अम् का लोप

गो+द = गोद 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

गोद+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

गोद+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

गोद+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

गोद+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

गोदः सिद्ध हुआ।

- **धनदः** - (धनं ददाति)

धन अम् उपपदपूर्वक दा धातु से 'आतोऽनुपसर्गे कः' सूत्र से क प्रत्यय हुआ।

धन+अम्+दा+क 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

धन+अम्+दा+अ 'आतो लोप इटि च' सूत्र से दा के आ का लोप होकर

धन+अम्+द्+अ 'सुपोधातुप्रातिददिकयोः' सूत्र से अम् का लोप

धन+द –धनद 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

धनद+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

धनद+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

धनद+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

धनद+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

धनदः सिद्ध हुआ।

- **कम्बलदः** - (कम्बलं ददाति)

कम्बल अम् उपपद पूर्वक दा धातु से 'आतोऽनुपसर्गे कः' सूत्र से क प्रत्यय हुआ।

कम्बल+अम्+दा+क 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

कम्बल+अम्+दा+अ 'आतो लोप इटि च' सूत्र से दा के आ का लोप होकर

कम्बल+अम्+द्+अ 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप

कम्बल+द = कम्बलद 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

कम्बलद+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कम्बलद+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

कम्बलद+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कम्बलद+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

कम्बलदः सिद्ध हुआ।

- **गोसंदायः** - (गां संददाति)

गो अम् सम् उपसर्ग पूर्वक दा धातु से 'कर्मण्यण्' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ।

गो+अम्+सम्+दा+अण् 'हलन्त्यम्' सूत्र से ण् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

गो+अम्+सम्+दा+अ 'आतो युक् चिण्कृतोः' सूत्र से युक् आगम

गो+अम्+सम्+दा+युक्+अ 'हलन्त्यम्' से क की तथा 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप होकर य् शेष रहा।

गो+अम्+सम्+दा+य्+अ - गो+अम्+सम्+दा+य 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप

गो+सम्+दाय ' मोऽनुस्वारः' सूत्र से म् को अनुस्वार होकर

गो+संदाय = गोसंदाय 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

गोसंदाय+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

गोसंदाय+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

गोसंदाय+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

गोसंदाय+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

गोसंदायः सिद्ध हुआ।

- **वार्तिक - मुलविभुजादिभ्यः कः**

मूलविभुज आदि शब्दों में क प्रत्यय हो।

- **मूलविभुजः** - (मूलानि विभुजति)

मूल शस् वि उपसर्ग पूर्वक भुज् धातु से 'मूलविभुजादिभ्यः कः' वार्तिक से क प्रत्यय हुआ।

मूल+शस्+वि+भुज्+क	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
मूल+शस्+वि+भुज्+अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से शस् का लोप
मूलविभुज	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
मूलविभुज+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
मूलविभुज+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर
मूलविभुज+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
मूलविभुज+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
मूलविभुजः	सिद्ध हुआ।

- **महीध्रः** - (महीं धरति)

मही अम् उपपद पूर्वक धृ धातु से 'मूलविभुजादिभ्यः कः' वार्तिक से क प्रत्यय हुआ।

मही+अम्+धृ+क	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
मही+अम्+धृ+अ	'इकोयणचि' सूत्र से ऋ को र् होकर
मही+अम्+ध्+र्+अ = मही+अम्+ध्र	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप
महीध्र	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
महीध्र+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
महीध्र+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर
महीध्र+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
महीध्र+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
महीध्रः	सिद्ध हुआ।

- **कुध्रः** - (कुं धरति)

कु अम् उपपद पूर्वक धृ धातु से 'मूलविभुजादिभ्यः कः' वार्तिक से क प्रत्यय हुआ।

कु+अम्+धृ+क	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
कु+अम्+धृ+अ	'इकोयणचि' सूत्र से ऋ को र् होकर
कु+अम्+ध्+र्+अ = कु+अम्+ध्र	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप
कुध्र	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
कुध्र+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कुध्र+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर
कुध्र+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कुध्र+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
कुध्रः	सिद्ध हुआ।

- **चरेष्टः**

अधिकरण यदि उपपद में हो तो चर् धातु से ट प्रत्यय होता है।

- **कुरुचरः** - (कुरुषु चरति)

कुरु सुप् उपपद पूर्वक चर् धातु से 'चरेष्टः' सूत्र से ट प्रत्यय हुआ।

कुरु+सुप्+चर्+ट	'चुटू' से ट् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कुरु+सुप्+चर्+अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् का लोप
कुरु+चर = कुरुचर	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
कुरुचर+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कुरुचर+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर
कुरुचर+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कुरुचर+र्		'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

कुरुचरः		सिद्ध हुआ।

- **भिक्षासेनादायेषु च**

भिक्षा, सेना और आदाय यदि उपपद में हो तो चर् धातु से ट प्रत्यय होता है।

- **भिक्षाचरः, सेनाचरः, आदायचरः -** (भिक्षां चरति, सेनायां चरति, आदाय चरति)

भिक्षा अम्, सेना घि, आदाय घे उपपद पूर्वक चर् धातु से 'भिक्षासेनादायेषु च' सूत्र से ट प्रत्यय हुआ।

भिक्षा+अम्, सेना+घि, आदाय+घे+चर्+ट 'चुटू' से ट् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

भिक्षा+अम्, सेना+घि, आदाय+घे+चर्+अ 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् विभक्ति का लोप

भिक्षा+चर, सेना+चर, आदाय+चर

भिक्षाचर, सेनाचर, आदायचर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

भिक्षाचर, सेनाचर, आदायचर+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

भिक्षाचर, सेनाचर, आदायचर+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

भिक्षाचर, सेनाचर, आदायचर+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

भिक्षाचर, सेनाचर, आदायचर+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

भिक्षाचरः, सेनाचरः, आदायचरः सिद्ध हुआ।

- **कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु**

हेतु (कारण), ताच्छील्य (तत्स्वभाव), और आनुलोम्य (आज्ञाकारिता) अर्थ यदि द्योत्य हो तो कृ धातु से ट प्रत्यय होता है।

- **अतः कृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य**

ह्रस्व अकार से पर वर्तमान विसर्ग, जो विसर्ग अव्यय का न हो, के स्थान पर समास में नित्य सकार आदेश होता है, यदि कृ, कम् धातु और कंस, कुम्भ, पात्र, कुशा और कर्ण शब्द परे हो।

- **यशस्करी -** (यशः करोति)

यशस् अम् उपपद पूर्वक कृ धातु से 'कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु' सूत्र से ट प्रत्यय

यशस्+अम्+कृ+ट		'चुटू' सूत्र से ट् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

यशस्+अम्+कृ+अ		'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप

यशस्+कृ+अ 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण होकर

यशस्+क्+अर्+अ = यशस्+कर 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

यशरू+कर 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

यशर्+कर 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

यशः+कर 'अतः कृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य' सूत्र से विसर्ग को सकार आदेश

यशस्कर 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय

यशस्कर+ङीप् 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से ङ् और 'हलन्त्यम्' से प् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर ई शेष रहा।

यशस्कर+ई 'यस्येति च' सूत्र से र के अकार का लोप होकर

यशस्कर्+ई =यशस्करी 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

यशस्करी+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्यलोपः' से उसका लोप होकर

यशस्करी+स् 'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर

यशस्करी सिद्ध हुआ।

- **श्राद्धकरः, वचनकरः -** (श्राद्धं करोति, वचनं करोति)

श्राद्ध अम् वचन अम् उपपद पूर्वक कृ धातु से 'कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु' सूत्र से ट प्रत्यय

श्राद्ध+अम्, वचन+अम्+कृ+ट 'चुटू' सूत्र से ट् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

श्राद्ध+अम्, वचन+अम्+कृ+अ'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप

श्राद्ध, वचन+कृ+अ 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण होकर

श्राद्ध, वचन+क्+अर्+अ

श्राद्धकर, वचनकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

श्राद्धकर, वचनकरः+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

श्राद्धकर, वचनकर+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

श्राद्धकर, वचनकर+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

श्राद्धकर, वचनकर+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

श्राद्धकरः, वचनकरः सिद्ध हुआ।

- **एजेः खश्**

  यदि कर्म उपपद में हो तो णिजन्त एज् धातु से खश् प्रत्यय होता है।

- **अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम्**

  अरुस् (मर्म), द्विषत् (शत्रु) और अजन्त शब्दों को मुम् आगम हो, खिदनत उत्तरपद में हो तो किन्तु यह आगम अव्यय का नहीं होता है।

- **जनमेजयः -**

जन अम् उपपद पूर्वक एजि धातु से 'एजेः खश्' सूत्र स खश् प्रत्यय हुआ

जन+अम्+एजि+खश् ख् की 'लशक्वतद्धिते', श् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अ शेष रहा।

जन+अम्+एजि+अ 'कर्तरि शप्' सूत्र से शप् प्रत्यय किया

जन+अम्+एजि+शप्+अ श् की 'लशक्वतद्धिते', प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अ शेष रहा।

जन+अम्+एजि+अ+अ 'अतो गुणे' सूत्र से पररूप एकादेश होकर

जन+अम्+एजि+अ 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से इ को गुण होकर

जन+अम्+एजे+अ 'एचोऽयवायावः' सूत्र से ए को अय् आदेश

जन+अम्+एज्+अय्+अ जन+अम्+एजय 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप

जन+एजय 'अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम्' सूत्र से मुम् आगम

जन+मुम्+एजय 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से उ की और 'हलन्त्यम्' सूत्र से म् की इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' सूत्र से लोप करके म् शेष रहा।

जन+म्+एजय =जनमेजय 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

जनमेजय+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्यलोपः' से उसका लोप होकर

जनमेजय+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

जनमेजय+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

जनमेजय+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

जनमेजयः	सिद्ध हुआ।

- **प्रियवशे वदः खच्**

  प्रिय और वश कर्म उपपद रहने पर वद् धातु से खच् प्रत्यय होता है।

- **प्रियंवदः, वशंवदः** - (प्रियं वदति, वशं वदति)

प्रिय अम् वद्, वश अम् वद् धातु से 'प्रियवशे वदः खच्' सूत्र से खच् प्रत्यय हुआ।

प्रिय्, वश+अम्+वद्+खच्	ख् की 'लशक्वतद्धिते', च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अ शेष रहा।

प्रिय, वश+अम्+वद्+अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप

प्रिय, वश+वद	'अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम्' सूत्र से मुम् आगम

प्रिय, वश+मुम्+वद	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से उ की और 'हलन्त्यम्' सूत्र से म् की इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' सूत्र से लोप करके म् शेष रहा।

प्रिय, वश+म्+वद	'मोऽनुस्वारः' सूत्र से म् को अनुस्वार होकर

प्रियंवद, वशंवद	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

प्रियंवद, वशंवद+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

प्रियंवद, वशंवद+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश होकर

प्रियंवद, वशंवद+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

प्रियंवद, वशंवद+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

प्रियंवदः, वशंवदः	सिद्ध हुआ।

- **अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते**

  मनिन्, क्वनिप्, वनिप् और विच् प्रत्यय अन्य धातुओं से भी हों।

- **सुशर्मा** -

सु उपसर्ग पूर्वक शृ धातु से 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' सूत्र से मनिन् प्रत्यय हुआ।

सु+शृ+मनिन्	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इ, 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर मन् शेष रहा।

सु+शृ+मन्	'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण होकर

सु+श्+अर्+मन् = सुशर्मन् ‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर

सुशर्मन्+सु ‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर

सुशर्मन्+स् ‘सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ’ सूत्र से उपधा को दीर्घ होकर

सुशर्मान्+स् ‘हलघ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्’ सूत्र से स् का लोप होकर

सुशर्मान् ‘न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य’ सूत्र से न् का लोप होकर

सुशर्मा सिद्ध हुआ।

- **प्रातरित्वा -**

प्रातर् पूर्वक इण् धातु से ‘अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते’ सूत्र से क्वनिप् प्रत्यय हुआ।

प्रातर्+इण्+क्वनिप् ‘हलन्त्यम्’ सूत्र से ण् की इत्संज्ञा करके ‘तस्य लोपः’ से इसका लोप होकर इ शेष रहा।

प्रातर्+इ+क्वनिप् क् की ‘लशक्वतद्धिते’, इ की ‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’, प् की ‘हलन्त्यम्’ सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका ‘तस्य लोपः’ से लोप करके वन् शेष रहा।

प्रातरि+वन् ‘ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्’ सूत्र से तुक् आगम

प्रातरि+तुक्+वन् उ की ‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’, त् की ‘हलन्त्यम्’ सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका ‘तस्य लोपः’ से लोप करके त् शेष रहा।

प्रातरित्वन् ‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर

प्रातरित्वन्+सु ‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर

प्रातरित्वन्+स् ‘सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ’ सूत्र से उपधा को दीर्घ होकर

प्रातरित्वान्+स् ‘हलघ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्’ सूत्र से स् का लोप होकर

प्रातरित्वान् ‘न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य’ सूत्र से न् का लोप होकर

प्रातरित्वान् सिद्ध हुआ।

- **विड्वनोरनुनासिकस्याऽऽत्**

  विट् और वन् प्रत्यय परे रहने पर अनुनासिक वर्ण को आकार आदेश हो।

- **विजावा -**

वि उपसर्ग पूर्वक जन् धातु से ‘अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते’ सूत्र से वनिप् प्रत्यय हुआ।

वि+जन्+वनिप्	इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्', प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप करके वन् शेष रहा।
वि+जन्+वन्	'विड्वनोरनुनासिकस्याऽऽत्' सूत्र से जन् के नकार को आकार आदेश
वि+जा+वन् =विजावन्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
विजावन्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
विजावन्+स्	'सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ' सूत्र से उपधा को दीर्घ होकर
विजावान्+स्	'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
विजावान्	'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर
विजावा	सिद्ध हुआ।

- **अवावा -**

ओणृ धातु से 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' सूत्र से वनिप् प्रत्यय हुआ।

ओणृ+वनिप्	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से ऋ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
ओण्+वनिप्	इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्', प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप करके वन् शेष रहा।
ओण्+वन्	'विड्वनोरनुनासिकस्याऽऽत्' सूत्र से जन् के णकार को आकार आदेश
ओ+आवन्	'एचोऽयवायावः' सूत्र से ओ को अव् आदेश हुआ
अव्+आवन् = अवावन्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
अवावन्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
अवावन्+स्	'सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ' सूत्र से उपधा को दीर्घ होकर
अवावान्+स्	'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
अवावान्	'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर
अवावा	सिद्ध हुआ।

- **रोट्, रेट् -**

रुष्, रिष् धातु से 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' सूत्र से विच् प्रत्यय हुआ।

रुष्, रिष्+विच्	इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्', च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप करके व् शेष रहा।
रुष्, रिष्+व्	'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधा को गुण होकर
रोष्, रेष्+व्	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व् का लोप होकर
रोष्, रेष्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
रोष्, रेष्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
रोष्, रेष्+स्	'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
रोष्, रेष्	'झलां जशोऽन्ते' सूत्र से झल् ष् को जश् ड् आदेश
रोड्, रेड्	'वाऽवसाने' सूत्र से ड् को चर्त्व ट्
रोट्, रेट्	सिद्ध हुआ।

- **सुगण् -**

सु उपसर्ग पूर्वक गण् धातु से 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' सूत्र से विच् प्रत्यय हुआ।

सु+गण्+विच्	इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्', च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप करके व् शेष रहा।
सु+गण्+व्	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व् का लोप
सुगण्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
सुगण्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
सुगण्+स्	'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
सुगण्	सिद्ध हुआ।

- **क्विप् च**

  धातु से क्विप् प्रत्यय भी होता है।

- **उखास्रत् -** (उखायाः संस्रते)

उखा घसि पूर्वक स्रंस् धातु से 'क्विप् च' सूत्र से क्विप् प्रत्यय हुआ।

उखा+घसि+स्रंस्+क्विप्	इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्', क् की 'लशक्वतद्धिते' तथा प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप करके व् शेष रहा।
उखा+घसि+स्रंस+व्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से घसि का लोप
उखा+स्रंस्+व्	'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से स्रंस् के न् का लोप
उखा+स्रस्+व्	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व् का लोप
उखा+स्रस् = उखास्रस्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
उखास्रस्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
उखास्रस्+स्	'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
उखास्रस्	'वसुस्रंसुध्वंस्वनुडुहां दः' सूत्र से स् को द्
उखास्रद्	'वाऽवसाने' सूत्र से द् को चर्त्व त्
उखास्रत्	सिद्ध हुआ।

- **पर्णध्वत् -**

पर्ण घसि पूर्वक ध्वंस् धातु से 'क्विप् च' सूत्र से क्विप् प्रत्यय हुआ।

पर्ण+घसि+ध्वंस्+क्विप्	इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्', क् की 'लशक्वतद्धिते' तथा प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप करके व् शेष रहा।
पर्ण+घसि+ध्वंस्+व्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से घसि का लोप
पर्ण+ध्वंस्+व्	'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से स्रंस् के न् का लोप
पर्ण+ध्वस्+व्	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व् का लोप
पर्ण+ध्वस् = पर्णध्वस्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
पर्णध्वस्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
पर्णध्वस्+स्	'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
पर्णध्वस्	'वसुस्रंसुध्वंस्वनुडुहां दः' सूत्र से स् को द्
पर्णध्वद्	'वाऽवसाने' सूत्र से द् को चर्त्व त्
पर्णध्वत्	सिद्ध हुआ।

- **वाहभ्रट् -**

वाह घसि पूर्वक भ्रंश् धातु से 'क्विप् च' सूत्र से क्विप् प्रत्यय हुआ।

वाह+घसि+भ्रंश्+क्विप्	इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्', क् की 'लशक्वतद्धिते' तथा प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप करके व् शेष रहा।
वाह+घसि+भ्रंश्+व्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से घसि का लोप
वाह+भ्रंश्+व्	'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से स्रंस् के न् का लोप
वाह+भ्रश्+व्	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व् का लोप
वाह+भ्रश् = वाहभ्रश्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
वाहभ्रश्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
वाहभ्रश्+स्	'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
वाहभ्रश्	'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः'सूत्र से श् को ष् आदेश
वाहभ्रष्	'झलां जशोऽन्ते' सूत्र से झल् ष् को जश् ड्
वाहभ्रड्	'वाऽवसाने' सूत्र से ड् को चर्त्व ट्
वाहभ्रट्	सिद्ध हुआ।

- **सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये**

जातिवाचक से भिन्न सुबन्त उपपद रहते हुए धातु से णिनि प्रत्यय हो, यदि कर्ता का शील अर्थात् स्वभाव द्योतित हो।

- **उष्णभोजी -** (उष्णं भुङ्क्ते तच्छीलः)

उष्ण अम् पूर्वक भुज् धातु से 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये' सूत्र से णिनि प्रत्यय हुआ।

उष्ण+अम्+भुज्+णिनि	ण् की 'चुटू' से और अन्त्य इकार की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर इन् शेष रहा।
उष्ण+अम्+भुज्+इन्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप
उष्ण+भुज्+इन्	'पुगन्तलघूपदस्य च' सूत्र से उपधा उ को ओ गुण
उष्ण+भोजिन्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
उष्णभेजिन्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

उष्णभोजिन्+स्	'सौ च' से उपधा दार्घ होकर
उष्णभोजीन्+स्	'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
उष्णभोजीन्	'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर
उष्णभोजी	सिद्ध हुआ।

- **मनः**

  सुबन्तउपपद रहने पर मन् धातु से णिनि प्रत्यय होता है।

- **दर्शनीयमानी -** (दर्शनीयं मन्यते)

दर्शनीय अम् पूर्वक मन् धातु से 'मनः' सूत्र से णिनि प्रत्यय हुआ।

दर्शनीय+अम्+मन्+णिनि	ण् की 'चुटू' से और अन्त्य इकार की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर इन् शेष रहा।
दर्शनीय+अम्+मन्+इन्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप
दर्शनीय+मन्+इन्	'अतः उपधायाः' सूत्र से उपधा के हृस्व अकार को वृद्धि आदेश
दर्शनीयमानिन्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
दर्शनीयमानिन्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
दर्शनीयमानिन्+स्	'सौ च' से उपधा दार्घ होकर
दर्शनीयमानीन्+स्	'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
दर्शनीयमानीन्	'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर
दर्शनीयमानी	सिद्ध हुआ।

- **आत्ममाने खश्च**

  स्वकर्मक मनन अर्थ में वर्तमान मन् धातु से सुबन्त उपपद रहते खश् प्रत्यय भी हो।

- **पण्डितंमन्यः -** (आत्मानं पण्डितं मन्यते)

पण्डित अम् उपपदपूर्वक मन् धातु से 'आत्ममाने खश्च' सूत्र से खश् प्रत्यय हुआ।

पण्डित+अम्+मन्+खश्	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से ख् की और 'हलन्त्यम्' सूत्र से श् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अ शेष रहा।
पण्डित+अम्+मन्+अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप
पण्डित+मन्+अ	'दिवादिभ्यः श्यन्' सूत्र से श्यन् प्रत्यय

पण्डित+मन्+श्यन्+अ श् की लशक्वतद्धिते' सूत्र से और न् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर य शेष रहा।

पण्डित+मन्+य+अ = पण्डित+मन्य+अ 'अतो गुणे' सूत्र से पररूप होकर

पण्डित+मन्य 'अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम्' सूत्र से मुम् आगम

पण्डित+मुम्+मन्य 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से उ की और 'हलन्त्यम्' सूत्र से म् की इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर म् शेष रहता है।

पण्डित+म्+मन्य 'मोऽनुस्वारः' सूत्र से म् को अनुस्वार होकर

पण्डितंमन्य 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

पण्डितंमन्य+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

पण्डितंमन्य+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

पण्डितंमन्य+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

पण्डितंमन्य+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

पण्डितंमन्यः सिद्ध हुआ।

- **पण्डितमानी -**

पण्डित अम् उपपदपूर्वक मन् धातु से 'आत्ममाने खश्च' सूत्र से णिनि प्रत्यय हुआ।

पण्डित+अम्+मन्+णिनि ण् की 'चुटू' से और अन्त्य इकार की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर इन् शेष रहा।

पण्डित+अम्+मन्+इन् 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप

पण्डित+मन्+इन् 'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा को वृद्धि

पण्डित+मान्+इन् = पण्डितमानिन् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

पण्डितमानिन्+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

पण्डितमानिन्+स् 'सौ च' से उपधा दार्घ होकर

पण्डितमानीन्+स् 'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर

पण्डितमानीन्		'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर

पण्डितमानी		सिद्ध हुआ।

➢ **खित्यनव्ययस्य**

खिदन्त परे रहते पूर्वपद को ''स्व हो, परन्तु अव्यय को न हो।

- **कालिंमन्या** - (कालीं आत्मानं मन्यते)

काली अम् पूर्वक मन् धातु से 'आत्ममाने खश्च' सूत्र से खश् प्रत्यय हुआ।

काली+अम्+मन्+खश्	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से ख् की और 'हलन्त्यम्' सूत्र से श् की इत्संज्ञा तथा 'तस्यलोपः' से उनका लोप होकर अ शेष रहा।

काली+अम्+मन्+अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप

काली+मन्+अ		'दिवादिभ्यः श्यन्' सूत्र से श्यन् प्रत्यय

काली+मन्+श्यन्+अ	श् की लशक्वतद्धिते' सूत्र से और न् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्यलोपः' से उनका लोप होकर य शेष रहा।

काली+मन्+य+अ = काली+मन्य+अ 'अतो गुणे' सूत्र से पररूप होकर

काली+मन्य		'खित्यनव्ययस्य' सूत्र से पूर्वपद के अन्त्य वण्ार् को ह्रस्व

कालि+मन्य		'अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम्' सूत्र से मुम् आगम

कालि+मुम्+मन्य	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से उ की और 'हलन्त्यम्' सूत्र से म् की इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर म् शेष रहता है।

कालि+म्+मन्य		'मोऽनुस्वारः' सूत्र से म् को अनुस्वार होकर

कालिंमन्य		'अजाद्यष्टाप्' सूत्र से टाप् प्रत्यय

कालिंमन्य+टाप्	ट् की 'चुटू' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आ शेष रहा।

कालिंमन्य+आ		'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर

कालिंमन्या		सिद्ध हुआ।

➢ **करणे यजः**

करण उपपद रहते भूतकाल में यज् धातु से कर्ता अर्थ में णिनि प्रत्यय हो।

- **सोमयाजी** - (सोमेन इष्टवान्)

सोम टा उपपद पूर्वक यज् धातु से 'करणे यजः' सूत्र से णिनि प्रत्यय हुआ।

सोम+टा+यज्+णिनि	ण् की 'चुटू' से और अन्त्य इकार की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर इन् शेष रहा।

सोम+टा+यज्+इन्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से टा का लोप

सोम+यज्+इन्	'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा को वृद्धि

सोम+याज्+इन् -सोमयाजिन्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

सोमयाजिन्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

सोमयाजिन्+स्	'सौ च' से उपधा दार्घ होकर

सोमयाजीन्+स्	'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर

सोमयाजीन्	'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर

सोमयाजी	सिद्ध हुआ।

- **अग्निष्टोमयाजी -** (अग्निष्टोमेन इष्टवान्)

अग्निष्टोम टा उपपद पूर्वक यज् धातु से 'करणे यजः' सूत्र से णिनि प्रत्यय हुआ।

अग्निष्टोम+टा+यज्+णिनिण् की 'चुटू' से और अन्त्य इकार की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर इन् शेष रहा।

अग्निष्टोम+टा+यज्+इन्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से टा का लोप

अग्निष्टोम+यज्+इन्	'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा को वृद्धि

अग्निष्टोम+याज्+इन् = अग्निष्टोमयाजिन्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्तिहोने पर

अग्निष्टोमयाजिन्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

अग्निष्टोमयाजिन्+स्	'सौ च' से उपधा दार्घ होकर

अग्निष्टोमयाजीन्+स्	'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर

अग्निष्टोमयाजीन्	'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर

अग्निष्टोमयाजी	सिद्ध हुआ।

- **दृशेः क्वनिप्**

  कर्म के उपपद होने पर भूतकालिक क्रिया में विद्यमान दृश् धातु से क्वनिप् होता है।

- **पारदृश्वा -** (पारं दृष्टवान्)

पार अम् उपपद पूर्वक दृश् धातु से 'दृशे क्वनिप्) सूत्र से क्वनिप् प्रत्यय हुआ।

पार+अम्+दृश्+क्वनिप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्', प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप करके वन् शेष रहा।
पार+अम्+दृश्+वन्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप
पारदृश्वन्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
पारदृश्वन्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
पारदृश्वन्+स्	'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' सूत्र से उपधा को दीर्घ होकर
पारदृश्वान्+स्	'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
पारदृश्वान्	'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर
पारदृश्वा	सिद्ध हुआ।

- **राजनि युधि कृञः**

  राजन् कर्म उपपद रहते हुए युध् और कृञ धातु से क्वनिप् प्रत्यय हो।

- **राजयुध्वा -** (राजानं योधितवान्)

राजन् अम् उपपद पूर्वक युध् धातु से 'राजनि युधि कृञः' सूत्र से क्वनिप् प्रत्यय हुआ।

राजन्+अम्+युध्+क्वनिप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्', प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप करके वन् शेष रहा।
राजन्+अम्+युध्+वन्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप
राजन्+युध्वन्	'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से राजन् के न् का लोप होकर
राजयुध्वन्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
राजयुध्वन्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
राजयुध्वन्+स्	'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' सूत्र से उपधा को दीर्घ होकर
राजयुध्वान्+स्	'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
राजयुध्वान्	'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर
राजयुध्वा	सिद्ध हुआ।

- **राजकृत्वा -** (राजानं कृतवान्)

राजन् अम् उपपद पूर्वक कृ धातु से 'राजनि युधि कृञः' सूत्र से क्वनिप् प्रत्यय हुआ।

राजन्+अम्+कृ+क्वनिप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्', प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप करके वन् शेष रहा।
राजन्+अम्+कृ+वन्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप
राजन्+कृ+वन्	'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से राजन् के न् का लोप होकर
राज+कृ+वन्	'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से तुक् आगम
राज+कृ+तुक्+वन्	उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और क् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर
राज+कृ+त्+वन्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
राजकृत्वन्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
राजकृत्वन्+स्	'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' सूत्र से उपधा को दीर्घ होकर
राजकृत्वान्+स्	'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
राजकृत्वान्	'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर
राजकृत्वा	सिद्ध हुआ।

- **सहे च**

  सह उपपद रहते भी युध् और कृञ धातु से क्वनिप् प्रत्यय हो।

- **सहयुध्वा -**

सह उपपद पूर्वक युध् धातु से 'सहे च' सूत्र से क्वनिप् प्रत्यय हुआ।

सह+युध्+क्वनिप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्', प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप करके वन् शेष रहा।
सह+युध्+वन् -सहयुध्वन्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
सहयुध्वन्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
सहयुध्वन्+स्	'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' सूत्र से उपधा को दीर्घ होकर
सहयुध्वान्+स्	'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
सहयुध्वान्	'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर
सहयुध्वा	सिद्ध हुआ।

- **सहकृत्वा -**

सह उपपद पूर्वक कृ धातु से 'सहे च' सूत्र से क्वनिप् प्रत्यय हुआ।

सह+कृ+क्वनिप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्', प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप करके वन् शेष रहा।
सह+कृ+वन्	'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से तुक् आगम
सह+कृ+तुक्+वन्	उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और क् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर
सहकृत्वन्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
सहकृत्वन्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
सहकृत्वन्+स्	'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' सूत्र से उपधा को दीर्घ होकर
सहकृत्वान्+स्	'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
सहकृत्वान्	'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर
सहकृत्वा	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. 'गोदः' में कौन सा प्रत्यय हुआ?
2. 'कुध्रः' में उपसर्ग एवं धातु क्या है?
3. 'श्राद्धकरः' एवं 'वचनकरः' में 'ट' प्रत्यय विधायक सूत्र है?
4. 'प्रियंवदः' में कौन सा प्रत्यय हुआ?
5. 'करणे यजः' सूत्र का कार्य बताएँ?

2.5 सारांश

इस इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 787 से 813 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत ण्वुल्, तृच्, ल्यु, णिनि, अच्, क, अण्, ट, खश्, खच्, मनिन्, क्वनिप्, वनिप्, विच् तथा क्विप प्रत्यय को वर्णित किया गया है। यह इकाई विद्यार्थियों को सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझाने में सहायक सिद्ध होगी।

2.6 कठिन शब्दावली

- **यु-वोरनाऽकौ**

  यह आदेशविधि सूत्र है, इससे 'यु' और 'वु' के स्थान पर 'अक' आदेश होता है।

- **ल्युणिन्यचः**

  ये तीनों 'ल्यु', 'णिनि' तथा 'अच्' प्रत्यय हैं, यहाँ 'नन्दि' आदि धातुओं से 'ल्यु', 'ग्रह' आदि से 'णिनि' तथा 'पचादि' से 'अच्' प्रत्यय होते हैं।

- **गेहे**

  गेहे का अर्थ है घर। गेहे कः सूत्र से क प्रत्यय होने पर गृहम् रूप बनता है।

2.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. ण्वुल्।
2. ल्यु, णिनि तथा अच्।
3. क प्रत्यय।
4. 'सौ च'।
5. अण्।

अभ्यास प्रश्न 2

1. क प्रत्यय।
2. कु अम् पूर्वक धृ धातु।
3. कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु।
4. खच् प्रत्यय।
5. करण उपपद रहते यज् धातु से णिनि प्रत्यय।

2.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

2.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-

आतश्चोपसर्गे। मुलविभुजादिभ्यः कः। चरोष्टः। अरुर्द्विषदन्तस्य मुम्। क्विप् च। आत्ममाने खश्च। करणे यजः। सहे च।

2. निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-

जनार्दनः, कुम्भकारः, वचनकरः, वाहभ्रट्, पण्डितंमन्यः, सोमयाजी, पारदृश्वा, सहकृत्वा।

तृतीय इकाई
पूर्वकृदन्त-3

संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 वर्णित प्रत्यय

3.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 814 से 839 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

3.5 सारांश

3.6 कठिन शब्दावली

3.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

3.8 सहायक ग्रन्थ

3.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों, द्वितीय अध्याय में आपने लघुसिद्धान्तकौमुदी के कृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत 787 से 813 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि पढ़ी, जिसमें कृत् संज्ञा, तव्यत्, अनीयर्, केलिमर्, यत्, क्यप्, तथा ण्यत् प्रत्यय का अध्ययन किया। अब कृदन्त प्रकरण के 814 से 839 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि की जाएगी, जिसमें आप सभी ड, क्त, क्तवतु, णिच्, शतृ तथा शानच् आदि प्रत्ययों का अध्ययन करेंगे । इस अध्याय में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित सूत्रों को उदाहरण सहित वर्णित करने का प्रयास किया जा रहा है।

3.2 उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप जानने में समर्थ होंगे-

- लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत पूर्वकृदन्त के सूत्रों का अर्थ।
- धातु के साथ प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाने में सक्षम हो जायेंगे।
- किसी शब्द को बनाने में प्रयुक्त प्रत्ययों और सूत्रों को जानने में सक्षम हो जायेंगे।

3.3 वर्णित प्रत्यय

तृतीय अध्याय में पूर्वकृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत ड, क्त, क्तवतु, णिच्, शतृ तथा शानच् प्रत्यय का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में कृदन्त प्रकरण के 814 से 839 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि की जाएगी। जिससे विद्यार्थी पूर्वकृदन्त के सूत्रों को उदाहरण सहित जानने में समर्थ हो सकेंगे।

3.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 814 से 839 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- **सप्तम्यां जनेर्डः**

  सप्तम्यन्त के उपपद रहने पर जन् धातु से 'ड' प्रत्यय होता है।

- **तत्पुरुषे कृति बहुलम्**

  तत्पुरुष समास में कृत् प्रत्यय परे रहने पर सप्तमी का बहुल से लोप नहीं होता।

- **सरसिजम् -** (सरसि जातम्)

सरस् घि उपपद पूर्वक जन् धातु से 'सप्तम्यां जनेर्डः' सूत्र से 'ड' प्रत्यय हुआ।

सरस्+घि+जन्+ड	'चुटू' सूत्र से ड् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः से उसका लोप होकर
सरस्+घि+जन्+अ	'टेः' सूत्र से टि अन् का लोप
सरस्+घि+ज्+अ	'तत्पुरुषे कृति बहुलम्' सूत्र से घि का लोप नही हुआ अपितु 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से घ् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोप'' से उसका लोप होकर इ शेष रहा।
सरस्+इ+ज = सरसिज	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
सरसिज+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
सरसिज+स्	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश
सरसिज+अम्	'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप
सरसिजम्	सिद्ध हुआ।

- **सरोजम् -** (सरसि जातम्)

सरस् घि उपपद पूर्वक जन् धातु से 'सप्तम्यां जनेर्डः' सूत्र से 'ड' प्रत्यय हुआ।

सरस्+घि+जन्+ड	'चुटू' सूत्र से ड् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः से उसका लोप होकर
सरस्+घि+जन्+अ	'टेः' सूत्र से टि अन् का लोप
सरस्+घि+ज्+अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से घि का लोप
सरस्+ज	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश
सररु+ज	'हशि च' सूत्र से रु को उ आदेश
सर+उ+ज	'आदगुणः' सूत्र से गुण
सरोज	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
सरोज+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

सरोज+स्	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश
सरोज+अम्	'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप
सरोजम्	सिद्ध हुआ।

- **उपसर्गे च संज्ञायाम्**

  उपसर्ग उपपद रहते जन् धातु से 'ड' प्रत्यय हो संज्ञा में।

- **प्रजा -**

प्र उपसर्ग पूर्वक जन् धातु से 'उपसर्गे च संज्ञायाम्' सूत्र से 'ड' प्रत्यय हुआ।

प्र+जन्+ड	'चुटू' सूत्र से ड् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः से उसका लोप होकर
प्र+जन्+अ	'टेः' सूत्र से टि अन् का लोप
प्र+ज्+अ -प्रज	'अजाद्यष्टाप्' सूत्र से टाप् प्रत्यय
प्रज+टाप्	ट् की 'चुटू' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आ शेष रहा।
प्रज+आ	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर
प्रजा	सिद्ध हुआ।

- **क्तक्तवतू निष्ठा**

  क्त और क्तवतु प्रत्यय निष्ठासंज्ञक होते हैं।

- **निष्ठा**

  भूतकाल में वर्तमान धातु से निष्ठा प्रत्यय हो।

- स्नातम्-

स्ना धातु से 'निष्ठा' सूत्र से क्त प्रत्यय हुआ।

स्ना+क्त	'लशक्वतद्धिते' से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः से उसका लोप होकर
स्ना+त-स्नात	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
स्नात+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
स्नात+स्	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश
स्नात+अम्	'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप
स्नातम्	सिद्ध हुआ।

- **स्तुतः -**

स्तु धातु से 'निष्ठा' सूत्र से क्त प्रत्यय हुआ।

स्तु+क्त	'लशक्वतद्धिते' से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः से उसका लोप होकर
स्तु+त = स्तुत	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
स्तुत+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
स्तुत+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
स्तुत+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
स्तुत+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
स्तुतः	सिद्ध हुआ।

- **कृतवान् -**

कृ धातु से 'निष्ठा' सूत्र से क्तवतु प्रत्यय हुआ।

कृ+क्तवतु	'लशक्वतद्धिते' से क् और 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः से उनका लोप होकर
कृ+तवत्-कृतवत्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
कृतवत्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कृतवत्+स्	'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' सूत्र से अन्त्य अच् के बाद नुम् आगम
कृतव+नुम्+त्+स्	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से नु के उ की और 'हलन्त्यम्' सूत्र से म् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर न् शेष रहा।
कृतवन्+त्+स्	'अत्वसन्तस्य चाधातोः' सूत्र से उपधा दीर्घ
कृतवान्त्+स्	'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
कृतवान्त्	'संयोगान्तस्य लोपः' सूत्र से त् का लोप् होकर
कृतवान्	सिद्ध हुआ।

- **रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः**

रेफ और दकार से परे निष्ठा के तकार को नकार आदेश हो और निष्ठा की अपेक्षा पूर्व में स्थित धातु के दकार को भी नकार आदेश होता है।

- **शीर्णः -**

शृ धातु से 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय हुआ।

शृ+क्त	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप
शृ+त	'ऋत इद्धातोः' सूत्र से ऋ को 'उरण् रपरः' की सहायता से इर् आदेश
श्+इर्+त = शिर्+त	'हलि च' सूत्र से उपधा को दीर्घ
शीर्+त	'रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः' सूत्र से त को न आदेश
शीर्+न	'रषाभ्यां नो णः समानपदे' सूत्र से न को ण
शीर्ण	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
शीर्ण+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
शीर्ण+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
शीर्ण+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
शीर्ण+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
शीर्णः	सिद्ध हुआ।

- **भिन्नः, छिन्नः -**

भिद्, छिद् धातु से 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय हुआ।

भिद्, छिद्+क्त	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप
भिद्, छिद्+त	'रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः' सूत्र से त को न और द् को भी न् आदेश
भिन्न, छिन्न	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
भिन्न, छिन्न+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
भिन्न, छिन्न+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
भिन्न, छिन्न+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
भिन्न, छिन्न+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
भिन्नः, छिन्नः	सिद्ध हुआ।

- **संयोगाऽऽदेरातो धातोर्यण्वतः**

संयोग जिस धातु के आदि में हो ऐसे आकारान्त यण् वाले धातु से परे निष्ठा के तकार के स्थान पर नकार आदेश होता है।

- **द्राणः -**

द्रा धातु से 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय हुआ।

द्रा+क्त 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप

द्रा+त 'संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः' सूत्र से त को न आदेश

द्रा+न 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से न को ण

द्रा+ण = द्राण 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

द्राण+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

द्राण+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

द्राण+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

द्राण+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

द्राणः सिद्ध हुआ।

- **ग्लानः -**

ग्लै धातु से 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय हुआ।

ग्लै+क्त 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप

ग्लै+त 'आदेच उपदेशेऽशिति' सूत्र से ऐकार के स्थान पर आकार आदेश

ग्ला+त 'संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः' सूत्र से त को न आदेश

ग्लान 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

ग्लान+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

ग्लान+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

ग्लान+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

ग्लान+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

ग्लानः सिद्ध हुआ।

- **ल्वादिभ्यः**

  लूञ् आदि इक्कीस धातुओं से परे निष्ठा के तकार के स्थान पर नकार आदेश होता है।

- **लूनः -**

लू धातु से 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय हुआ।

लू+क्त 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप

लू+त 'लवादिभ्यः' सूत्र से त को न

लून 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

लून+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

लून+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

लून+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

लून+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

लूनः सिद्ध हुआ।

- **हलः**

  अङ्ग के अवयव हल् से परे जो सम्प्रसारण, तदन्त जो अङ्ग, उसको दीर्घ होता है।

- **जीनः -**

ज्या धातु से 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय हुआ।

ज्या+क्त 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप

ज्या+त 'ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च' सूत्र से यकार को सम्प्रसारण करके

ज्+इ+आ+त 'सम्प्रसारणाच्च' सूत्र से इ+आ को पूर्वरूप होकर इ बना।

ज्+इ+त 'हलः' सूत्र से इ को दीर्घ होकर

जी+त 'लवादिभ्यः' सूत्र से त को न

जीन 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

जीन+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

जीन+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

जीन+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

जीन+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

जीनः सिद्ध हुआ।

- **ओदितश्च**

  ओदित् अर्थात् ओकार इत्संज्ञक धातुओं से परे नि"ा के तकार के स्थान पर नकार आदेश होता है।

- **भुग्नः -**

भुज् धातु से 'निष्ठा' सूत्र से क्त प्रत्यय हुआ।

भुज्+क्त 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप

भुज्+त	'ओदितश्च' सूत्र से त को न
भुज्+न	'चोः कुः' सूत्र से धातु के ज् को ग्
भुग्न	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
भुग्न$सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
भुग्न$स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
भुग्न$रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
भुग्न$र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
भुग्नः	सिद्ध हुआ।

- **उच्छूनः -**

उत् उपसर्ग पूर्वक श्वि धातु से 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय हुआ।

उत्+श्वि+क्त	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप
उत्+श्वि+त	'वचिस्वपियजादीनां किति' सूत्र से वकार को सम्प्रसारण
उत्+श्+उ+इ+त	'सम्प्रसारणाच्च' सूत्र से उ+इ को पूर्वरूप होकर उ बना।
उत्+श्+उ+त	'हलः' सूत्र से उ को दीर्घ होकर
उत्+शू+त	'ओदितश्च' सूत्र से त को न
उत्+शू+न	'स्तोश्चुनाश्चु' सूत्र से तकार को चकार
उच्+शू+न	'शश्छोऽटि' सूत्र से शकार को छत्व होकर
उच्+छू+न =उच्छून	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
उच्छून+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
उच्छून+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
उच्छून+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
उच्छून+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
उच्छूनः	सिद्ध हुआ।

- **शुषः कः**

  शुष् धातु से परे निष्ठा के तकार के स्थान पर ककार आदेश होता है।

- **शुष्कः -**

शुष् धातु से 'निष्ठा' सूत्र से क्त प्रत्यय हुआ।

शुष्+क्त	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप
शुष्+त	'शुषः कः' सूत्र से त को क
शुष्+क =	शुष्क 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
शुष्क+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
शुष्क+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
शुष्क+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
शुष्क+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
शुष्कः	सिद्ध हुआ।

- **पचो वः**
  पच् धातु से परे निष्ठा के तकार के स्थान पर वकार आदेश होता है।
- **पक्वः -**

पच् धातु से 'निष्ठा' सूत्र से क्त प्रत्यय हुआ।

पच्+क्त	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप
पच्+त	'पचो वः' सूत्र से त को व आदेश
पच्+व	'चोः कुः' सूत्र से चकार को ककार
पक्व	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
पक्व+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
पक्व+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
पक्व+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
पक्व+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
पक्वः	सिद्ध हुआ।

- **क्षायो मः**
  क्षै धातु से परे निष्ठा के तकार के स्थान पर मकार आदेश होता है।
- **क्षामः -**

क्षै धातु से 'निष्ठा' सूत्र से क्त प्रत्यय हुआ।

क्षै+क्त	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप
क्षै+त	'आदेच उपदेशेऽशिति' सूत्र से ऐकार के स्थान पर आकार आदेश

क्षा+त 'क्षायो मः' सूत्र से तकार को मकार

क्षा+म = क्षाम 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

क्षाम+सु उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

क्षाम +स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

क्षाम+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

क्षाम+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

क्षामः सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. 'सप्तम्यां जनेर्डः' सूत्र से कौन सा प्रत्यय होता है?
2. 'सरोजम्' रूप में 'सररु+ज' के रु को 'उ' किससे हुआ?
3. किन दो प्रत्ययों की निष्ठा संज्ञा होती है?
4. लूनः रूप को सिद्ध करने के लिए किस धातु एवं प्रत्यय का प्रयोग होता है?
5. ओदितश्च सूत्र का कार्य बताएँ?

- **निष्ठायां सेटि**

  इट् से युक्त निष्ठासंज्ञक प्रत्यय के परे होने पर णि का लोप होता है।

- **भावितः -**

भू धातु से 'हेतुमति च' सूत्र से णिच् प्रत्यय हुआ।

भू+णिच् 'चुटू' सूत्र से ण् और 'हलन्त्यम्' सूत्र से च् की इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर

भू+इ 'अचोञ्णिति' सूत्र से ऊ की वृद्धि औ होकर

भौ+इ 'एचोऽयवयावः' सूत्र से औ को आव् आदेश

भ्+आव्+इ –भावि भावि की भी 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातु संज्ञा हुई। भावि धातु से 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय हुआ।

भावि+क्त 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

भावि+त 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से इट् आगम

भावि+इट्+त 'हलन्त्यम्' सूत्र से ट् की इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप करके

भावि+इत 'निष्ठायां सेटि' सूत्र से णि का लोप होकर

भाव्+इत = भावित 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

भावित+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

भावित+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

भावित+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

भावित+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

भावितः सिद्ध हुआ।

- **भावितवान् -**

भू धातु से 'हेतुमति च' सूत्र से णिच् प्रत्यय हुआ।

भू+णिच् 'चुटू' सूत्र से ण् और 'हलन्त्यम्' सूत्र से च् की इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर

भू+इ 'अचो ञिणति' सूत्र से ऊ की वृद्धि औ होकर

भौ+इ 'एचोऽयवयावः' सूत्र से औ को आव् आदेश

भ्+आव्+इ = भावि भावि की भी 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातु संज्ञा हुई। भावि धातु से 'निष्ठा' सूत्र से क्तवतु प्रत्यय हुआ।

भावि+क्तवतु 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की और 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से उ की इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर तवत् शेष रहा।

भावि+तवत् 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से इट् आगम

भावि+इट्+तवत् 'हलन्त्यम्' सूत्र से ट् की इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप करके

भावि+इतवत् 'निष्ठायां सेटि' सूत्र से णि का लोप होकर

भाव्+इतवत् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

भावितवत्+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

भावितवत्+स् 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' सूत्र से धातु का अवयव नुम् आगम

भावितव+नुम्+त्+स् 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से न् के उ और 'हलन्त्यम्' सूत्र से म् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर न् शेष रहा।

भावितवन्त्+स् 'अत्वसन्तस्य चाधातोः' सूत्र से उपधा को दीर्घ होकर

भावितवान्त्+स् 'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर

भावितवान्त् 'संयोगान्तस्य लोपः' सूत्र से त् का लोप होकर

भावितवान् सिद्ध हुआ।

- **दधातेर्हिः**

  तकारादि कित् प्रत्यय के परे होने पर धा धातु के स्थान पर हि आदेश होता है।

- **हितम् -**

धा धातु से 'निष्ठा' सूत्र से क्त प्रत्यय हुआ।

धा+क्त	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
धा+त	'दधातेर्हिः' सूत्र से धा को हि आदेश
हि+त -हित	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
हित+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
हित+स्	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश
हित+अम्	'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप होकर
हितम्	सिद्ध हुआ।

- **दो दद् घोः**

  तकारादि कित् प्रत्यय के परे होने पर घुसंज्ञक दा धातु के स्थान पर दद् आदेश होता है।

- **दत्तः -**

दा धातु से 'निष्ठा' सूत्र से क्त प्रत्यय हुआ।

दा+क्त	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् की इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
दा+त	'दो दद् घोः' सूत्र से दा धातु के स्थान पर दद् आदेश
दद्+त	'खरि च' सूत्र से द् को चर्त्व त्
दत्+त = दत्त	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
दत्त+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
दत्त+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
दत्त+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
दत्त+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
दत्तः	सिद्ध हुआ।

- **लिटः कानज्वा**

  लिट् के स्थान पर कानच् आदेश विकल्प से होता है।

- **क्वसुश्च**

  लिट् के स्थान पर क्वसु आदेश भी विकल्प से होता है।

- **चक्राणः -**

कृ धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार हुआ।

कृ+लिट्	'लिटः कानज्वा' सूत्र से लिट् के स्थान पर कानच् आदेश हुआ।

कृ+कानच्	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् और 'हलन्त्यम्' सूत्र से च् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उका लोप होकर आन शेष रहा।

कृ+आन	'लिटि धातोरनभ्यासस्य' सूत्र से धातु को द्वित्व

कृ+कृ+आन	'उरत्' सूत्र से 'उरण् रपरः' की सहायता से अभ्यास के ऋ के स्थान पर अर् आदेश हुआ।

क्+अर्+कृ+आन = कर्+कृ+आन 'हलादिः शेषः' सूत्र से क शेष रहा। (र् का लोप हुआ।)

क+कृ+आन	'कुहोश्चुः' सूत्र से अभ्यास के कवर्ग को चवर्ग आदेश

च+कृ+आन	'इको यणचि' सूत्र से ऋ को र्

च+क्+र्+आन -चक्रान	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

चक्रान+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

चक्रान+स्	'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से न को ण आदेश

चक्राण+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

चक्राण+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

चक्राण+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

चक्राणः	सिद्ध हुआ।

- **म्वोश्च**
  मकारान्त धातु के मकार के स्थान पर नकार आदेश होता है मकार और वकार के परे रहने पर।
- **जगन्वान् -**

गम् धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार हुआ।

गम्+लिट्	'क्वसुश्च' सूत्र से लिट् को क्वसु आदेश

गम्+क्वसु	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से क् और 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से उ की इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर वस् शेष रहा।

गम्+वस्	'लिटि धातोरनभ्यासस्य' सूत्र से धातु को द्वित्व

गम्+गम्+वस्	'हलादिः शेषः' सूत्र से ग शेष रहा। (म का लोप हुआ।)

ग+गम्+वस्	'कुहोश्चुः' सूत्र से अभ्यास के ग को ज आदेश

जगम्+वस्	'म्वोश्च' सूत्र से म् को न्

जगन्+वस् = जगन्वस्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

जगन्वस्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

जगन्वस्+स्	'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' सूत्र से नुम् आगम

जगन्व+नुम्+स्+स्	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से न् के उ और 'हलन्त्यम्' सूत्र से म् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर न् शेष रहा।

जगन्वन्स्+स्	'सान्तमहतः संयोगस्य' सूत्र से उपधा को दीर्घ होकर

जगन्वान्स्+स्	'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर

जगन्वान्स्	'संयोगान्तस्य लोपः' सूत्र से स् का लोप होकर

जगन्वान्	सिद्ध हुआ।

- **लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे**

अप्रथमान्त अर्थात् प्रथमान्त से भिन्न के साथ समानाधिकरण होने पर लट् के स्थान पर शतृ और शानच् आदेश होते हैं।

- **पचन्तम्-**

पच् धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार हुआ।

पच्+लट्	'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से लट् के स्थान पर शतृ प्रत्यय हुआ।

पच्+शतृ	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से श् और 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से ऋ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अत् शेष रहा।

पच्+अत्	'तिङ्शित्सर्वधातुकम्' सूत्र से अत् की सार्वधातुक संज्ञा होकर 'कर्तरि शप्' से शप् प्रत्यय हुआ।

पच्+शप्+अत्	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से श् और 'हलन्त्यम्' सूत्र से प् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अ शेष रहा।

पच्+अ+अत्	'अतो गुणे' सूत्र से पररूप होकर

पचत्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से द्वितीया में अम् विभक्ति होने पर

पचत्+अम्	'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' सूत्र से नुम् आगम

पच+नुम्+त्+अम्	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से न् के उ और 'हलन्त्यम्' सूत्र से म् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर न् शेष रहा।

पचन्तम्	सिद्ध हुआ।

- **आने मुक्**

  आन के परे रहने पर अदन्त अंग को मुक् आगम होता है।

- **पचमानम् -**

पच् धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार हुआ।

पच्+लट् 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से लट् के स्थान पर शानच् प्रत्यय हुआ।

पच्+शानच् 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से श् और 'हलन्त्यम्' सूत्र से च् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आन शेष रहा।

पच्+आन 'तिङ्शित्सर्वधातुकम्' सूत्र से आन की सार्वधातुक संज्ञा होकर 'कर्तरि शप्' से शप् प्रत्यय हुआ।

पच्+शप्+आन 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से श् और 'हलन्त्यम्' सूत्र से प् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः'से उनका लोप होकर अ शेष रहा।

पच्+अ+आन = पच+आन 'आने मुक्' से पच के अकार को मुक् आगम

पच+मुक्+आन उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से और क् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप करके म् शेष रहा।

पच+म्+आन = पचमान 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से द्वितीया में अम् विभक्ति होने पर

पचमान+अम् 'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर

पचमानम् सिद्ध हुआ।

- **सन्दिजः -**

अस् धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार हुआ।

अस्+लट् 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से लट् के स्थान पर शतृ प्रत्यय हुआ।

अस्+शतृ 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से श् और 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से ऋ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अत् शेश रहा।

अस्+अत् 'श्नसोरल्लोपः' सूत्र से अस् के अकार का लोप होकर

स्+अत् = सत् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

सत्+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

सत्+स् 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' सूत्र से नुम् आगम

स+नुम्+त्+स् 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से न् के उ और 'हलन्त्यम्' सूत्र से म् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर न् शेष रहा।

सन्त्+स्　　'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर

सन्त्　　'संयोगान्तस्य लोपः' सूत्र से स् का लोप होकर

सन्　　सिद्ध हुआ।

- **विदेः शतुर्वसुः**

  विद् धातु से परे शतृ के स्थान पर विकल्प से वसु आदेश होता है।

- **विदन -**

विद् धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार हुआ।

विद्+लट्　　'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से लट् के स्थान पर शतृ प्रत्यय हुआ।

विद्+शतृ　　'लशक्वतद्धिते' सूत्र से श् और 'उपदेशे{जनुनासिक इत्' सूत्र से ऋ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अत् शेष रहा।

विद्+अत्-विदत्　'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

विदत्+सु　　'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

विदत्+स्　　'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' सूत्र से नुम् आगम

विद+नुम्+त्+स्　'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से न् के उ और 'हलन्त्यम्' सूत्र से म् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर न् शेष रहा।

विदन्त्+स्　　'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर

विदन्त्　　'संयोगान्तस्य लोपः' सूत्र से त् का लोप होकर

विदन्　　सिद्ध हुआ।

- **विद्वान् -**

विद् धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार हुआ।

विद्+लट्　　'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से लट् के स्थान पर शतृ प्रत्यय हुआ।

विद्+शतृ　　'लशक्वतद्धिते' सूत्र से श् और 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से ऋ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अत् शेष रहा।

विद्+अत्　　'विदेः शतुर्वसुः' सूत्र से शतृ को वसु आदेश

विद्+वसु　　'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से उ की इत्संज्ञा करके वस् शेष रहा।

विद्+वस्　　'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

विद्वस्+सु　　'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

विद्वस्+स्　　'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' सूत्र से नुम् आगम

विद्व+नुम्+स्+स्   'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से न् के उ और 'हलन्त्यम्' सूत्र से म् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर न् शेष रहा।

विद्वन्स्+स्   'सान्तमहतः संयोगस्य' सूत्र से उपधा को दीर्घ होकर

विद्वान्स्+स्   'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर

विद्वान्स्   'संयोगान्तस्य लोपः' सूत्र से स् का लोप होकर

विद्वान्   सिद्ध हुआ।

- **तौ सत्**
  उनशतृ और शानच् की सत् संज्ञा होती है।
- **लृटः सद्वा**
  लृट् के स्थान पर सत् प्रत्यय विकल्प से होते हैं।
- आ क्वेस्तच्छील-तद्धर्म-तत्साधुकारिषु
  क्विप् तक कहे जाने वाले प्रत्यय तच्छील, तद्धर्म तथा तत्साधुकारी कर्ता अर्थ में होते हैं।

- **करिष्यन्तम् -**

कृ धातु से 'लृट् शेषे च' सूत्र से लृट् लकार हुआ।

कृ+लृट्   'लृटः सद् वा' सूत्र से लृट् को परस्मैपद में शतृ आदेश

कृ+शतृ   'लशक्वतद्धिते' सूत्र से श् और 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से ऋ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अत् शेष रहा।

कृ+अत्   'स्यतासी लृलुटोः' सूत्र से धातु को स्य प्रत्यय हुआ।

कृ+स्य+अत्   'ऋद्धनोः स्ये' सूत्र से ऋदन्त धातु से परे इट् आगम

कृ+इट्+स्य+अत्   'हलन्त्यम्' सूत्र से ट् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कृ+इ+स्य+अत्   'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण होकर

क्+अर्+इस्य+अत् -करिस्य+अत्   'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से सकार को षकार आदेश

करिष्य+अत्   'अतो गुणे' सूत्र से पररूप होकर

करिष्यत्   'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से द्वितीया में अम् विभक्ति होने पर

करिष्यत्+अम्   'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' सूत्र से नुम् आगम

करिष्य+नुम्+त्+अम्   'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से न् के उ और 'हलन्त्यम्' सूत्र से म् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर न् शेष रहा।

करिष्यन्+तम्   करिष्यन्तम् सिद्ध हुआ।

- **करिष्यमाणम् -**

कृ धातु से 'लृट् शेषे च' सूत्र से लृट् लकार हुआ।

कृ+लृट्	'लृटः सद् वा' सूत्र से लृट् को आत्मनेपद में शानच् आदेश
कृ+शानच्	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से श् और 'हलन्त्यम्' सूत्र से च् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आन शेष रहा।
कृ+आन	'स्यतासी लृलुटोः' सूत्र से धातु को स्य प्रत्यय हुआ।
कृ+स्य+आन	'ऋद्धनोः स्ये' सूत्र से ऋदन्त धातु से परे इट् आगम
कृ+इट्+स्य+आन	'हलन्त्यम्' सूत्र से ट् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कृ+इ+स्य+आन	'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण होकर
क्+अर्+इस्य+आन = करिस्य+आन	'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से सकार को षकार आदेश
करिष्य+आन	'आने मुक्' सूत्र से अदन्त अंग को मुक् आगम
करिष्य+मुक्+आन	उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से और क् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके उनका 'तस्य लोपः' से लोप करके म् शेष रहा।
करिष्य+म्+आन = करिष्यमान	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और स्वौजसमौट्-' सूत्र से द्वितीया में अम् विभक्ति होने पर
करिष्यमान+अम्	'अट्कुप्वाङ्नुम्व्येवायेऽपि' सूत्र से न को ण होकर
करिष्यमाण+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर
करिष्यमाणम्	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. 'निष्ठायां सेटि' सूत्र क्या करता है?
2. 'हितम्' में कौन सा प्रत्यय हुआ?
3. 'जगन्वान्' रूप का लकार कौन सा है?
4. 'आने मुक्' सूत्र का कार्य बताएँ?
5. 'शतृ' और 'शानच्' की कौन सी संज्ञा होती है?

3.5 सारांश

इस अध्याय में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 814 से 839 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत पूर्वकृदन्त प्रकरण के ड, क्त, क्तवतु, णिच्, शतृ तथा शानच् प्रत्यय का वर्णिन किया गया है। प्रत्ययों के अतिरिक्त दद्-क्वसु आदेश तथा मुकागम आदि का प्रयोग भी बताया गया है। प्रस्तुत अध्याय विद्यार्थियों को पूर्वकृदन्त की सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझाने में सहायक सिद्ध होगा।

3.6 कठिन शब्दावली

- **बहुलम्**
  बहुल का अर्थ है कभी होना या न होना।
- **प्राग्वत्**
  प्राग्वत् का अर्थ है पहले की तरह अर्थात् पूर्ववत्।
- **सार्वधातुक**
  संस्कृत व्याकरण के अनुसार सभी धातुओं में व्यवहृत होने वाला।

3.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. 'ड' प्रत्यय। 2. 'हशि च'।

3. 'क्त' एवं 'क्तवतु'। 4. 'लू+क्त'।

4. ओदित् धातुओं से पर निष्ठा के तकार को नकार आदेश।

अभ्यास प्रश्न 2

1. 'इट्' से युक्त निष्ठासंज्ञक प्रत्यय के परे होने पर 'णि' का लोप।

2. 'क्त'।

3. 'लिट्'।

4. अदन्त अंग को आन परे रहते मुक् आगम।

5. सत् संज्ञा।

3.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. **निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-**
   तत्पुरुषे कृति बहुलम्। क्त-क्तवतू निष्ठा। संयोगादेराती धातोर्यण्वतः। ओदितश्च। शुषः कः। निष्ठायां सेटि। लिटः कानज् वा। विदेः शतुर्वसुः।
2. **निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-**
   सरोजम्, भिन्नः, ग्लानः, भुग्नः, पक्वः, हितम्, दत्तः, चक्राणः, जगन्वान्, करिष्यमाणम्।

चतुर्थ इकाई
पूर्व कृदन्त-4

संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 वर्णित प्रत्यय

4.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 814 से 839 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

4.5 सारांश

4.6 कठिन शब्दावली

4.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

4.8 सहायक ग्रन्थ

4.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों, तृतीय अध्याय में आपने लघुसिद्धान्तकौमुदी के कृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत 787 से 839 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि पढ़ी, जिसमें ड, क्त, क्तवतु, णिच्, शतृ तथा शानच् आदि प्रत्ययों का अध्ययन किया। अब लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 840 से 851 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि की जाएगी, जिसमें आप सभी तृन्, षाकन्, उ, क्विप्, ष्ट्रन्, इत्र तथा उण् आदि प्रत्ययों का अध्ययन करेंगे। इस अध्याय में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित सूत्रों को उदाहरण सहित वर्णित करने का प्रयास किया जा रहा है।

4.2 उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप जानने में समर्थ होंगे-

- लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत पूर्वकृदन्त के सूत्रों का अर्थ।
- धातु के साथ प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाने में सक्षम हो जायेंगे।
- किसी शब्द को बनाने में प्रयुक्त प्रत्ययों और सूत्रों को जानने में सक्षम हो जायेंगे।

4.3 वर्णित प्रत्यय

चतुर्थ अध्याय में पूर्वकृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत तृन्, षाकन्, उ, क्विप्, ष्ट्रन्, इत्र तथा उण् आदि प्रत्ययों का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में कृदन्त प्रकरण के 840 से 851 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि की जाएगी। जिससे विद्यार्थी पूर्वकृदन्त के सूत्रों को उदाहरण सहित जानने में समर्थ हो सकेंगे।

4.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 840 से 851 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- **तृन्**

  कर्ता अर्थ में धातुओं से तृन् प्रत्यय होता है।

- **कर्ता -**

कृ धातु से 'तृन्' सूत्र से तृन् प्रत्यय हुआ।

कृ+तृन् 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कृ+तृ 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण होकर

क्+अर्+तृ = कर्तृ 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

कर्तृ+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कर्तृ+स् 'ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च' सूत्र से ऋ के स्थान पर अनघ् आदेश हुआ।

कर्त्+अनघ्+स् घ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से और न के अ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा करके तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अन् शेष रहा।

कर्तन्+स् 'अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तृणाम्' सूत्र से उपधा को दीर्घ होकर

कर्तान्+स् 'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर

कर्तान् 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर

कर्ता सिद्ध हुआ।

- **जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृघः षाकन्**

  जल्प्, भिक्ष्, कुट्ट, लुण्ट्, वृघ् धातुओं से तच्छील, तद्धर्म, तत्साधुकारी कर्ता अर्थ में षाकन् प्रत्यय होता है।

- **षः प्रत्ययस्य**

  प्रत्यय के आदि में विद्यमान षकार इत्संज्ञक होता है।

- **जल्पाकः, भिक्षाकः -**

जल्प्, भिक्ष् धातु से 'जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृघः षाकन्' सूत्र से षाकन् प्रत्यय हुआ।

जल्प्, भिक्ष्+षाकन् 'षः प्रत्ययस्य' सूत्र से ष् और 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आक शेष रहा।

जल्प्, भिक्ष्+आक = जल्पाक, भिक्षाक 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

जल्पाक, भिक्षाक+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

जल्पाक, भिक्षाक+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

जल्पाक, भिक्षाक+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

जल्पाक, भिक्षाक+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

जल्पाकः, भिक्षाकः सिद्ध हुआ।

- **कुट्टाकः, लुण्टाकः -**

कुट्ट्, लुण्ट् धातु से 'जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृघः षाकन्' सूत्र से षाकन् प्रत्यय हुआ।

कुट्ट्, लुण्ट्+षाकन् 'षः प्रत्ययस्य' सूत्र से ष् और 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आक शेष रहा।

कुट्ट्, लुण्ट्+आक = कुट्टाक, लुण्टाक 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

कुट्टाक, लुण्टाक+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कुट्टाक, लुण्टाक+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

कुट्टाक, लुण्टाक+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कुट्टाक, लुण्टाक+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

कुट्टाकः,लुण्टाकः सिद्ध हुआ।

- **वराकः -**

वृ धातु से 'जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृघः षाकन्' सूत्र से षाकन् प्रत्यय हुआ।

वृ+षाकन् 'षः प्रत्ययस्य' सूत्र से ष् और 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आक शेष रहा।

वृ+आक 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण होकर

व्+अर्+आक = वराक 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

वराक+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

वराक+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
वराक+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
वराक+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
वराकः	सिद्ध हुआ।

- **वराकी -**

वृ धातु से 'जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृघः षाकन्' सूत्र से षाकन् प्रत्यय हुआ।

वृ+षाकन्	'षः प्रत्ययस्य' सूत्र से ष् और 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आक शेष रहा।
वृ+आक	'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण होकर
व्+अर्+आक = वराक	'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होकर
वराक+ङीष्	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से घ् की और 'हलन्त्यम्' सूत्र से ष् की इत्संज्ञा करक ई शेष
वराक+ई	'यस्येति च' सूत्र से क के अ का लोप होकर
वराक्+ई = वराकी	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
वराकी+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
वराकी+स्	'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
वराकी	सिद्ध हुआ।

- **सनाशंसभि्क्ष उः**

सन् प्रत्ययान्त धातुओं, आ+शंस् और भिक्ष् धातुओं से तच्छील, तद्धर्म, तत्साधुकारी कर्ता अर्थ में उ प्रत्यय होता है।

- **चिकीर्षुः -**

चिकीर्ष से 'सनाशंसभिक्ष उः' सूत्र से उ प्रत्यय हुआ।

चिकीर्ष+उ	'अतो लोपः' सूत्र से अकार लोप होकर
चिकीर्ष्+उ = चिकीर्षु	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
चिकीर्षु+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

चिकीर्षु+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

चिकीर्षु+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

चिकीर्षु+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

चिकीर्षुः सिद्ध हुआ।

- **आशंसुः, भिक्षुः -**

आ उपसर्गपूर्वक शंस् और भिक्ष् धातु से 'सनाशंसभिक्ष उः' सूत्र से उ प्रत्यय हुआ।

आ+शंस्, भिक्ष्+उ = आशंसु, भिक्षु 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

आशंसु, भिक्षु+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

आशंसु, भिक्षु+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

आशंसु, भिक्षु+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

आशंसु, भिक्षु+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

आशंसुः, भिक्षुः सिद्ध हुआ।

- **भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपॄजुग्रावस्तुवः क्विप्**

वि उपसर्ग पूर्वक भ्राज्, भास्, धुर्व, द्युत्, ऊर्ज्, पृ, जु, ग्राव और स्तु धातुओं से कर्ता अर्थ में क्विप् होता है।

- **विभ्राट् -**

वि उपसर्ग पूर्वक भ्राज् धातु से 'भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपृजुग्रावस्तुवः क्विप्' सूत्र से क्विप् प्रत्यय हुआ।

वि+भ्राज्+क्विप् क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर

वि+भ्राज्+व 'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप

विभ्राज् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

विभ्राज्+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

विभ्राज्+स् 'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर

विभ्राज्	'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से ज् को ष्
विभ्राष्	'झलां जशोऽन्ते' सूत्र से ष् को ड्
विभ्राड्	'वाऽवसाने' सूत्र से ड् को ट्
विभ्राट्	सिद्ध हुआ।

- **भाः -**

भास् धातु से 'भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपृजुग्रावस्तुवः क्विप्' सूत्र से क्विप् प्रत्यय हुआ।

भास्+क्विप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर
भास्+व	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप
भास्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
भास्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
भास्+स्	'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
भास्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
भा+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
भा+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
भाः	सिद्ध हुआ।

- **राल्लोपः**

  रेफ से पर छकार या वकार का लोप होता है, यदि क्वि या झलादि कित्, घित् परे हो तो।

- **धूः -**

धुर्व् धातु से 'भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपृजुग्रावस्तुवः क्विप्' सूत्र से क्विप् प्रत्यय हुआ।

धुर्व्+क्विप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर
धुर्व्+व	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप
धुर्व्	'राल्लोपः' सूत्र से व् का लोप
धुर्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

धुर्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
धुर्+स्	'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
धुर्	'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' सूत्र से उपधा को दीर्घ
धूर्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
धूः	सिद्ध हुआ।

- **विद्युत् -**

वि उपसर्ग पूर्वक द्युत् धातु से 'भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपृजुग्रावस्तुवः क्विप्' सूत्र से क्विप् प्रत्यय हुआ।

वि+द्युत्+क्विप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर
वि+द्युत्+व	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप
विद्युत्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
विद्युत्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
विद्युत्+स्	'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
विद्युत्	सिद्ध हुआ।

- **ऊर्क् -**

ऊर्ज् धातु से 'भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपृजुग्रावस्तुवः क्विप्' सूत्र से क्विप् प्रत्यय हुआ।

ऊर्ज्+क्विप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर
ऊर्ज्+व	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप
ऊर्ज्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
ऊर्ज्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
ऊर्ज्+स्	'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
ऊर्ज्	'चोः कुः' सूत्र से ज् को ग्
ऊर्ग्	'वाऽवसाने' सूत्र से ग् को क् होकर

ऊर्क्	सिद्ध हुआ।

- **पूः -**

पृ धातु से 'भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपृजुग्रावस्तुवः क्विप्' सूत्र से क्विप् प्रत्यय हुआ।

पृ+क्विप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर
पृ+व	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप
पृ	'उदोष्ठ्यपूर्वस्य' सूत्र से ऋ को उर् 'उरण् रपर' की सहायता से
प्+उर् = पुर्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
पुर्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
पुर्+स्	'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
पुर्	'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' सूत्र से उपधा को दीर्घ
पूर्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
पूः	सिद्ध हुआ।

- **जूः -**

जु धातु से 'भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपृजुग्रावस्तुवः क्विप्' सूत्र से क्विप् प्रत्यय हुआ।

जु+क्विप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर
जु+व	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप
जु	'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' सूत्र से उ को दीर्घ
जू	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
जू+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
जू+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
जू+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
जू+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

जूः सिद्ध हुआ।

- **ग्रावस्तुत्** -

ग्रावन् अम् उपपद पूर्वक स्तु धातु से 'भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपृजुग्रावस्तुवः क्विप्' सूत्र से क्विप् प्रत्यय हुआ।

ग्रावन्+अम्+स्तु+क्विप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर
ग्रावन्+अम्+स्तु+व	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप
ग्रावन्+अम्+स्तु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप
ग्रावन्+स्तु	'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप
ग्रावस्तु	'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से स्तु को तुक् आगम
ग्रावस्तु+तुक्	उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से और क् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उनका लोप कर त् शेष रहा।
ग्रावस्तुत्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
ग्रावस्तुत्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
ग्रावस्तुत्+स्	'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
ग्रावस्तुत्	सिद्ध हुआ।

- **वार्तिक - क्विब्वचिप्रच्छ्यायतस्तुकटप्रुजुश्रीणां दीर्घोऽसम्प्रसारणश्च**

वच्, पृच्छ्, आयत पूर्वक स्तु, कट पूर्वक प्रु, जु और श्रि धातु से क्विप् हो, दीर्घ हो और संप्रसारण का अभाव हो।

- **वाक्** -

वच् धातु से 'क्विब्वचिप्रच्छ्यायतस्तुकटप्रुजुश्रीणां दीर्घोऽसम्प्रसारश्च' वार्तिक से क्विप् प्रत्यय और धातु को दीर्घ होकर

वच्+क्विप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप और धातु को दीर्घ होकर
वाच्+व	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप
वाच्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

वाच्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
वाच्+स्	'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
वाच्	'चोः कुः' सूत्र से च् को क् होकर
वाक्	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. 'तृन्' प्रत्यय विधायक सूत्र है?
2. 'षः प्रत्ययस्य' सूत्र का कार्य बताएँ?
3. 'वराकी' में 'ङीष्' प्रत्यय किस सूत्र से हुआ?
4. 'चिकीर्षुः' में 'उ' प्रत्यय विधायक सूत्र है?
5. वाक् रूप में 'वाच्+व' की स्थिति में 'व' का लोप विधायक सूत्र है?

- **च च्छ्वोः शूडनुनासिके**

अनुनासिकादि प्रत्यय के परे होने पर या क्वि परे होने पर अथवा झलादि कित् घित् के परे होने पर तुक सहित छकार के स्थान पर श् आदेश और वकार के स्थान पर ऊठ् आदेश होते हैं।

- **प्राट् -**

प्रच्छ् धातु से 'क्विब्वचिप्रच्छ्यायतस्तुकटप्रुजुश्रीणां दीर्घोऽसम्प्रसारणश्च' वार्तिक से क्विप् प्रत्यय और धातु को दीर्घ होकर

प्रच्छ्+क्विप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप और धातु को दीर्घ होकर
प्राच्छ्+व	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप
प्राच्छ्	'च्छ्वोः शूडनुनासिके च' सूत्र से च्छ् को श् आदेश
प्राश्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
प्राश्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
प्राश्+स्	'हलघ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
प्राश्	'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से श् को ष्
प्राष्	'झलां जशोऽन्ते' सूत्र से ष् को ड्
प्राड्	'वाऽवसाने' सूत्र से ड् को ट्
प्राट्	सिद्ध हुआ।

- **आयतस्तूः -** (आयतं स्तुति इति)

आयत अम् उपपद पूर्वक स्तु धातु से 'क्विब्वचिप्रच्छ्यायतस्तुकटप्रुजुश्रीणां दीर्घोऽसम्प्रसारणञ्च' वार्तिक से क्विप् प्रत्यय और धातु को दीर्घ होकर

आयत+अम्+स्तु+क्विप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप और धातु को दीर्घ होकर
आयत+अम्+स्तू+व	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप
आयत+अम्+स्तू	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप होकर
आयतस्तू	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
आयतस्तू+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
आयतस्तू+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
आयतस्तू+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
आयतस्तू+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
आयतस्तूः	सिद्ध हुआ।

- **कटप्रूः -** (कटं प्रवते)

कट अम् उपपद पूर्वक प्रु धातु से 'क्विब्वचिप्रच्छ्यायतस्तुकटप्रुजुश्रीणां दीर्घोऽसम्प्रसारणञ्च' वार्तिक से क्विप् प्रत्यय और धातु को दीर्घ होकर

कट+अम्+प्रु+क्विप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप और धातु को दीर्घ होकर
कट+अम्+प्रू+व	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप
कट+अम्+प्रू	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से अम् का लोप होकर
कटप्रू	कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
कटप्रू+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कटप्रू+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

कटप्रू+रु	‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर
कटप्रू+र्	‘खरवसानयोर्विसर्जनीयः’ सूत्र से र् को विसर्ग होकर
कटप्रूः	सिद्ध हुआ।

- **श्रीः -**

श्रि धातु से ‘क्विब्वचिप्रच्छ्यायतस्तुकटप्रुजुश्रीणां दीर्घोऽसम्प्रसारणञ्च’ वार्तिक से क्विप् प्रत्यय और धातु को दीर्घ होकर

श्रि+क्विप्	क् की ‘लशक्वतद्धिते’, इ की ‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ और प् की ‘हलन्त्यम्’ सूत्र से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उनका लोप और धातु को दीर्घ होकर
श्री+व	‘वेरपृक्तस्य’ सूत्र से व का लोप
श्री	‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर
श्री+सु	‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर
श्री+स्	‘ससजुषो रुः’ सूत्र से स् को रु
श्री+रु	‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर
श्री+र्	‘खरवसानयोर्विसर्जनीयः’ सूत्र से र् को विसर्ग होकर
श्रीः	सिद्ध हुआ।

- **दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे**

दाप्, नी, शस्, यु, युज्, स्तु, तुद्, सि, सिच्, मिह्, पत्, दंश्, नह् इन धातुओं से परे करण अर्थ में ष्ट्रन प्रत्यय होता है।

- **दात्रम् -**

दा धातु से ‘दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे’ सूत्र से ष्ट्रन् प्रत्यय हुआ।

दा+ष्ट्रन्	‘षः प्रत्ययस्यः’ सूत्र से ष की, ‘हलन्त्यम्’ सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उनका लोप होकर और टकार तकार में बदल गया
दा+त्र = दात्र	‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर
दात्र+सु	‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर

दात्र+स्	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश
दात्र+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर
दात्रम्	सिद्ध हुआ।

- **नेत्रम् -**

नी धातु से 'दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे' सूत्र से ष्ट्रन् प्रत्यय हुआ।

नी+ष्ट्रन्	'षः प्रत्ययस्यः' सूत्र से ष की, 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर और टकार तकार में बदल गया
नी+त्र	'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से इ को ए गुण होकर
नेत्र	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
नेत्र+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
नेत्र+स्	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश
नेत्र+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर
नेत्रम्	सिद्ध हुआ।

- **तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च**

  ति, तु, त्र, त, थ, सि, सु, सर, क, और स इन कृत्प्रत्ययों को इट् का आगम नहीं होता।

- **शस्त्रम् -**

शस् धातु से 'दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे' सूत्र से ष्ट्रन् प्रत्यय हुआ।

शस्+ष्ट्रन्	'षः प्रत्ययस्यः' सूत्र से ष की, 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर और टकार तकार में बदल गया
शस्+त्र = शस्त्र	'आर्धधातुकस्येड्वलादेः' सूत्र से इट् प्राप्त था किन्तु उसका 'तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च' सूत्र से निषेध होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
शस्त्र+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
शस्त्र+स्	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश
शस्त्र+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर
शस्त्रम्	सिद्ध हुआ।

- **योत्रम् -**

यु धातु से 'दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे' सूत्र से ष्ट्रन् प्रत्यय हुआ।

यु+ष्ट्रन्	'षः प्रत्ययस्यः' सूत्र से ष की, 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर और टकार तकार में बदल गया
यु+त्र	'आर्धधातुकस्येड्वलादेः' सूत्र से इट् प्राप्त था किन्तु उसका 'तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च' सूत्र से निषेध होकर 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से उ को ओ गुण होकर
योत्र	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
योत्र+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
योत्र+स्	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश
योत्र+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर
योत्रम्	सिद्ध हुआ।

- **योक्त्रम् -**

युज् धातु से 'दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे' सूत्र से ष्ट्रन् प्रत्यय हुआ।

युज्+ष्ट्रन्	'षः प्रत्ययस्यः' सूत्र से ष की, 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर और टकार तकार में बदल गया
युज्+त्र	'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से इट् प्राप्त था, उसका 'एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्' सूत्र से निषेध होकर 'पुगन्तलघूपदस्य च' सूत्र से उपधा को गुण होकर
योज्+त्र	'चोः कुः' सूत्र से ज् को ग्
योग्+त्र	'खरि च' सूत्र से ग् को क्
योक्त्र	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
योक्त्र+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
योक्त्र+स्	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश
योक्त्र+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर
योक्त्रम्	सिद्ध हुआ।

- **स्तोत्रम् -**

स्तु धातु से 'दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे' सूत्र से ष्ट्रन् प्रत्यय हुआ।

स्तु+ष्ट्रन्	'षः प्रत्ययस्यः' सूत्र से ष की, 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर और टकार तकार में बदल गया
स्तु+त्र	'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से उ को ओ गुण होकर

स्तोत्र 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

स्तोत्र+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

स्तोत्र+स् 'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश

स्तोत्र+अम् 'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर

स्तोत्रम् सिद्ध हुआ।

- **तोत्रम् -**

तुद् धातु से 'दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे' सूत्र से ष्ट्रन् प्रत्यय हुआ।

तुद्+ष्ट्रन् 'षः प्रत्ययस्यः' सूत्र से ष की, 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर और टकार तकार में बदल गया

तुद्+त्र 'पुगन्तलघूपदस्य च' सूत्र से उपधा को गुण होकर

तोद्+त्र 'खरि च' सूत्र से द् को त्

तोत्त्र 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

तोत्त्र+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

तोत्त्र+स् 'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश

तोत्त्र+अम् 'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर

तोत्त्रम् सिद्ध हुआ।

- **सेत्रम् -**

सि धातु से 'दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे' सूत्र से ष्ट्रन् प्रत्यय हुआ।

सि+ष्ट्रन् 'षः प्रत्ययस्यः' सूत्र से ष की, 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर और टकार तकार में बदल गया

सि+त्र 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से इ को गुण ए

सेत्र 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

सेत्र+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

सेत्र+स् 'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश

सेत्र+अम् 'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर

सेत्रम् सिद्ध हुआ।

- **सेक्त्रम् -**

सिच् धातु से 'दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे' सूत्र से ष्ट्रन् प्रत्यय हुआ।

सिच्+ष्ट्रन्　　‘षः प्रत्ययस्यः’ सूत्र से ष की, ‘हलन्त्यम्’ सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उनका लोप होकर और टकार तकार में बदल गया

सिच्+त्र　　‘पुगन्तलघूपदस्य च’ सूत्र से उपधा को गुण होकर

सेच्+त्र　　‘चोः कुः’ सूत्र से च् को क्

सेक्त्र　　‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर

सेक्त्र+सु　　‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर

सेक्त्र+स्　　‘अतोऽम्’ सूत्र से सु को अम् आदेश

सेक्त्र+अम्　　‘अमि पूर्वः’ से पूर्वरूप होकर

सेक्त्रम्　　सिद्ध हुआ।

- **मेढ्रम् -**

मिह् धातु से ‘दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे’ सूत्र से ष्ट्रन् प्रत्यय हुआ।

मिह्+ष्ट्रन्　　‘षः प्रत्ययस्यः’ सूत्र से ष की, ‘हलन्त्यम्’ सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उनका लोप होकर और टकार तकार में बदल गया

मिह्+त्र　　‘पुगन्तलघूपदस्य च’ सूत्र से उपधा को गुण होकर

मेह्+त्र　　‘होढः’ सूत्र से ह् को ढ्

मेढ्+त्र　　‘झषस्तथोर्धोऽधः’ सूत्र से त् को ध्

मेढ्+ध्र　　‘ष्टुना ष्टुः’ सूत्र से ध् को ढ्

मेढ्+ढ्र　　‘ढो ढे लोपः’ सूत्र से पूर्व ढकार का लोप होकर

मेढ्र　　‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर

मेढ्र+सु　　‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर

मेढ्र+स्　　‘अतोऽम्’ सूत्र से सु को अम् आदेश

मेढ्र+अम्　　‘अमि पूर्वः’ से पूर्वरूप होकर

मेढ्रम्　　सिद्ध हुआ।

- **पत्त्रम् -**

पत् धातु से ‘दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे’ सूत्र से ष्ट्रन् प्रत्यय हुआ।

पत्+ष्ट्रन्　　‘षः प्रत्ययस्यः’ सूत्र से ष की, ‘हलन्त्यम्’ सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उनका लोप होकर और टकार तकार में बदल गया

पत्+त्र = पत्त्र　　‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर

पत्र+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
पत्र+स्	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश
पत्र+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर
पत्रम्	सिद्ध हुआ।

- **दंष्ट्रा -**

दंश् धातु से 'दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे' सूत्र से ष्ट्रन् प्रत्यय हुआ।

दंश्+ष्ट्रन्	'षः प्रत्ययस्यः' सूत्र से ष की, 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर और टकार तकार में बदल गया
दंश्+त्र	'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजश्छशां षः' सूत्र से श् को ष्
दंष्+त्र	'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से त् को ट्
दंष्ट्र	'अजाद्यष्टाप्' सूत्र से टाप्
दंष्ट्र+टाप्	'चुटू' सूत्र से ट्, 'हलन्त्यम्' सूत्र से प् की इत्संज्ञा और 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आ शेष रहा।
दंष्ट्र+आ	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर
दंष्ट्रा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
दंष्ट्रा+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
दंष्ट्रा+स्	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप
दंष्ट्रा	सिद्ध हुआ।

- **नद्ध्री -**

नह् धातु से 'दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे' सूत्र से ष्ट्रन् प्रत्यय हुआ।

नह्+ष्ट्रन्	'षः प्रत्ययस्यः' सूत्र से ष की, 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर और टकार तकार में बदल गया।
नह्+त्र	'नहो धः' सूत्र से ह् को ध्
नध्+त्र	'झषस्तथोर्धोऽधः' सूत्र से त् को ध्
नध्+ध्र	'झलां जशोऽन्ते' सूत्र से ध् को द्
नद्ध्र	'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से ङीष् प्रत्यय
नद्ध्र+ङीष्	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से ङ् की, 'हलन्त्यम्' सूत्र से ष् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर ई शेष रहा।

नद्ध्र+ई 'यस्येति च' सूत्र से अकार का लोप

नद्ध्+ई = नद्ध्री 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

नद्ध्री+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

नद्ध्री+स् 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप

नद्ध्री सिद्ध हुआ।

- **अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्र**

  ऋ, लू, धू, सू, खन्, सह् और चर् धातुओं से करण अर्थ में इत्र प्रत्यय होता है।

- **अरित्रम् -**

ऋ धातु से 'अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्र' सूत्र से इत्र प्रत्यय हुआ।

ऋ+इत्र 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से ऋ को 'उरण् रपरः' की सहायता से अर् गुण

अर्+इत्र = अरित्र कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

अरित्र+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

अरित्र+स् 'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश

अरित्र+अम् 'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर

अरित्रम् सिद्ध हुआ।

- **लवित्रम्, धवित्रम्, सवित्रम् -**

लू, धू, सू धातु से 'अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्र' सूत्र से इत्र प्रत्यय हुआ।

लू, धू, सू+इत्र 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से उ को ओ गुण

लो, धो, सो+इत्र 'एचोऽयवायावः' सूत्र से ओ को अव् आदेश

लवित्र, धवित्र, सवित्र 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

लवित्र, धवित्र, सवित्र+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

लवित्र, धवित्र, सवित्र+स् 'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश

लवित्र, धवित्र, सवित्र+अम् 'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर

लवित्रम्, धवित्रम्, सवित्रम् सिद्ध हुआ।

- **खनित्रम्, सहित्रम्, चरित्रम् -**

खन्, सह्, चर् धातु से 'अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्र' सूत्र से इत्र प्रत्यय हुआ।

खन्, सह्, चर्+इत्र खनित्र, सहित्र, चरित्र

खनित्र, सहित्र, चरित्र 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

खनित्र, सहित्र, चरित्र+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

खनित्र, सहित्र, चरित्र+स् 'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश

खनित्र, सहित्र, चरित्र+अम् 'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर

खनित्रम्, सहित्रम्, चरित्रम् सिद्ध हुआ।

- **पुवः संज्ञायाम्**

  पू धातु से संज्ञा अर्थ में इत्र प्रत्यय हो।

- **पवित्रम् -**

पू धातु से 'पुवः संज्ञायाम्' सूत्र से इत्र प्रत्यय हुआ।

पू+इत्र 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से उ को ओ गुण

पो+इत्र 'एचोऽयवायावः' सूत्र से ओ को अव् आदेश

पवित्र 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

पवित्र+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

पवित्र+स् 'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश

पवित्र+अम् 'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर

पवित्रम् सिद्ध हुआ।

- **कृ-वा-पा-जि-मि-स्वदि-साध्यशूभ्य उण्**

  कृ, वा, पा, जि, मि, स्वद्, साध्,और अश् धातु से उण् प्रत्यय हो।

- **कारुः -**

कृ धातु से 'कृ-वा-पा-जि-मि-स्वदि-साध्यशूभ्य उण्' सूत्र से उण् प्रत्यय हुआ।

कृ+उण् 'हलन्त्यम्' से ण् की इत्संज्ञा और 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कृ+उ 'अचोञ्णिति' सूत्र से ऋ को आर् वृद्धि

कारु 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

कारु+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कारु+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

कारु+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कारु+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

कारुः सिद्ध हुआ।

- **वायुः, पायुः -**

वा, पा धातु से 'कृ-वा-पा-जि-मि-स्वदि-साध्यशूभ्य उण्' सूत्र से उण् प्रत्यय हुआ।

वा, पा+उण् 'हलन्त्यम्' से ण् की इत्संज्ञा और 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

वा, पा+उ 'आतो युक् चिण्कृतोः' सूत्र से आदन्त धातु को युक् आगम

वा+युक्+उ, पा+युक्+उ 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से उ और 'हलन्त्यम्' सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' सूत्र से उनका लोप होकर य् शेष रहा।

वायु, पायु 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

वायु, पायु+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

वायु, पायु+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

वायु, पायु+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

वायु, पायु+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

वायु, पायुः सिद्ध हुआ।

- **जायुः, मायुः -**

जि, मि धातु से 'कृ-वा-पा-जि-मि-स्वदि-साध्यशूभ्य उण्' सूत्र से उण् प्रत्यय हुआ।

जि, मि+उण् 'हलन्त्यम्' से ण् की इत्संज्ञा और 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

जि, मि+उ 'अचोञ्णिति' सूत्र से इ को ऐ वृद्धि

जै, मै+उ 'एचोऽयवायावः' सूत्र से ऐ को आय् आदेश

ज्+आय्+उ, म्+आय्+उ = जायु, मायु

जायु, मायु 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

जायु, मायु+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

जायु, मायु+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

जायु, मायु+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

जायु, मायु+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

जायु, मायुः	सिद्ध हुआ।

- **स्वादुः, आशुः -**

स्वद्धातु से 'कृ-वा-पा-जि-मि-स्वदि-साध्यशूभ्य उण्' सूत्र से उण् प्रत्यय हुआ।

स्वद्+उण्	'हलन्त्यम्' से ण् की इत्संज्ञा और 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

स्वद्+उ	'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा को वृद्धि होकर

स्वादु	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

स्वादु+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

स्वादु+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

स्वादु+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

स्वादु+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

स्वादुः	सिद्ध हुआ।

- **साधुः -**

साध् धातु से 'कृ-वा-पा-जि-मि-स्वदि-साध्यशूभ्य उण्' सूत्र से उण् प्रत्यय हुआ।

साध्+उण्	'हलन्त्यम्' से ण् की इत्संज्ञा और 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

साध्+उ = साधु	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

साधु+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

साधु+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

साधु+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

साधु+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

साधुः	सिद्ध हुआ।

- **आशु -**

अश् धातु से 'कृ-वा-पा-जि-मि-स्वदि-साध्यशूभ्य उण्' सूत्र से उण् प्रत्यय हुआ।

अश्+उण्	'हलन्त्यम्' से ण् की इत्संज्ञा और 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

अश्+उ	'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा को वृद्धि होकर

आशु	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

आशु+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

आशु+स्	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर

आशु सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. 'आयतस्तु' में कौन सा प्रत्यय लगाकर रूप बना?
2. 'दात्रम्' में प्रातिपदिक संज्ञा विधायक सूत्र है?
3. 'तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च' सूत्र का कार्य क्या है?
4. 'अरित्रम्' में किस सूत्र से कौन सा प्रत्यय हुआ?
5. 'वायु' रूप के 'वा+उ' की स्थिति में 'युक्' आगम किस सूत्र से हुआ?

4.5 सारांश

इस अध्याय में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित पूर्वकृदन्त प्रकरण के 840 से 851 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत पूर्वकृदन्त प्रकरण के तृन्, षाकन्, उ, क्विप्, ष्ट्रन्, इत्र तथा उण् आदि प्रत्ययों का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय विद्यार्थियों को पूर्वकृदन्त की सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझाने में सहायक सिद्ध होगा। इसी के साथ यहाँ पूर्वकृदन्त प्रकरण का समापन हुआ।

4.6 कठिन शब्दावली

- **प्रातिपदिक**
  संस्कृत व्याकरण के अनुसार वह अर्थवान् शब्द जो धातु न हो और न उसकी सिद्धि विभक्ति लगने से हुई हो।
- **अव्यय**
  वह शब्द जिनके रूप में वचन, लिंग आदि के कारण कोई विकार अथवा परिवर्तन नहीं होता।
- **आर्धधातुक**
  तिङ् एवं शित् से भिन्न प्रत्यय आर्धधातुक कहलाते हैं।

4.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. 'तृन्'।
2. प्रत्यय के आदि में विद्यमान षकार की इत्संज्ञा।
3. 'षिद्गौरादिभ्यश्च'।
4. 'सनाशंसभिक्ष उः'।
5. 'वेरपृक्तस्य'।

अभ्यास प्रश्न 2

1. 'क्विप्'।

2. ‘कृतद्धितसमासाश्च’।

3. ति, तु, त्र, त, थ, सि, सु, सर, क और स आदि प्रत्ययों को ‘इट्’ का आगम नहीं होता।

4. ‘अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्र’ से ‘इत्र’ प्रत्यय।

5. ‘आतो युक् चिण्कृतोः’।

4.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकारः गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकारः श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल ‘हँस’, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

4.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

3. **निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-**
जल्प-भिक्ष-कुट्ट-लुण्ट-वृङः षाकन्। षः प्रत्ययस्य। राल्लोपः। च्छ्वोःशूड् अनुनासिके च। पुवः संज्ञायाम्। उणादयो बहुलम्।

4. **निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-**
कर्ता, वराकी, आशंसुः, भिक्षुः, धूः, ऊर्क्, ग्रावस्तुत्, वाक्, दाम्नीति, शस्त्रम्, पवित्रम्, वायुः तथा साधुः आदि।

पञ्चम इकाई
उत्तरकृदन्त-1

संरचना

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 वर्णित प्रत्यय
5.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 852 से 859 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि
- स्वयं आकलन प्रश्न

5.5 सारांश
5.6 कठिन शब्दावली
5.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
5.8 सहायक ग्रन्थ
5.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों, पूर्व के चार अध्यायों में आपने लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित पूर्वकृदन्त के सूत्रों और उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया होगा। पञ्चम अध्याय में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित उत्तरकृदन्त के सूत्रों और उदाहरणों को सिद्ध किया जायेगा। आप इसे सावधानी पूर्वक अध्ययन कीजिये।

5.2 उद्देश्य

इस अध्याय के पश्चात् आप जानने में सक्षम होंगे-

- उत्तरकृदन्त में वर्णित सूत्रों का अर्थ।
- इससे सम्बन्धित उदाहरणों को सिद्ध करने में भी सक्षम होंगे।
- सूत्रों की व्याख्या करने में भी सक्षम होंगे।

5.3 वर्णित प्रत्यय

चतुर्थ इकाई में आपने पूर्वकृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत 852 से 859 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि का अध्ययन किया। इसके अन्तर्गत आप सभी ने पूर्वकृदन्त प्रकरण के तृन्, षाकन्, उ, क्विप्, ष्ट्रन्, इत्र तथा उण् आदि प्रत्ययों का अध्ययन किया। पञ्चम इकाई में हम उत्तर कृदन्त प्रकरण के 852 से 859 सूत्रों एवं उदाहरणों को सिद्ध करने का प्रयास करेंगे।। इसके अन्तर्गत तुमुन्, ण्वुल्, घञ्, अच् तथा अप् प्रत्यय का वर्णन किया जाएगा।

5.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 852 से 859 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- **तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियाऽर्थायाम्।**

एक क्रिया के लिए दूसरी क्रिया समीप में होने पर भविष्यत् काल में धातु से परे तुमुन् और ण्वुल् प्रत्यय होते हैं।

- **द्रष्टुम् -**

दृश् धातु से 'तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियाऽर्थायाम्' सूत्र से तुमुन् प्रत्यय हुआ।

दृश्+तुमुन् 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से उ और 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर तुम् शेष रहा।

दृश्+तुम् 'सृजिदृशोर्झल्यमकिति' सूत्र से धातु को अम् आगम

दृ+अम्+श्+तुम् अम् के म् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से म् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप

दृ+अ+श्+तुम् 'इकोयणचि' सूत्र से ऋ को र्

द्+र्+अ+श्+तुम् -द्रश्+तुम् 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजश्छशां षः' सूत्र से श् को ष्

द्रष्+तुम् 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से त् को ट्

द्रष्टुम् 'कृन्मेजन्तः' सूत्र से अव्ययसंज्ञा करके 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

द्रष्टुम्+सु 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर

द्रष्टुम् सिद्ध हुआ।

- **दर्शको -**

दृश् धातु से 'तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्' सूत्र से ण्वुल् प्रत्यय हुआ।

दृश्+ण्वुल् ण् की 'चुटू' से और ल् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर वु शेष रहा।

दृश्+वु 'युवोरनाकौ' सूत्र से वु को अक आदेश

दृश्+अक 'पुगन्तलघूपदस्य च' सूत्र से ऋ को अर् गुण

द्+अर्+श्+अक = दर्शक 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

दर्शक+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

दर्शक+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

दर्शक+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

दर्शक+र् 'हशि च' सूत्र से र् को उ

दर्शक+उ 'आद्गुणः' सूत्र से गुण होकर

दर्शको सिद्ध हुआ।

- **कालसमयवेलासु तुमुन्**

  काल, समय और वेला इन शब्द के उपपद रहते धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है।

- **भोक्तुम् -**

भुज् धातु से 'कालसमयवेलासु तुमुन्' सूत्र से तुमुन् प्रत्यय हुआ।

भुज्+तुमुन् 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से उ और 'हलन्त्यम्' सूत्र से न् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर तुम् शेष रहा।

भुज्+तुम् 'पुगन्तलघूपदस्य च' सूत्र से उ को ओ गुण

भोज्+तुम् 'चोः कुः' सूत्र से ज् को ग्

भोग्+तुम् 'खरि च' सूत्र से ग् को क्

भोक्तुम् 'कृन्मेजन्तः' सूत्र से अव्ययसंज्ञा करके 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

भोक्तुम्+सु 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर

भोक्तुम् सिद्ध हुआ।

- **भावे**

  सिद्धावस्था रूप में प्राप्त धातु का अर्थ वाच्य होने पर धातु से घञ् प्रत्यय होता है।

- **पाकः -**

पच् धातु से 'भावे' सूत्र से घञ् प्रत्यय हुआ।

पच्+घञ् घ् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से और ञ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अ शेष रहा।

पच्+अ 'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा वृद्धि होकर

पाच्+अ 'चजोः कु घिण्ण्यतोः' सूत्र से च् को क्

पाच्+अ = पाक 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

पाक+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

पाक+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

पाक+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

पाक+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

पाकः सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. 'तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियाऽर्थायाम्' सूत्र का कार्य?
2. ' द्रष्+तुम्' में त् को ट् किस सूत्र से हुआ?
3. काल तथा समय आदि शब्दों के उपपद रहते किस सूत्र से कौन सा प्रत्यय हुआ?
4. 'पाकः' में कौन सा प्रत्यय हुआ?
5. 'भावे' सूत्र कौन सा प्रत्यय करता है?

- **अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्**

  कर्ता से भिन्न कारक अर्थ में संज्ञा में धातु से घञ् प्रत्यय हो।

- **घिञि च भावकरणयोः**

  भाव और करण अर्थ में विहित घञ् प्रत्यय के परे होने पर रञ्ज् धातु के नकार का लोप होता है।

- **रागः -**

रञ्ज् धातु से 'अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्' सूत्र से घञ् प्रत्यय हुआ।

रञ्ज्+घञ्	घ् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से और ञ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अ शेष रहा।
रञ्ज्+अ	'घिञि च भावकरणयोः' सूत्र से ञ् का लोप
रज्+अ	'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा को वृद्धि
राज्+अ	'चजोः कु घिण्ण्यतोः' सूत्र से ज् को ग्
राग्+अ =राग	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
राग+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
राग+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
राग+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
राग+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
रागः	सिद्ध हुआ।

- **रङ्गः -**

रञ्ज् धातु से 'अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्' सूत्र से घञ् प्रत्यय हुआ।

रञ्ज्+घञ्	घ् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से और ञ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अ शेष रहा।

रञ्ज्+अ 'चजोः कु घिण्यतोः' सूत्र से ज् को ग्

रञ्ग्+अ 'चोः कुः' सूत्र से ञ् को ङ्

रङ्ग्+अ = रङ्ग 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

रङ्ग +सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

रङ्ग+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

रङ्ग+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

रङ्ग+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

रङ्गः सिद्ध हुआ।

- **निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः**

निवास, चिति (चयन), शरीर और उपसमाधान अर्थ में चिञ् धातु से घञ् प्रत्यय तथा आदि वर्ण को ककार आदेश होता है।

- **निकायः -**

नि उपसर्ग पूर्वक चि धातु से 'निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः' सूत्र से घञ् प्रत्यय और धातु के आदि वर्ण को ककार आदेश हुआ।

नि+चि+घञ् घ् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से और ञ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अ शेष रहा।

नि+कि+अ 'अचोञ्णिति' सूत्र से धातु की इ को ऐ वृद्धि

नि+कै+अ 'एचोऽयवायावः' सूत्र से ऐ को आय् आदेश

नि+क्+आय्+अ = निकाय 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

निकाय+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

निकाय+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

निकाय+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

निकाय+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

निकायः सिद्ध हुआ।

- **एरच्**

इवर्णान्त धातु से भाव अर्थ में अच् प्रत्यय होता है।

- **चयः, जयः -**

चि, जि धातु से 'एरच्' सूत्र से अच् प्रत्यय हुआ।

चि, जि+अच्	च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
चि, जि+अ	'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से इ को ए गुण
चे+अ, जे+अ	'एचोऽयवायावः' सूत्र से ए को अय् आदेश
चय, जय	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
चय, जय+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
चय, जय+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
चय, जय+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
चय, जय+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
चयः, जयः	सिद्ध हुआ।

- **ऋदोरप्**
  दीर्घ ट्टवर्णान्त और उवर्णान्त धातुओं से भाव अर्थ में अप् प्रत्यय होता है।

- **करः, गरः -**

कृ, गृ धातु से 'ऋदोरप्' सूत्र से अप् प्रत्यय हुआ।

कृ, गृ+अप्	प् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कृ, गृ+अ	'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण
क्+अर्+अ, ग्+अर्+अ =	कर, गर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
कर, गर+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कर, गर+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
कर, गर+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कर, गर+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
करः, गरः	सिद्ध हुआ।

- **यवः, स्तवः -**

यु, स्तु धातु से 'ॠदोरप्' सूत्र से अप् प्रत्यय हुआ।

यु, स्तु+अप् प् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

यु, स्तु+अ 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से उ को ओ गुण

यो, स्तो+अ एचोऽयवायावः' सूत्र से ओ को अव् आदेश

य्+अव्+अ, स्त्+अव्+अ = यव, स्तव

यव, स्तव 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

यव, स्तव+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

यव, स्तव+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

यव, स्तव+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

यव, स्तव+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

यवः, स्तवः सिद्ध हुआ।

- **लवः, पवः -**

लू, पू धातु से 'ॠदोरप्' सूत्र से अप् प्रत्यय हुआ।

लू, पू+अप् प् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

लू, पू+अ 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से उ को ओ गुण

लो, पो+अ एचोऽयवायावः' सूत्र से ओ को अव् आदेश

ल्+अव्+अ, प्+अव्+अ -लव, पव

लव, पव 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

लव, पव+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

लव, पव+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

लव, पव+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

लव, पव+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

लवः, पवः सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् सूत्र का कार्य ?
2. रञ्ज् धातु के नकार का लोप किस सूत्र से हुआ?
3. एरच् सूत्र क्या करता है?
4. निकायः रूप की सिद्धि में 'नि+कि+अ' कि की इ को वृद्धि किस सूत्र से हुई?
5. ऋदोरप सूत्र का कार्य बताएं?

5.5 सारांश

इस अध्याय में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित उत्तरकृदन्त प्रकरण के 852 से 859 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत उत्तरकृदन्त प्रकरण के तुमुन्, ण्वुल्, घञ्, अच् तथा अप् आदि प्रत्ययों का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय विद्यार्थियों को उत्तरकृदन्त की सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझाने में सहायक सिद्ध होगा।

5.6 कठिन शब्दावली

- **प्रातिपदिक**
  संस्कृत व्याकरण के अनुसार वह अर्थवान् शब्द जो धातु न हो और न उसकी सिद्धि विभक्ति लगने से हुई हो।
- **अव्यय**
  वह शब्द जिनके रूप में वचन, लिंग आदि के कारण कोई विकार अथवा परिवर्तन नहीं होता।
- **आर्धधातुक**
  तिङ् एवं शित् से भिन्न प्रत्यय आर्धधातुक कहलाते हैं।

5.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. तुमुन् और ण्वुल् प्रत्यय।
2. ष्टुना ष्टुः।
3. कालसमयवेलासु तुमुन् से तुमुन्।
4. घञ्।
5. घञ्।

अभ्यास प्रश्न 2

1. घञ् प्रत्यय।
2. घञि च भावकरणयोः।
3. अच् प्रत्यय।
4. अचोञ्णिति।

5. दीर्घ ॠ एवं उ वर्ण वाली धातुओं से भाव अर्थ में अप् प्रत्यय होता है।

5.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

5.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-

काल-समय-वेलासु तुमुन्। भावे । अ कर्तरि च कारके संज्ञायाम्।

2. निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-

द्रष्टुम्, पाकः, रागः, निकायः, चयः, गरः, यवः, लवः तथा पवः।

षष्ठ इकाई

उत्तरकृदन्त-2

संरचना

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 वर्णित प्रत्यय

6.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 860 से 866 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

6.5 सारांश

6.6 कठिन शब्दावली

6.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

6.8 सहायक ग्रन्थ

6.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों, पञ्चम इकाई में आपने लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित उत्तरकृदन्त प्रकरण के 852 से 859 सूत्रों और उनके उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया होगा। इसके अन्तर्गत तुमुन्, ण्वुल्, घञ्, अच् तथा अप् प्रत्यय का वर्णन किया गया। षष्ठ इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित उत्तरकृदन्त के 860 से 866 सूत्रों और उनके उदाहरणों का अध्ययन करेंगे। आप इसे सावधानी पूर्वक अध्ययन कीजिये।

6.2 उद्देश्य

इस अध्याय के पश्चात् आप जानने में सक्षम होंगे-

- उत्तरकृदन्त में वर्णित सूत्रों का अर्थ।
- इससे सम्बन्धित उदाहरणों को सिद्ध करने में भी सक्षम होंगे।
- सूत्रों की व्याख्या करने में भी सक्षम होंगे।

6.3 वर्णित प्रत्यय

पञ्चम इकाई में आपने उत्तरकृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत 852 से 859 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि का अध्ययन किया। इसके अन्तर्गत आप सभी ने उत्तरकृदन्त प्रकरण के तुमुन्, ण्वुल्, घञ्, अच् तथा अप् आदि प्रत्ययों का अध्ययन किया। षष्ठ इकाई में हम उत्तर कृदन्त प्रकरण के 860 से 866 सूत्रों, वार्तिकों एवं उनके उदाहरणों को सिद्ध करने का प्रयास करेंगे।। इसके अन्तर्गत क, क्त्रि, मप्, अथुच्, नङ्, नन्, कि तथा क्तिन् प्रत्यय का वर्णन किया जाएगा।

6.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 860 से 866 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- **वार्तिक - घञर्थे क-विधानम्**

  घञ् प्रत्यय के अर्थ में क प्रत्यय हो।

- **प्रस्थः -**

प्र उपसर्ग पूर्वक स्था धातु से 'घञर्थे क-विधानम्' वार्तिक से क प्रत्यय हुआ।

प्र+स्था+क्	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
प्र+स्था+अ	'आतो लोप इटि च' सूत्र से धातु के आ का लोप होकर
प्र+स्थ्+अ -प्रस्थ	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
प्रस्थ+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
प्रस्थ+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
प्रस्थ+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
प्रस्थ+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
प्रस्थः	सिद्ध हुआ।

- **विघ्नः -**

वि उपसर्ग पूर्वक हन् धातु से 'घञर्थे कविधानम्' वार्तिक से क प्रत्यय हुआ।

वि+हन्+क	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
वि+हन्+अ	'गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि' सूत्र से धातु की उपधा अकार का लोप
वि+ह्न्+अ	'हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु' सूत्र से ह् को घ्
विघ्न	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
विघ्न+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
विघ्न+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
विघ्न+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
विघ्न+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

विघ्नः सिद्ध हुआ।

- **ड्वितः क्त्रिः**

  जिस धातु का डु इत् हो, उससे क्त्रि प्रत्यय होता है।

- **क्त्रेर्मम्नित्यम्**

  क्त्रिप्रत्ययान्त शब्द से मप् प्रत्यय होता है निवृत्त अर्थ में।

- **पक्त्रिमम्-**

पच् धातु से 'ड्वितः क्त्रि' सूत्र से क्त्रि प्रत्यय हुआ।

पच्+क्त्रि	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
पच्+त्रि	'चोः कुः' सूत्र से च् को क्
पक्+त्रि -पक्त्रि	'क्त्रेर्मम्नित्यम्' सूत्र से मप् प्रत्यय
पक्त्रि+मप्	प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
पक्त्रि+म-पक्त्रिम	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
पक्त्रिम+सु	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश
पक्त्रिम+अम्	'अमि पूर्वः' सूत्र से पूर्वरूप होकर
पक्त्रिमम्	सिद्ध हुआ।

- **उप्त्रिमम् -**

वप् धातु से 'ड्वितः क्त्रि' सूत्र से क्त्रि प्रत्यय हुआ।

वप्+क्त्रि	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
वप्+त्रि	'वचिस्वपियजादीनां किति' सूत्र से व को सम्प्रसारण उ
उप्त्रि	'क्त्रेर्मम्नित्यम्' सूत्र से मप् प्रत्यय
उप्त्रि+मप्	प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
उप्त्रिम	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
उप्त्रिम+सु	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश
उप्त्रिम+अम्	'अमि पूर्वः' सूत्र से पूर्वरूप होकर
उप्त्रिमम्	सिद्ध हुआ।

- **ट्वितोऽथुच**

  जिस धातु में टु की इत्संज्ञा हुई हो ऐसी टिवत् धातु से भाव अर्थ में अथुच् प्रत्यय होता है।

- **वेपथुः-**

वेप् धातु से 'ट्वितोऽथुच्' सूत्र से अथुच् प्रत्यय हुआ।

वेप्+अथुच्	च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
वेप्+अथु -वेपथु	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
वेपथु+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
वेपथु+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
वेपथु+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
वेपथु+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
वेपथुः	सिद्ध हुआ।

- **यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्**

  भाव आदि अर्थ में यज्, याच्, यत्, विच्छ्, प्रच्छ् और रक्ष् धातुओं से नङ् प्रत्यय होता है।

- **यज्ञः -**

यज् धातु से 'यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्' सूत्र से नघ् प्रत्यय हुआ।

यज्+नङ्	घ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
यज्+न	'स्तो श्चुना श्चु' सूत्र से न् को ञ्
यज्+ञ-यज्ञ	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
यज्ञ+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
यज्ञ+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
यज्ञ+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
यज्ञ+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
यज्ञः	सिद्ध हुआ।

- **याच्ञा-**

याच् धातु से 'यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्' सूत्र से नङ् प्रत्यय हुआ।

याच्+नङ्	ङ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

याच्+न	'स्तो श्चुना श्चु' सूत्र से न् को ञ्
याच्+ञ -याच्ञ	'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से टाप् प्रत्यय
याच्ञ+टाप्	'चुटू' सूत्र से ट्, 'हलन्त्यम्' सूत्र से प् की इत्संज्ञा और 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आ शेष रहा।
याच्ञ+आ	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर
याच्ञा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
याच्ञा+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
याच्ञा+स्	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप
याच्ञा	सिद्ध हुआ।

- **यत्नः-**

यत् धातु से 'यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्' सूत्र से नङ् प्रत्यय हुआ।

यत्+नघ्	घ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
यत्+न -यत्न	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
यत्न+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
यत्न+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
यत्न+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
यत्न+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
यत्नः	सिद्ध हुआ।

- **प्रश्नः, विश्नः-**

प्रच्छ्, विच्छ् धातु से 'यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नघ्' सूत्र से नङ् प्रत्यय हुआ।

प्रच्छ्, विच्छ्+नघ्	घ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
प्रच्छ्, विच्छ्+न	'च्छ्वोः शूडनुनासिके च' सूत्र से च्छ् को श् आदेश
प्रश्न, विश्न	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

प्रश्न, विश्न+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
प्रश्न, विश्न+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
प्रश्न, विश्न+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
प्रश्न, विश्न+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
प्रश्नः, विश्नः	सिद्ध हुआ।

- **रक्ष्णः-**

रक्ष् धातु से 'यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्' सूत्र से नङ् प्रत्यय हुआ।

रक्ष्+नङ्	घ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
रक्ष्+न - रक्ष्न	'रषाभ्यां नो णः' सूत्र से न् को ण्
रक्ष्ण	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
रक्ष्ण+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
रक्ष्ण+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
रक्ष्ण+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
रक्ष्ण+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
रक्ष्णः	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. घञर्थे कविधानम् वार्तिक क्या कार्य करता है?
2. विघ्नः में कौन सा प्रत्यय हुआ?
3. पक्त्रिमम् में किस सूत्र से कौन सा प्रत्यय हुआ?
4. वेपथुः में कौन सा प्रत्यय हुआ?
5. प्रश्नः में नङ् प्रत्यय विधायक सूत्र है?

- **स्वपो नन्**

भाव अर्थ मेंस्वप् धातु से नन् प्रत्यय होता है।

- **स्वप्नः-**

स्वप् धातु से 'स्वपो नन्' सूत्र से नन् प्रत्यय हुआ।

स्वप्+नन्	न् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
स्वप्न	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
स्वप्न+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
स्वप्न+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
स्वप्न+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
स्वप्न+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
स्वप्नः	सिद्ध हुआ।

- **उपसर्गे घोः किः**

  उपसर्ग पूर्वक घुसंज्ञक धातुओं से कि प्रत्यय होता है।

- **प्रधिः, उपधिः -**

प्र और उप उपसर्ग पूर्वक धा धातु से 'उपसर्गे घोः किः' सूत्र से कि प्रत्यय हुआ।

प्र, उप+धा+कि	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
प्र, उप+धा+इ	'आतो लोप इटि च' सूत्र से धातु के आ का लोप
प्र, उप+ध्+इ -प्रधि, उपधि	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
प्रधि, उपधि+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
प्रधि, उपधि+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
प्रधि, उपधि+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
प्रधि, उपधि+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
प्रधिः, उपधिः	सिद्ध हुआ।

- **स्त्रियां क्तिन्**

  स्त्रीलिङ्ग भाव में क्तिन् प्रत्यय होता है।

- **कृतिः, स्तुतिः-**

कृ और स्तु धातु से 'स्त्रियां क्तिन्' सूत्र से क्तिन् प्रत्यय हुआ।

कृ, स्तु+क्तिन्	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से, न् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः से उनका लोप होकर ति शेष रहा।
कृति, स्तुति	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
कृति, स्तुति+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कृति, स्तुति+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
कृति, स्तुति+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कृति, स्तुति+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
कृतिः, स्तुतिः	सिद्ध हुआ।

- **वार्तिक - ॠल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावद्वाच्यः**

  ॠकारान्त और लू आदि धातुओं से पर क्तिन् निष्ठा के समान हो।

- **कीर्णिः-**

कॄ धातु से 'स्त्रियां क्तिन्' सूत्र से क्तिन् प्रत्यय हुआ।

कॄ+क्तिन्	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से, न् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर ति शेष रहा।
कॄ+ति	'ॠत इद्धातोः' सूत्र से 'उरण् रपरः' की सहायता से ॠ को इर् गुण
क्+इर्+ति -किर्+ति	'हलि च' सूत्र से धातु की उपधा को दीर्घ
कीर्+ति	'ॠल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावद्वाच्यः' वार्तिक से निष्ठावद्भाव करके 'ल्वादिभ्यः' सूत्र से त् को न् और 'रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः' सूत्र से त् को न्
कीर्+नि	'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र या 'रषाभ्यां नो णः समानपदे' सूत्र से न् को ण्
कीर्+णि -कीर्णि	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
कीर्णि+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कीर्णि+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

कीर्णि+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

कीर्णि+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

कीर्णिः सिद्ध हुआ।

- **लूनिः, धूनिः, पूनिः -**

लू, धू, पू धातु से 'स्त्रियां क्तिन्' सूत्र से क्तिन् प्रत्यय हुआ।

लू, धू, पू+क्तिन् क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से, न् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर ति शेष रहा।

लू, धू, पू+ति 'ल्वादिभ्यः' सूत्र से त् को न्

लूनि, धूनि, पूनि 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

लूनि, धूनि, पूनि+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर होकर

लूनि, धूनि, पूनि+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

लूनि, धूनि, पूनि+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप

लूनि, धूनि, पूनि+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

लूनिः, धूनिः, पूनिः सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. स्वप्नः में कौन सा प्रत्यय हुआ?
2. प्रधिः में कि प्रत्यय विधायक सूत्र है?
3. कृतिः में क्तिन् प्रत्यय किस सूत्र से होता है?
4. उपाधि+स् में स को रु करने वाला सूत्र है?
5. लूनिः रूप में त् को न् करने वाला सूत्र है?

6.5 सारांश

इस इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित उत्तरकृदन्त प्रकरण के 860 से 866 सूत्रों एवं वार्तिकों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत उत्तरकृदन्त प्रकरण के क, क्त्रि, मप्, अथुच्, नङ्, नन्, कि

तथा क्तिन् प्रत्यय का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत इकाई में विद्यार्थियों को उत्तरकृदन्त की सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझाने में सहायक सिद्ध होगा।

6.6 कठिन शब्दावली

- **ड्वित**
  जिस धातु से डु इत् हो, उसे ड्वित कहते हैं।
- **ट्वित**
  जिस धातु में टु इत् हो, उसे ट्वित कहते हैं।

6.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. क प्रत्यय।
2. क प्रत्यय।
3. ड्वितः।
4. अथुच्।
5. यज-याज-यत-विच्छ-प्रच्छ-रक्षो नङ्।

अभ्यास प्रश्न 2

1. नङ् प्रत्यय।
2. उपसर्गे घोः किः।
3. स्त्रियां क्तिन्।
4. ससजुषो रुः।
5. ल्वादिभ्यः।

6.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

6.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-

घञर्थे कविधानम्। क्त्रेर्मम् नित्यम्। ट्वितोऽथुच्। स्वपो नृन्। स्त्रियां क्तिन्।

2. निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-

प्रस्थः, विघ्नः, पक्त्रिमम्, वेपथुः, यज्ञः, यत्नः, प्रश्नः, उपाधिः, स्तुतिः तथा पूनिः।

सप्तम इकाई
उत्तरकृदन्त- 3

संरचना

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 वर्णित प्रत्यय

7.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 867 से 879 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

7.5 सारांश

7.6 कठिन शब्दावली

7.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

7.8 सहायक ग्रन्थ

7.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों, षष्ठ इकाई में आपने लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित उत्तरकृदन्त प्रकरण के 860 से 866 सूत्रों और उनके उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया होगा। इसके अन्तर्गत क, क्त्रि, मप्, अथुच्, नङ्, नन्, कि तथा क्तिन् प्रत्यय का वर्णन किया गया। सप्तम इकाई में आप सभी लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित उत्तरकृदन्त के 867 से 879 सूत्रों और उनके उदाहरणों का अध्ययन करेंगे। आप इसे सावधानी पूर्वक अध्ययन कीजिये।

7.2 उद्देश्य

इस अध्याय के पश्चात् आप जानने में सक्षम होंगे-

- उत्तरकृदन्त में वर्णित सूत्रों का अर्थ।
- इससे सम्बन्धित उदाहरणों को सिद्ध करने में भी सक्षम होंगे।
- सूत्रों की व्याख्या करने में भी सक्षम होंगे।

7.3 वर्णित प्रत्यय

षष्ट इकाई में आपने उत्तरकृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत 860 से 866 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि का अध्ययन किया। इसके अन्तर्गत आप सभी ने उत्तरकृदन्त प्रकरण के क, क्त्रि, मप्, अथुच्, नङ्, नन्, कि तथा क्तिन् प्रत्यय का अध्ययन किया। सप्तम इकाई में हम उत्तर कृदन्त प्रकरण के 867 से 879 सूत्रों, वार्तिकों एवं उनके उदाहरणों को सिद्ध करने का प्रयास करेंगे।। इसके अन्तर्गत क्विप्, क्तिन्, श, अ, क्त, ल्युट्, घ, घञ् तथा खल् आदि प्रत्यय का वर्णन किया जाएगा।

7.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 867 से 879 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- **वार्तिक - सम्पदादिभ्यः क्विप्। क्तिन्नपीष्यते।**
  सम् आदि उपसर्ग पूर्वक पद् धातु से भाव अर्थ में क्विप् प्रत्यय होता है तथा क्तिन् भी होता है।

- **सम्पत्, विपत्, आपत्-**

सम्, वि, आ उपसर्ग पूर्वक पद् धातु से 'सम्पदादिभ्यः क्विप्' वार्तिक से क्विप् प्रत्यय हुआ।

सम्, वि, आ+पद्+क्विप् — क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर

सम्, वि,आ+पद्+व — 'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप

सम्पद्, विपद्, आपद् — 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

सम्पद्, विपद्, आपद्+सु — 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

सम्पद्, विपद्, आपद्+स् — 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप

सम्पद्, विपद्, आपद् — 'वाऽवसाने' सूत्र से द् को त्

सम्पत्, विपत्, आपत् — सिद्ध हुआ।

- **सम्पत्तिः, विपत्तिः, आपत्तिः-**

सम्, वि, आ उपसर्ग पूर्वक पद् धातु से 'क्तिन्नपीष्यते' वार्तिक से क्तिन् प्रत्यय हुआ।

सम्, वि, आ+पद्+क्तिन् — क् की 'लशक्वतद्धिते' और न् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर ति शेष रहा।

सम्पद्, विपद्, आपद्+ति — 'खरि च' सूत्र से द् को त्

सम्पत्ति, विपत्ति, आपत्ति — 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

सम्पत्ति, विपत्ति, आपत्ति+सु — 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

सम्पत्ति, विपत्ति, आपत्ति+स् — 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

सम्पत्ति, विपत्ति, आपत्ति+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

सम्पत्ति, विपत्ति, आपत्ति+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

सम्पत्तिः, विपत्तिः, आपत्तिः सिद्ध हुआ।

- **ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च**

ज्वर्, त्वर्, स्रिव्, अव् तथा मव् धातुओं की उपधा और वकार दोनों के स्थान पर ऊठ् आदेश होता है यदि अनुनासिक, क्वि अथवा झलादि कित् के परे हो तो।

- **जूः, तूः-**

ज्वर्, त्वर् धातु से 'सम्पदादिभ्यः क्विप्' वार्तिक से क्विप् प्रत्यय हुआ।

ज्वर्, त्वर्+क्विप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर
ज्वर्, त्वर्+व	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप
ज्वर्, त्वर्	'ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च' सूत्र से धातु की उपधा और व् को ऊठ् आदेश
ज्+ऊठ्+र्, त्+ऊठ्+र्	ठ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
जूर्, तूर्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
जूर्, तूर्+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
जूर्, तूर्$स्	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप
जूर्, तूर्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
जूः, तूः	सिद्ध हुआ।

- **स्रूः, ऊः, मूः-**

स्रिव्, अव्, मव् धातु से 'सम्पदादिभ्यः क्विप्' वार्तिक से क्विप् प्रत्यय हुआ।

स्रिव्, अव्, मव्+क्विप्	क् की 'लशक्वतद्धिते', इ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर
स्रिव्, अव्, मव्+व	'वेरपृक्तस्य' सूत्र से व का लोप
स्रिव्, अव्, मव्	'ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च' सूत्र से धातु की उपधा और व् को ऊठ् आदेश
स्र्+ऊठ्, ऊठ्, म्+ऊठ्	ठ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

ड्डू, ऊ, मू	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
ड्डू, ऊ, मू+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
ड्डू, ऊ, मू+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
ड्डू, ऊ, मू+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
ड्डू, ऊ, मू+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
ड्डूः, ऊः, मूः	सिद्ध हुआ।

- **इच्छा**

  स्त्रीत्वविशिष्ट भाव अर्थ में इच्छा शब्द का निपातन होता है।

- **इच्छा-**

इष् धातु से 'इच्छा' सूत्र से श प्रत्यय हुआ।

इष्+श	श् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
इष्+अ	'इषुगमियमां छः' सूत्र से ष् को छ्
इछ्+अ	'छे च' सूत्र से तुक आगम
इ+तुक्+छ्+अ	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से, उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर त् शेष रहा।
इत्+छ्+अ	स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्र से त् को च्
इच्छ	'अजाद्यष्टाप्' सूत्र से टाप् प्रत्यय
इच्छ+टाप्	प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र और ट् की 'चुटू' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आ शेष रहा
इच्छ+आ	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर
इच्छा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
इच्छा+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
इच्छा+स्	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
इच्छा	सिद्ध हुआ।

- **अ प्रत्ययात्**

  स्त्रीत्वविशिष्ट भाव अर्थ में प्रत्ययान्त धातुओं से अ प्रत्यय होता है।

- **चिकीर्षा-**

चिकीर्ष धातु से 'अ प्रत्ययात्' सूत्र से अ प्रत्यय हुआ।

चिकीर्ष+अ	'अतो लोपः' सूत्र से ष् के अ का लोप
चिकीर्ष्+अ -चिकीर्ष	'अजाद्यष्टाप्' सूत्र से टाप् प्रत्यय
चिकीर्ष+टाप्	प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र और ट् की 'चुटू' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आ शेष रहा
चिकीर्ष+आ	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर
चिकीर्षा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
चिकीर्षा+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
चिकीर्षा+स्	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
चिकीर्षा	सिद्ध हुआ।

- **पुत्रकाम्या-**

पुत्रकाम्य प्रत्ययान्त धातु से 'अ प्रत्ययात्' सूत्र से अ प्रत्यय हुआ।

पुत्रकाम्य+अ	'अतो लोपः' सूत्र से ष् के अ का लोप
पुत्रकाम्य्+अ -पुत्रकाम्य	'अजाद्यष्टाप्' सूत्र से टाप् प्रत्यय
पुत्रकाम्य+टाप्	प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र और ट् की 'चुटू' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आ शेष रहा
पुत्रकाम्य+आ	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर
पुत्रकाम्या	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
पुत्रकाम्या+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
पुत्रकाम्या+स्	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
पुत्रकाम्या	सिद्ध हुआ।

- **गुरोश्च हलः**

  गुरुमान् हलन्त धातु से स्त्रीलिङ्ग में अ प्रत्यय होता है।

- **ईहा -**

ईह् धातु से 'गुरोश्च हलः' सूत्र से अ प्रत्यय हुआ।

ईह्+अ - ईह	'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से टाप् प्रत्यय
ईह+टाप्	प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र और ट् की 'चुटू' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आ शेष रहा
ईह+आ	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर
ईहा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
ईहा+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
ईहा+स्	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप होकर
ईहा	सिद्ध हुआ।

- **ण्यासश्रन्थो युच्**

स्त्रीत्वविशिष्ट भाव और अकर्ता कारक की विवक्षा में ण्यन्त धातु, आस् और श्रन्थ् धातुओं से युच् प्रत्यय होता है।

- **कारणा, हारणा-**

कृ, हृ धातु से णिच् प्रत्यय करके कारि, हारि बने। कारि, हारि प्रत्यययान्त धातु से 'ण्यासश्रन्थो युच्' सूत्र से युच् प्रत्यय हुआ।

कारि, हारि+युच्	च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर यु शेष रहा।
कारि, हारि+यु	'युवोरनाकौ' सूत्र से यु को अन आदेश
कारि+अन, हारि+अन	'णेरनिटि' सूत्र से धातु की इ का लोप
कार्+अन, हार्+अन -कारन, हारन	'अजाद्यष्टाप्' सूत्र से टाप् प्रत्यय
कारन, हारन+टाप्	प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र और ट् की 'चुटू' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर आ शेष रहा
कारन, हारन+आ	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर
कारना, हारना	'रषाभ्यां नो णः' सूत्र से न् को ण्

कारणा, हारणा	‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर
कारणा, हारणा+सु	‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर
कारणा, हारणा+स्	‘हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्’ सूत्र से स् का लोप होकर
कारणा, हारणा	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. विपत्ति एवं आपत्ति रूपों में कौन सा प्रत्यय हुआ?
2. स्रूः रूप की सिद्धि में स्रिव् धातु के व का लोप किस सूत्र से हुआ?
3. इच्छा में कौन सा प्रत्यय हुआ?
4. गुरोश्च हलः सूत्र क्या करता है?
5. कारणा रूप में कौन सी धातु है?

- **नपुंसके भावे क्तः**

  नपुंसक भाव में धातु से क्त प्रत्यय हो।

- **ल्युट् च**

  नपुंसकत्व भाव में धातु से ल्युट् प्रत्यय होता है।

- **हसितम्-**

हस् धातु से ‘नपुंसके भावे क्तः’ सूत्र से क्त प्रत्यय हुआ।

हस्+क्त	क् की ‘लशक्वतद्धिते’ सूत्र से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर
हस्+त	‘आर्धधातुकस्येड्वलादेः’ सूत्र से इट् आगम
हस्+इट्+त	ट् की ‘हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर
हसित	‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर
हसित+सु	‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर
हसित+स्	‘अतोऽम्’ सूत्र से सु को अम् आदेश
हसित+अम्	‘अमिपूर्वः’ से पूर्वरूप होकर
हसितम्	सिद्ध हुआ।

- **हसनम्-**

हस् धातु से ‘ल्युट् च’ सूत्र से ल्युट् प्रत्यय हुआ।

हस्+ल्युट्   ल् की ‘लशक्वतद्धिते’ सूत्र से और ट् की ‘हलन्त्यम’ सूत्र से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उनका लोप होकर यु शेष रहा।

हस्+यु   ‘युवोरनाकौ’ सूत्र से यु को अन आदेश

हस्+अन -हसन ‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर

हसन+सु   ‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर

हसन+स्   ‘अतोऽम्’ सूत्र से सु को अम् आदेश

हसन+अम्   ‘अमिपूर्वः’ से पूर्वरूप होकर

हसनम्   सिद्ध हुआ।

- **पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण**

  पुलिंग संज्ञा में प्रायः घ प्रत्यय होता है।

- **छादेर्घेऽद्व्युपसर्गस्य**

  एक से अधिक उपसर्ग रहित छकारादि धातु को ”स्व हो घ प्रत्यय परे रहते।

- **दन्तच्छदः-**

दन्त उपपद पूर्वक छद् धातु से णिच् प्रत्यय हुआ।

दन्त+छद्+णिच्   ण् की ‘चुटू’ सूत्र से तथा च की ‘हलन्त्यम्’ सूत्र से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर इ शेष रहा।

दन्त+छद्+इ   ‘अत उपधायाः’ सूत्र से उपधावृद्धि होकर

दन्त+छादि   ‘पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण’ सूत्र से घ प्रत्यय हुआ।

दन्त+छादि+घ   ‘लशक्वतद्धिते’ सूत्र से घ् की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

दन्त+छादि+अ   ‘णेरनिटि’ सूत्र से इ लोप

दन्त+छाद्+अ   ‘छे च’ सूत्र से तुक् आगम

दन्त+तुक्+छाद्+अ   ‘उपदेशेऽजनुनासिक इत्’ सूत्र से उ की और ‘हलन्त्यम’ सूत्र से क् की इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोप’ से उसका लोप होकर त् शेष रहा।

दन्त+त्+छाद्+अ   ‘स्तोश्चुना श्चु’ सूत्र से त् को च्

दन्त+च्+छाद्+अ   ‘छादेर्घेऽद्व्युपसर्गस्य’ सूत्र से उपधा को ह्रस्व होकर

दन्तच्छद   ‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर

दन्तच्छद+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
दन्तच्छद+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
दन्तच्छद+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
दन्तच्छद+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
दन्तच्छदः	सिद्ध हुआ।

- **आकरः-**

आ उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से 'पुंसि संज्ञायां घः' सूत्र से घ प्रत्यय हुआ।

आ+कृ+घ	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से घ् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
आ+कृ+अ	'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण
आ+क्+अर्+अ -आकर	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
आकर+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
आकर+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
आकर+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
आकर+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
आकरः	सिद्ध हुआ।

- **अवे तृस्त्रोर्घञ्**

  अव उपसर्ग पूर्वक तृ और स्तृ धातुओं से घञ् प्रत्यय होता है।

- **अवतारः -**

अव उपपद पूर्वक तृ धातु से 'अवे तृस्त्रोर्घञ्' सूत्र से घञ् प्रत्यय हुआ।

अव+तृ+ घञ्	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से घ् की और ञ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
अव+तृ+अ	'अचोञ्णिति' सूत्र से ऋ को आर् वृद्धि 'उरण् रपरः' की सहायता से
अव+त्+आर्+अ	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

अवतार+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
अवतार+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
अवतार+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
अवतार+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
अवतारः	सिद्ध हुआ।

- **अवस्तारः-**

अव उपपद पूर्वक स्तृ धातु से 'अवे तृस्त्रोर्घञ्' सूत्र से घञ् प्रत्यय हुआ।

अव+स्तृ+ घञ्	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से घ् की और ञ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
अव+स्तृ+अ	'अचोञ्णिति' सूत्र से ऋ को आर् वृद्धि 'उरण् रपरः' की सहायता से
अव+स्त्+आर्+अ	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
अवस्तार+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
अवस्तार+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
अवस्तार+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
अवस्तार+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
अवस्तारः	सिद्ध हुआ।

- **हलश्च**

  हलन्त धातु से घञ् प्रत्यय होता है।

- **रामः-**

रम् धातु से 'हलश्च' सूत्र से घञ् प्रत्यय हुआ।

रम्+घञ्	'लशक्वतद्धिते' सूत्र से घ् की और ञ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
रम्+अ	'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा वृद्धि
राम	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

राम+सु 'उपदेशऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

राम+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

राम+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

राम+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

रामः सिद्ध हुआ।

- **अपामार्गः-**

अप उपसर्ग पूर्वक मृज् धातु से 'हलश्च' सूत्र से घञ् प्रत्यय हुआ।

अप+मृज्+घञ् 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से घ् की और ञ् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

अप+मृज्+अ 'मृजेर्वृद्धिः' सूत्र से ऋ को आर् वृद्धि

अप+म्+आर्+ज्+अ -अप+मार्ज्+अ 'चजोः कु घिण्यतोः' सूत्र से ज् को ग्

अप+मार्ग 'उपसर्गस्य घञ्मनुष्ये बहुलम्' सूत्र से उपसर्ग के प के अकार को दीर्घ

अपामार्ग 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

अपामार्ग+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

अपामार्ग+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

अपामार्ग+रु उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

अपामार्ग+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

अपामार्गः सिद्ध हुआ।

- **ईषद्दुस्सुषुः कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल्**

  ईषद् (अल्प), दुस् और सु इन दुःख सुखार्थ शब्दों के उपपद रहते धातुओं से खल् प्रत्यय होता है।

- **दुष्करः-**

दुस् उपपद पूर्वक कृ धातु से 'ईषद्दुस्सुषुः कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल्' सूत्र से खल् प्रत्यय हुआ।

दुस्+कृ+खल् 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से ख् की और ल् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

दुस्+कृ+अ 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण

दुस्+क्+अर्+अ दुस्+कर 'आदेश प्रत्यययोः' सूत्र से स् को ष्

दुष्कर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

दुष्कर+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

दुष्कर+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

दुष्कर+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

दुष्कर+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

दुष्करः सिद्ध हुआ।

- **ईषत्करः-**

ईषत् उपपद पूर्वक कृ धातु से 'ईषद्दुस्सुषुः कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल्' सूत्र से खल् प्रत्यय हुआ।

ईषत्+कृ+खल् 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से ख् की और ल् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

ईषत्+कृ+अ 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण

ईषत्+क्+अर्+अ-ईषत्कर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

ईषत्कर+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

ईषत्कर+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

ईषत्कर+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

ईषत्कर+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

ईषत्करः सिद्ध हुआ।

- **सुकरः-**

सु उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से 'ईषद्दुस्सुषुः कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल्' सूत्र से खल् प्रत्यय हुआ।

सु+कृ+खल् 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से ख् की और ल् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

सु+कृ+अ 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण

सु+क्+अर्+अ -सुकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

सुकर+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

सुकर+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

सुकर+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
सुकर+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
सुकरः	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. नपुंसके भावे क्तः सूत्र का कार्य है?
2. दन्तच्छदः में उपपद, धातु एवं प्रत्यय बताएं?
3. आकरः में घ प्रत्यय विधायक सूत्र है?
4. अवे तृस्त्रोर्घञ् सूत्र का कार्य है?
5. रामः में धातु एवं प्रत्यय?

7.5 सारांश

इस इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित उत्तरकृदन्त प्रकरण के 867 से 879 सूत्रों एवं वार्तिकों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत उत्तरकृदन्त प्रकरण के क्विप्, क्तिन्, श, अ, क्त, ल्युट्, घ, घञ् तथा खल् आदि प्रत्यय का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत इकाई विद्यार्थियों को उत्तरकृदन्त की सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझने में सहायक सिद्ध होगी।

7.6 कठिन शब्दावली

- **पुंसीति**
  पुल्लिङ्ग संज्ञा को पुंसीति कहा गया है।
- **निपात**
  निपात अन्वर्थक संज्ञा है अर्थात् निपात ऊँचे-नीचे अनेक प्रकार के अर्थों को प्रकट करते हैं।

7.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. क्तिन् प्रत्यय।
2. वेरपृक्तस्य।
3. श प्रत्यय।
4. गुरुमान् हलन्त धातु से स्त्रीलिङ्ग में अ प्रत्यय।
5. कृ धातु

अभ्यास प्रश्न 2

1. नपुंसक भाव अर्थ में धातु से क्त प्रत्यय।
2. दन्त+छद्+णिच्।
3. पुंसि संज्ञायां घः।
4. घञ् प्रत्यय।
5. रम्+घञ्।

7.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

7.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-

इच्छा। अ प्रत्ययात् । गुरोश्च हलः। ण्यास श्रन्थो युच्। नपुंसके भावे क्तः। ल्युट् च।

2. निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-

विपत्ति, कीर्ति, स्रूः, कारणा, आकरः, रामः, अपामार्गः, तथा सुकरः।

अष्टम इकाई
उत्तरकृदन्त-4

संरचना

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 वर्णित प्रत्यय

8.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 880 से 890 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

8.5 सारांश

8.6 कठिन शब्दावली

8.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

8.8 सहायक ग्रन्थ

8.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों, सप्तम इकाई में आपने लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित उत्तरकृदन्त प्रकरण के 867 से 879 सूत्रों और उनके उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया होगा। इसके अन्तर्गत क्विप्, क्तिन्, श, अ, क्त, ल्युट्, घ, घञ् तथा खल् आदि प्रत्यय का वर्णन किया गया। अष्टम इकाई में आप सभी लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित उत्तरकृदन्त के 880 से 890 सूत्रों और उनके उदाहरणों का अध्ययन करेंगे। आप इसे सावधानी पूर्वक अध्ययन कीजिये।

8.2 उद्देश्य

इस अध्याय के पश्चात् आप जानने में सक्षम होंगे-

- उत्तरकृदन्त में वर्णित सूत्रों का अर्थ।
- इससे सम्बन्धित उदाहरणों को सिद्ध करने में भी सक्षम होंगे।
- सूत्रों की व्याख्या करने में भी सक्षम होंगे।

8.3 वर्णित प्रत्यय

षष्ट इकाई में आपने उत्तरकृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत 867 से 879 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि का अध्ययन किया। इसके अन्तर्गत आप सभी ने उत्तरकृदन्त प्रकरण के क्विप्, क्तिन्, श, अ, क्त, ल्युट्, घ, घञ् तथा खल् आदि प्रत्यय का अध्ययन किया। अष्टम इकाई में हम उत्तर कृदन्त प्रकरण के 880 से 890 सूत्रों, वार्तिकों एवं उनके उदाहरणों को सिद्ध करने का प्रयास करेंगे।। इसके अन्तर्गत युच्, क्त्वा, तथा णमुल् प्रत्यय का वर्णन किया जाएगा।

8.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 880 से 890 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- **आतो युच्**

ईषद् (अल्प), दुस् और सु इन दुःख सुखार्थ शब्दों के उपपद रहते आकरान्त धातुओं से युच् प्रत्यय होता है।

- **ईषत्पानः-**

ईषत् उपपद पूर्वक पा धातु से 'आतो युच्' सूत्र से युच् प्रत्यय हुआ।

ईषत्+पा+युच्	च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर यु शेष रहा।
ईषत्+पा+यु	'युवोरनाकौ' सूत्र से यु को अन आदेश
ईषत्+पा+अन	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से सवर्ण दीर्घ होकर
ईषत्पान	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
ईषत्पान+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
ईषत्पान+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
ईषत्पान+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
ईषत्पान+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
ईषत्पानः	सिद्ध हुआ।

- **दुष्पानः, सुपानः-**

दुस्, सु उपपद पूर्वक पा धातु से 'आतो युच्' सूत्र से युच् प्रत्यय हुआ।

दुस्, सु+पा+युच्	च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर यु शेष रहा।
दुस्, सु+पा+यु	'युवोरनाकौ' सूत्र से यु को अन आदेश
दुस्, सु+पा+अन	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से सवर्ण दीर्घ होकर
दुस्, सु+पान	'आदेश प्रत्यययोः' सूत्र से स् को ष्
दुष्पान, सुपान	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

दुष्पान, सुपान+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
दुष्पान, सुपान+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
दुष्पान, सुपान+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
दुष्पान, सुपान+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
दुष्पानः, सुपानः	सिद्ध हुआ।

- **अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा**

  निषेध अर्थ में विद्यमान अलं और खलु शबदों के उपपद होने पर धातुओं से क्त्वा प्रत्यय होता है।

- **अलं दत्त्वा-**

अलं उपपद पूर्वक दा धातु से 'अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा' सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

अलं दा+क्त्वा	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
अलं दा+त्वा	'दो दद् घोः' सूत्र से दा को दद् आदेश
अलं दद्+त्वा	'खरि च' सूत्र से द् को त्
अलं दत्त्वा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
अलं दत्त्वा+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
अलं दत्त्वा+स्	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
अलं दत्त्वा	सिद्ध हुआ।

- **पीत्वा खलु-**

पा धातु से 'अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा' सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

पा+क्त्वा	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
पा+त्वा	'घुमास्थागापाजहातिसां हलि' से पा के आकार के स्थान पर ईकार आदेश
पीत्वा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
पीत्वा+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
पीत्वा	सिद्ध हुआ।

- **समानकर्तृकयोः पूर्वकाले**
  समानकर्तृक धात्वर्थों में पूर्वकाल में विद्यमान धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है।
- **न क्त्वा सेट्**
  सेट् क्त्वा कित् न हो।
- **रलो व्युपधाद् हलाऽऽदेः संश्च**
  इवर्ण और उवर्ण जिनकी उपधा हो ऐसे हलादि और रलन्त धातुओं से पर सेट् क्त्वा तथा सन् प्रत्यय कित् होते हैं विकल्प से।
- **भुक्त्वा-**

भुज् धातु से 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

भुज्+क्त्वा	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
भुज्+त्वा	'चोः कुः' सूत्र से ज् को ग्
भुग्+त्वा	'खरि च' सूत्र से ग् को क्
भुक्त्वा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
भुक्त्वा+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
भुक्त्वा	सिद्ध हुआ।

- **शयित्वा-**

शी धातु से 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

शी+क्त्वा	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
शी+त्वा	'आर्धधातुकस्येड्वलादेः' सूत्र से इट् आगम
शी+इत्वा	'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से शी के ईकार को गुण होकर
शे+इत्वा	'एचोऽयवायावः' सूत्र से ए को अय्
श्+अय्+इत्वा -शयित्वा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
शयित्वा+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
शयित्वा	सिद्ध हुआ।

- **द्युतित्वा, द्योतित्वा-**

द्युत् धातु से 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

द्युत्+क्त्वा	क् की ‘लशक्वतद्धिते’ सूत्र से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
द्युत्+त्वा	‘आर्धधातुकस्येड्वलादेः’ सूत्र से इट् आगम
द्युत्+इत्वा -द्युतित्वा	और ‘पुगन्तलघूपदस्य च’ सूत्र से उ को ओ गुण होकर
द्युतित्वा, द्योतित्वा	‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर
द्युतित्वा, द्योतित्वा+सु	‘अव्ययादाप्सुपः’ सूत्र से सु का लोप होकर
द्युतित्वा, द्योतित्वा	सिद्ध हुआ।

- **लिखित्वा, लेखित्वा-**

लिख् धातु से ‘समानकर्तृकयोः पूर्वकाले’ सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

लिख्+क्त्वा	क् की ‘लशक्वतद्धिते’ सूत्र से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
लिख्+त्वा	‘आर्धधातुकस्येड्वलादेः’ सूत्र से इट् आगम
लिख्+इत्वा -लिखित्वा	और ‘पुगन्तलघूपदस्य च’ सूत्र से इ को ए गुण होकर
लिखित्वा, लेखित्वा	‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर
लिखित्वा, लेखित्वा+सु	‘अव्ययादाप्सुपः’ सूत्र से सु का लोप होकर
लिखित्वा, लेखित्वा	सिद्ध हुआ।

- **वर्तित्वा-**

वृत् धातु से ‘समानकर्तृकयोः पूर्वकाले’ सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

वृत्+क्त्वा	क् की ‘लशक्वतद्धिते’ सूत्र से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
वृत्+त्वा	‘आर्धधातुकस्येड्वलादेः’ सूत्र से इट् आगम
वृत्+इत्वा	‘पुगन्तलघूपदस्य च’ सूत्र से ऋ को अर् गुण होकर
व्+अर्+त्+इत्वा -वर्तित्वा	‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर
वर्तित्वा+सु	‘अव्ययादाप्सुपः’ सूत्र से सु का लोप होकर
वर्तित्वा	सिद्ध हुआ।

- **सेवित्वा-**

सिव् धातु से 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

सिव्+क्त्वा	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
सिव्+त्वा	'आर्धधातुकस्येड्वलादेः' सूत्र से इट् आगम
सिव्+इत्वा	'पुगन्तलघूपदस्य च' सूत्र से इ को ए गुण होकर
सेवित्वा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
सेवित्वा+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
सेवित्वा	सिद्ध हुआ।

- **एषित्वा-**

इष् धातु से 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

इष्+क्त्वा	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
इष्+त्वा	'आर्धधातुकस्येड्वलादेः' सूत्र से इट् आगम
इष्+इत्वा	'पुगन्तलघूपदस्य च' सूत्र से इ को ए गुण होकर
एषित्वा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
एषित्वा+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
एषित्वा	सिद्ध हुआ।

- **उदितो वा**

  उदित् धातुओं से पर क्त्वा को विकल्प से इट् आगम होता है।

- **शमित्वा, शान्त्वा-**

शम् धातु से 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

शम्+क्त्वा	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
शम्+त्वा	'उदितो वा' सूत्र से इट् आगम
शम्++इत्वा -शमित्वा	और इट् न होने पर शम्+त्वा 'अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति' सूत्र से उपधा दीर्घ
शमित्वा, शाम्+त्वा	'मोऽनुस्वारः' सूत्र से म् को अनुस्वार और उसको परसवर्ण होकर

शमित्वा, शान्त्वा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
शमित्वा, शान्त्वा+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
शमित्वा, शान्त्वा	सिद्ध हुआ।

- **देवित्वा-**

दिव् धातु से 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

दिव्+क्त्वा	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
दिव्+त्वा	'उदितो वा' सूत्र से इट् आगम
दिव्+इत्वा	'पुगन्तलघूपदस्य च' सूत्र से द के इ को ए गुण होकर
देवित्वा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
देवित्वा+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
देवित्वा	सिद्ध हुआ।

- **द्यूत्वा-**

दिव् धातु से 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

दिव्+क्त्वा	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
दिव्+त्वा	'च्छ्वोः शूडनुनासिके च' सूत्र से वकार के स्थान पर ऊठ् आदेश
दि+ऊ+त्वा	'इकोयणचि' सूत्र से इ को य्
द्+य्+ऊ+त्वा -द्यूत्वा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
द्यूत्वा+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
द्यूत्वा	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. 'ईषत्पानः' में कौन सा प्रत्यय हुआ?
2. 'दत्त्वा' में 'क्त्वा' प्रत्यय किस सूत्र से हुआ?
3. 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' सूत्र का कार्य?

4. ‘शयित्वा’ रूप में ‘शे+इत्वा’ की स्थिति में ए को अय् करने वाला सूत्र है?

5. वर्तित्वा में इडागम किस सूत्र से हुआ?

- **जहातेश्च क्त्वि**

  क्त्वा प्रत्यय के परे होने पर दिवादिगणीय हा धातु के स्थान पर भी हि आदेश होता है।

- **हित्वा-**

धा धातु से ‘समानकर्तृकयोः पूर्वकाले’ सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

धा+क्त्वा	क् की ‘लशक्वतद्धिते’ सूत्र से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
धा+त्वा	‘दधातेर्हिः’ सूत्र से धा को हि
हि+त्वा	‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर
हित्वा+सु	‘अव्ययादाप्सुपः’ सूत्र से सु का लोप होकर
हित्वा	सिद्ध हुआ।

- **हात्वा-**

हा धातु से ‘समानकर्तृकयोः पूर्वकाले’ सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

हा+क्त्वा	क् की ‘लशक्वतद्धिते’ सूत्र से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
हा+त्वा	‘कृत्तद्धितसमासाश्च’ से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और ‘स्वौजसमौट्-’ सूत्र से सु विभक्ति होने पर
हात्वा+सु	‘अव्ययादाप्सुपः’ सूत्र से सु का लोप होकर
हात्वा	सिद्ध हुआ।

- **समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्**

जिस समास के पूर्वपद में नञ् से भिन्न कोई अन्य अव्यय स्थित हो तो उस समास में धातु से परे क्त्वा के स्थान पर ल्यप् आदेश होता है।

- **प्रकृत्य-**

प्र उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से ‘समानकर्तृकयोः पूर्वकाले’ सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

प्र+कृ+क्त्वा	क् की ‘लशक्वतद्धिते’ सूत्र से इत्संज्ञा तथा ‘तस्य लोपः’ से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
प्रकृ+त्वा	‘समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्’ सूत्र से त्वा के स्थान पर ल्यप् आदेश

प्रकृ+ल्यप्	ल् की 'लशक्वतद्धिते' और प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर य शेष रहा।
प्रकृ+य	'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से तुक् आगम
प्रकृ+तुक्+य	उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से तथा क् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर त् शेष रहा।
प्रकृत्य	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
प्रकृत्य+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
प्रकृत्य	सिद्ध हुआ।

- **अकृत्वा-**

न उपपद पूर्वक कृ धातु से 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

न+कृ+क्त्वा	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
न+कृ+त्वा	'न लोपो नञः' सूत्र से न् का लोप होकर अ शेष रहा।
अकृत्वा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
अकृत्वा+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
अकृत्वा	सिद्ध हुआ।

- **आभीक्ष्ण्ये णमुल् च**

समान कर्ता वाले दो धातुओं में पूर्वकालिक धातु से णमुल् और क्त्वा प्रत्यय होते हैं बार-बार होना अर्थ द्योतित होने पर।

- **नित्यवीप्सयोः**

बार-बार होना और वीप्स अर्थात् अनेक में व्याप्त होना अर्थ द्योतित होने पर पद को द्वित्व होता है।

- **स्मारम्, स्मारम् -**

स्मृ धातु से 'आभीक्ष्ण्ये णमुल् च' सूत्र से णमुल् प्रत्यय हुआ।

स्मृ+णमुल्	ण् की 'चुटू' से, उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से और ल् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अम् शेष रहा।
स्मृ+अम्	'अचोञ्णिति' सूत्र से ऋ को आर् वृद्धि होकर

स्म्+आर्+अम् -स्मारम्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
स्मारम्+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
स्मारम्	'नित्यवीप्सयोः' सूत्र से स्मारम् को द्वित्व होकर
स्मारम् स्मारम्	सिद्ध हुआ।

- **स्मृत्वा स्मृत्वा-**

स्मृ धातु से 'आभीक्ष्ण्ये णमुल् च' सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ।

स्मृ+क्त्वा	क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर त्वा शेष रहा।
स्मृ+त्वा	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
स्मृत्वा+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
स्मृत्वा	'नित्यवीप्सयोः' सूत्र से स्मृत्वा को द्वित्व होकर
स्मृत्वा स्मृत्वा	सिद्ध हुआ।

- **पायम् पायम् -**

पा धातु से 'आभीक्ष्ण्ये णमुल् च' सूत्र से णमुल् प्रत्यय हुआ।

पा+णमुल्	ण् की 'चुटू' से, उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से और ल् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अम् शेष रहा।
पा+अम्	'आतो युक् चिण्कृतोः' सूत्र से युक् आगम
पा+युक्+अम्	उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से तथा क् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर य् शेष रहा।
पा+यम्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
पायम्+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
पायम्	'नित्यवीप्सयोः' सूत्र से स्मृत्वा को द्वित्व होकर
पायम् पायम्	सिद्ध हुआ।

- **भोजम् भोजम् -**

भुज् धातु से 'आभीक्ष्ण्ये णमुल् च' सूत्र से णमुल् प्रत्यय हुआ।

भुज्+णमुल्	ण् की 'चुटू' से, उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से और ल् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अम् शेष रहा।
भुज्+अम्	'पुगन्तलघूपदस्य च' सूत्र से उ को ओ
भोजम्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
भोजम्+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
भोजम्	'नित्यवीप्सयोः' सूत्र से स्मृत्वा को द्वित्व होकर
भोजम् भोजम्	सिद्ध हुआ।

- **श्रावम् श्रावम् -**

श्रु धातु से 'आभीक्ष्ण्ये णमुल् च' सूत्र से णमुल् प्रत्यय हुआ।

श्रु+णमुल्	ण् की 'चुटू' से, उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से और ल् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अम् शेष रहा।
श्रु+अम्	'अचोञ्णिति' सूत्र से उ को औ वृद्धि होकर
श्रौ+अम्	'एचोऽयवायावः' सूत्र से औ को आव् आदेश
श्र्+आव्+अम् -श्रावम्	'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर
श्रावम्+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
श्रावम्	'नित्यवीप्सयोः' सूत्र से स्मृत्वा को द्वित्व होकर
श्रावम् श्रावम्	सिद्ध हुआ।

- **अन्यथैवंकथमित्थंसु सिद्धाप्रयोगश्चेत्**

अन्यथा, एवम्, कथम्, इत्थम् के उपपद होने पर कृञ् धातु से णमुल् प्रत्यय होता है यदि कृञ् धातु अर्थहीन होने से प्रयोग के अयोग्य प्रतीत हो रहा हो तो।

- **अन्यथाकारम्, एवंकारम्, इत्थंकारम्-**

अन्यथा, एवम्, इत्थम् पूर्वक कृ धातु से 'अन्यथैवंकथमित्थंसु सिद्धाप्रयोगश्चेत्' सूत्र से णमुल् प्रत्यय हुआ।

अन्यथा, एवम्, इत्थम्+कृ+णमुल्	ण् की 'चुटू' से, उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से और ल् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अम् शेष रहा।
अन्यथा, एवम्, इत्थम्+कृ+अम्	'अचोञ्णिति' सूत्र से ऋ को आर् वृद्धि होकर

अन्यथा, एवम्, इत्थम्+क्+आर्+अम्   'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और 'स्वौजसमौट्-' सूत्र से सु विभक्ति होने पर

अन्यथाकारम्, एवम्कारम्, इत्थम्कारम्+सु   'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर

अन्यथाकारम्, एवम्कारम्, इत्थम्कारम्   'मोऽनुस्वारः' सूत्र से म् को अनुस्वार होकर

अन्यथाकारम्, एवंकारम्, इत्थंकारम्   सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. उदितो वा सूत्र क्या कार्य करता है?
2. हित्वा में किस सूत्र से क्त्वा प्रत्यय हुआ?
3. प्रकृत्य में किस धातु से कौन सा प्रत्यय हुआ?
4. पायम् में कौन सा प्रत्यय हुआ?
5. श्रावम में स्मृत्वा को द्वित्व करने वाला सूत्र है?

8.5 सारांश

इस इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित उत्तरकृदन्त प्रकरण के 880 से 890 सूत्रों एवं वार्तिकों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत उत्तरकृदन्त प्रकरण के युच्, क्त्वा तथा णमुल् प्रत्यय का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत इकाई विद्यार्थियों को उत्तरकृदन्त की सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझने में सहायक सिद्ध होगी। यह उत्तरकृदन्त प्रकरण की अन्तिम इकाई है।

8.6 कठिन शब्दावली

- **अपवाद**
  अपवाद वह स्थिति है जहाँ सामान्य धारणा या आकलन के स्थान पर नया परिणाम मिलता है, ऐसी स्थिति को अपवाद माना जाता है।
- **चिति**
  जिसका चयन किया जाता है।
- **विवक्षा**
  अर्थ, आशय, प्रयोजन तथा इच्छा।
- **वीप्सा**
  परिव्याप्ति, सामान्य पुवरुक्ति।

8.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. युच् प्रत्यय।
2. अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा।
3. क्त्वा प्रत्यय।
4. एचोयवायावः।
5. आर्धधातुकस्येड्वलादेः।

अभ्यास प्रश्न 2

1. इडागम।
2. समानकर्तृकयोः पूर्वकाले।
3. प्र+कृ+क्त्वा
4. णमुल्।
5. नित्यवीप्सयोः।

8.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

8.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-

अतो युच्। समान कर्तृकयोः पूर्वकाले। न क्त्वा सेट्। उदितो वा। जहातेश्च क्त्वि।

2. निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-

सुपानः, अलं दत्त्वा, भुक्त्वा व्रजति, शयित्वा, प्रकृत्य, पायं पायम्, अन्यथाकारम्।

नवम इकाई
समास-1

संरचना

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 समास

9.4 समास के भेद

9.5 केवल समास एवं अव्ययीभाव समास

9.6 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित समासप्रकरण के 907 से 924 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

9.7 सारांश

9.8 कठिन शब्दावली

9.9 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

9.10 सहायक ग्रन्थ

9.11 अभ्यासार्थ प्रश्न

9.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों, पिछली इकाईयों में आपने पूर्वकृदन्त और उत्तरकृदन्त के अन्तर्गत आने वाले सूत्रों और उदाहरणों की सिद्धि प्रकिया का अध्ययन किया है। इस इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी के समास प्रकरण के अन्तर्गत समास का अर्थ, भेदों के नाम एवं समास के पहले भेद 'केवल समास' का वर्णन किया जायेगा। सामान्यतः समास अनेक शब्दों को संक्षिप्त करके नए शब्द बनाने की प्रक्रिया को कहते हैं। दूसरे शब्दों में कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ प्रकट करना समास कहलाता है। समास में जो स्मरण रखने योग्य जो बातें हैं, वह है- समास में कम से कम दो पदों का योग होता है। वह दो या अधिक पद एक पद हो जाते हैं। समास में होने वाले पदों का विभक्ति प्रत्यय लुप्त हो जाता है। विस्तार पूर्वक इस अध्याय में इसका अध्ययन किया जायेगा।

9.2 उद्देश्य

इस अध्याय के पश्चात् आप जानने में सक्षम होंगे-

- समास की परिभाषा।
- समास के भेद।

- केवल समास एवं अव्ययीभाव समास के सूत्रों के अर्थ और उदाहरण सहित उनकी सिद्धि प्रक्रिया को सिद्ध करने में भी सक्षम हो जायेंगे।

9.3 समास

संस्कृत भाषा में दो या दो से अधिक पदों के योग से एक पद बन जाता है। इसी प्रक्रिया को समास कहते हैं। समास में संयुक्त पदों को दो भागों में विभक्त किया जाता है- पूर्वपद तथा उत्तरपद। पाणिनि ने समास को मुख्य रूप से पाँच भागों में विभक्त किया है। पहले समास को उन्होंने कोई विशेष नाम नहीं दिया। परवर्ती वैयाकरणों ने इसे 'केवल समास' नाम दिया है। शेष चार क्रमशः अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और द्वन्द्व कहे जाते हैं।

विग्रह

समास के अर्थ-बोधक वाक्य को 'विग्रह' कहते हैं। यह लौकिक और अलौकिक भेद से दो प्रकार का होता है। लोक में जिसका प्रयोग किया जाता है उसे 'लौकिक विग्रह' कहते हैं। व्याकरणकार अपनी प्रक्रिया को निभाने के लिए जिन प्रकृति और प्रत्ययों की कल्पना करता है, उनसे युक्त पदों को 'अलौकिक विग्रह' कहते हैं। राजपुरुषः इस समस्त पद का लौकिक विग्रह है - राज्ञः पुरुषः। राजन् घस् पुरुष सु - यह अलौकि विग्रह है। पाणिनि ने अपने व्याकरण में इसी प्रकार की प्रकृति-प्रत्यय की कल्पना की है। समास होने पर समस्तपद के अवयवभूत की विभक्तियों का प्रायः लुक् हो जाता है। समास होने पर पुनः समस्तपद के साथ विभक्ति का प्रयोग होता है, तभी उसका भाषा में प्रयोग किया जाता है। कुछ अपवाद ऐसे हैं जिनमें विभक्ति का लुक् नहीं होता है। ऐसे समास को अलुक् समास कहते हैं।

9.4 समास के भेद

समास में कौन पद पहले आयेगा तथा कौन बाद में, इसका निर्णय पाणिनि ने एक विशेष उपाय से किया है। उन्होंने समास सम्बन्धी नियम बनाते समय जिस पद में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया हैउसकी उपसर्जन संज्ञा की है तथा उसी का पूर्वनिपात (पूर्वप्रयोग) का विधान किया है। उदाहरण के लिए अव्ययीभाव समास में अव्ययं विभक्ति सूत्र में 'अवययम्' में प्रथमा है अतः समास में अव्यय का पूर्व प्रयोग होता है। तत्पुरुष समास में द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी आदि विभक्तियों से युक्त पदों का पूर्वनिपात होता है। पाणिनि ने समास के पाँच भेद किए हैं। उनमें सबसे पहले केवल समास है-

- केवल समास
- अव्ययीभाव समास
- तत्पुरुष समास
    - कर्मधारय समास
    - द्विगु समास
- बहुव्रीहि समास
- द्वन्द्व समास

9.5 केवल समास एवं अव्ययीभाव समास

एक सुबन्त का दूसरे सुबन्त के साथ सामर्थ्य होने पर समास हो जाता है। ऐसा समास किसी विशेष नाम से नहीं पुकारा गया है। अतः इसे केवल समास कहा जाता है।

9.6 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित समासप्रकरण के 907 से 924 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- **समर्थः पदविधिः**

पद सम्बन्ध की जो विधि हो, वह समर्थ पदों की ही होती है अर्थात् जहाँ सामर्थ्य होगा,वहीं पदविधि होती है।

- **प्राक् कडारात् समासः**

कडाराः कर्मधारये। द्वितीय अध्याय के द्वितीय पाद के इस अन्तिम सूत्र से पूर्व सूत्र तक समास इसका अधिकार है अर्थात् उस सूत्र से पूर्व तक सब सूत्र समास का विधान करते हैं।

- **सहसुपा**

सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होता है।

- **इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च**

'इव' इस अव्यय पद के साथ सुबन्त का समास होता है और विभक्ति का लोप नहीं होता।

- **भूतपूर्वः-(पूर्वं भूतः)**

पूर्व+अम्+भूत+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'सह सुपा' सूत्र से समास हुआ।

पुर्व+अम्+भूत+सु	कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होकर 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप होकर
पूर्व+भूत	'भूतपूर्वे चरट' सूत्र से भूत का पूर्व प्रयोग होकर
भूतपूर्व	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
भूतपूर्व+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
भूतपूर्व+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
भूतपूर्व+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
भूतपूर्व+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
भूतपूर्वः	सिद्ध हुआ।

- **वागर्थाविव -(वागर्थौ इव)**

वागर्थ+औ+इव यह अलौकिक विग्रह होने पर 'इवेन सह समासो विभक्त्यलोपश्च' वार्तिक से समास हाने पर

वागर्थ+औ+इव	'वृद्धिरेचि' सूत्र से वृद्धि
वागर्थौ+इव	'एचोऽयवायावः' सूत्र से औ को आव् आदेश

वागर्थ्+आव्+इव		वागार्थाविव

अव्ययीभाव समास

अव्यय तथा सुबन्त के योग से बनने वाले समास को अव्ययीभाव समास कहते हैं। अव्ययीभाव समास सदा अव्यय होता है। इस समास में प्रायः अव्यय पूर्व में होता है। समास होने के बाद पूरा शब्द अव्ययीभावश्च से अव्यय बन जाता है। इस समास में पूर्वपद की प्रधानता होती है।

- **अव्ययीभावः**

  यह अधिकार सूत्र है। तत्पुरुष इस सूत्र से पहले तक अव्ययीभाव का अधिकार है।

- **अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु।**

  विभक्ति, समीप, समृद्धि, व्यृद्धि, अर्थाभाव, अत्यय, असम्प्रति, शब्दप्रादुर्भाव, पश्चात्, यथा, आनुपूर्व्य, यौगपद्य, सादृश्य, सम्पत्ति, साकल्य और अन्त अर्थों में विद्यमान अव्यय का समर्थ सुबन्त के साथ नित्य से समास होता है।

- **प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्**

समास विधायक सूत्र में जो प्रथमान्त पद है, उसके द्वारा निर्दिष्ट शब्द उपसर्जनसंज्ञक होता है।

- **उपसर्जनं पूर्वम्**

समास में उपसर्जन का पूर्व प्रयोग होता है।

- **अधिहरि- (हरौ इति)**

हरि+घि+अधि	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई
हरि+घि+अधि	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
हरि+अधि	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अधि को उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
अधिहरि	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
अधिहरि+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होने पर
अधिहरि	सिद्ध हुआ।

- **अव्ययीभावश्च**

अव्ययीभाव समास नपुंसकलिंग होता है।

- **अधिगोपम्- (गोपि इति)**

गोपा+घि+अधि यह अलौकिक विग्रह होने पर ' अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

गोपा+घि+अधि		'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

गोपा+अधि	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अधि को उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
अधिगोपा	'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' सूत्र से पा के आकार को ह्रस्व अ
अधिगोप	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
अधिगोप+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
अधिगोप+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
अधिगोपम्	सिद्ध हुआ।

- **नाऽव्ययीभावाद् अतोऽम् त्वपञ्चम्याः**

अदन्त अव्ययीभाव से पर सुप् का लोप न होकर उसके स्थान पर अम् आदेश होता है, पञ्चमी विभक्ति को छोड़कर।

- **तृतीया-सप्तम्योर्बहुलम्**

अदन्त अव्ययीभाव से परे तृतीया और सप्तमी के स्थान पर बहुलता से अम् आदेश होता है।

- **उपकृष्णम् -(कृष्णस्य समीपम्)**

कृष्ण+ङस्+उप यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

कृष्ण+ङस्+उप	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
कृष्ण+उप	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से उप की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
उपकृष्ण	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
उपकृष्ण+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
उपकृष्ण+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
उपकृष्णम्	सिद्ध हुआ।

- **सुमद्रम्-(मद्राणां समृद्धिः)**

मद्र+आम्+सु	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई
मद्र+आम्+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
मद्र+सु	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से सु को उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर

सुमद्र　　इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

सुमद्र+सु　　'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश

सुमद्र+अम्　　'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर

सुमद्रम्　　सिद्ध हुआ।

- **दुर्यवनम्-(यवनानां व्यृद्धिः)**

यवन+आम्+दुर् यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

यवन+आम्+दुर्　　'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

यवन+दुर्　　'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अधि को उपसर्जन कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर

दुर्यवन　　इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

दुर्यवन+सु　　'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश

दुर्यवन+अम्　　'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर

दुर्यवनम्　　सिद्ध हुआ।

- **निर्मक्षिकम् -(मक्षिकाणामभावः)**

मक्षिका+आम्+निर् यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

मक्षिका+आम्+निर्　　'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

मक्षिका+निर्　　'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से निर् की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर

निर्मक्षिका　　इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

निर्मक्षिका+सु　　'"स्वो नपुसंके प्रातिपदिकस्य' सूत्र से का के आकार को ह्रस्व आदेश

निर्मक्षिक+सु　　'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश

निर्मक्षिक+अम्　　'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर

निर्मक्षिकम्　　सिद्ध हुआ।

- **अतिहिमम्-(हिमस्य अत्ययः)**

हिम+घस्+अति यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

हिम+घस्+अति 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

हिम+अति 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अति की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर

अतिहिम इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

अतिहिम+सु '"स्वो नपुसंके प्रातिपदिकस्य' सूत्र से का के आकार को ह्रस्व आदेश

अतिहिम+सु 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश

अतिहिम+अम् 'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर

अतिहिमम् सिद्ध हुआ।

- **अतिनिद्रम्-(निद्रा सम्प्रति न युज्यते)**

निद्रा+घस्+अति यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

निद्रा+घस्+अति 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

निद्रा+अति 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से निर् की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर

अतिनिद्रा इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

अतनिद्रा+सु '"स्वो नपुसंके प्रातिपदिकस्य' सूत्र से का के आकार को ह्रस्व आदेश

अतिनिद्र+सु 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश

अतिनिद्र+अम् 'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर

अतिनिद्रम् सिद्ध हुआ।

- **इतिहरि-(हरेः इति)**

हरि+घस्+इति यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

हरि+घस्+इति 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

हरि+इति 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से इति की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर

इतिहरि इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

इतिहरि+सु 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर

इतिहरि सिद्ध हुआ।

- **अनुविष्णु -(विष्णोः पश्चात्)**

विष्णु+घस्+अनु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

विष्णु+घस्+अनु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
विष्णु+अनु	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
अनुविष्णु	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
अनुविष्णु+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप होकर
अनुविष्णु	सिद्ध हुआ।

- **अनुरूपम् -(रूपस्य योग्यम्)**

रूप+घस्+अनु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

रूप+घस्+अनु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
रूप+अनु	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
अनुरूप	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
अनुरूप+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
अनुरूप+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
अनुरूपम्	सिद्ध हुआ।

- **प्रत्यर्थम् -(अर्थं अर्थम् प्रति)**

अर्थ अम् प्रति यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

अर्थ+अम्+प्रति	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
अर्थ+प्रति	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
प्रति+अर्थ	'इकोयणचि' सूत्र से इ को य
प्रत् य् अर्थ -प्रत्यर्थ	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
प्रत्यर्थ+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश

प्रत्यर्थ+अम् 'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर

प्रत्यर्थम् सिद्ध हुआ।

- **यथाशक्ति-(शक्तिम् अनतिक्रम्य)**

शक्ति अम् यथा यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

शक्ति+अम्+यथा	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
शक्ति+यथा	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
यथा+शक्ति	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
यथाशक्ति+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु लोप
यथाशक्ति	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर समास के कितने भेद हैं?
2. भूतपूर्वः में कौन सा समास है?
3. उपसर्जन संज्ञा विधायक सूत्र है?
4. अव्ययीभावश्च सूत्र क्या कार्य करता है?
5. अनुरूपम् की प्रातिपदिक संज्ञा किस सूत्र से हुई?

- **अव्ययीभावे चाकाले**

यदि काल का वाचक शब्द उत्तरपद में न हो तो अव्ययीभाव समास में सह के स्थान पर स आदेश होता है।

- **सहरि-(हरेः सादृश्य)**

हरि+घस्+सह यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

हरि+घस्+सह	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
हरि+सह	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
सह+हरि	'अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से सह को स आदेश

सहरि	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
सहरि+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु लोप
सहरि	सिद्ध हुआ।

- **अनुज्येष्ठम् -(ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण)**

ज्येष्ठ+घस्+अनु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

ज्येष्ठ+घस्+अनु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
ज्येष्ठ+अनु	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
अनुज्येष्ठ	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
अनुज्येष्ठ+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
अनुज्येष्ठ+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
अनुज्येष्ठम्	सिद्ध हुआ।

- **सचक्रम्-(चक्रेण युगपत्)**

चक्र टा सह यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

चक्र+टा+सह	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
चक्र+सह	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
सह+चक्र	'अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से सह को स आदेश
सचक्र	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
सचक्र+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
सचक्र+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
सचक्रम्	सिद्ध हुआ।

- **ससखि -(सदृशः सख्या)**

सखि+टा+सह	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई
सखि+टा+सह	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

सखि+सह	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
सह+सखि	'अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से सह को स आदेश
ससखि	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
ससखि+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु लोप
ससखि	सिद्ध हुआ।

- **सक्षत्रम्-(क्षत्रणां सम्पित्तः)**

क्षत्र+भिस्+सह	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई
क्षत्र+भिस्+सह	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
क्षत्र+सह	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
सह+क्षत्र	'अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से सह को स आदेश
सक्षत्र	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुइ
सक्षत्र+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
सक्षत्र+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
सक्षत्रम्	सिद्ध हुआ।

- **सतृणम्-(तृणम् अपि अपरित्यज्य)**

तृण+टा+सह यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

तृण+टा+सह	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
तृण+सह	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
सह+तृण	'अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से सह को स आदेश
सतृण	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुइ
सतृण+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
सतृण+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
सतृणम्	सिद्ध हुआ।

- **साऽग्नि-(अग्निग्रन्थपर्यन्तम्)**

अग्नि+टा+सह — यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

अग्नि+टा+सह — 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

अग्नि+सह — 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर

सह+अग्नि — 'अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से सह को स आदेश

स+अग्नि — 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर

साग्नि — इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

साग्नि+सु — 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु लोप

साग्नि — सिद्ध हुआ।

- **नदीभिश्च**

संख्यावाचक सुबन्त शब्द का नदीवाचक सुबन्त शब्दों के साथ समास होता है और वह अव्ययीभाव समास कहलाता है।

- **वार्तिक - समाहारे चायमिष्यते**

यह समास समाहार अर्थ में ही इष्ट है।

- **पञ्चगङ्गम्-(पञ्चानां गङ्गानां समाहारः)**

पञ्चन्+आम्+गङ्गा+आम् — यह अलौकिक विग्रह होने पर 'नदीभिश्च' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई।

पञ्चन्+आम्+गङ्गा+आम् — 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप होकर

पञ्चन्+ गङ्गा — 'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप

पञ्चगङ्गां — 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' सूत्र से आकार को ह्रस्व

पञ्चगङ्ग — इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुइ

पञ्चगङ्ग+सु — 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश

पञ्चगङ्ग+अम् — 'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर

पञ्चगङ्गम् — सिद्ध हुआ।

- **द्वियमुनम्-(द्वयोः यमुनयोः समाहारः)**

द्वि+ओस्+यमुना+ओस्	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'नदीभिश्च' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई।
द्वि+ओस्+यमुना+ओस्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप होकर
द्वि+यमुना	'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' सूत्र से आकार को ह्रस्व
द्वियमुन	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुइ
द्वियमुन+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
द्वियमुन+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
द्वियमुनम्	सिद्ध हुआ।

- **अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः**

  शरद् आदि शब्दों से अव्ययीभाव समास में समासान्त टच् प्रत्यय होता है।

- **उपशरदम् -(शरदः समीपम्)**

शरद्+घस्+उप	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई
शरद्+घस्+उप	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
शरद्+उप	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
उपशरद्	'अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः' सूत्र से टच् प्रत्यय
उपशरद्+टच्	ट् की 'चुटू' सूत्र से और च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
उपशरद्+अ-उपशरद	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
उपशरद+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
उपशरद+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
उपशरदम्	सिद्ध हुआ।

- **प्रतिविपाशम्-(विपाशं विपाशम् प्रति)**

विपाश्+अम्+प्रति	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई
विपाश्+अम्+प्रति	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

विपाश्+प्रति	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
प्रतिविपाश्	'अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः' सूत्र से टच् प्रत्यय
प्रतिविपाश्+टच्	ट् की 'चुटू' सूत्र से और च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
प्रतिविपाश्+अ -प्रतिविपाश	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
प्रतिविपाश+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
प्रतिविपाश+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
प्रतिविपाशम्	सिद्ध हुआ।

- **उपजरसम्-(जरायाः समीपम्)**

जरा+घस्+उप	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई
जरा+घस्+उप	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
जरा+उप	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
उपजरा	'जराया जरश्च' से जरा को जरस् आदेश
उपजरस्	'अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः' सूत्र से टच् प्रत्यय
उपजरस्+टच्	ट् की 'चुटू' सूत्र से और च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
उपजरस्+अ -उपजरस	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
उपजरस+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
उपजरस+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
उपजरसम्	सिद्ध हुआ।

- **नस्तद्धिते**

तद्धित होने पर नकारान्त शब्द के भसंज्ञक टि का लोप होता है।

- **उपराजम्-(राज्ञः समीपम्)**

राजन्+घस्+उप	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

राजन्+घस्+उप	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
राजन्+उप	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
उपराजन्	'अनश्च' सूत्र से टच् प्रत्यय हुआ
उपराजन्+टच्	ट् की 'चुटू' सूत्र से और च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
उपराजन्+अ	'नस्तद्धिते' सूत्र से टि अन् का लोप
उपराज्+अ -उपराज	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
उपराज+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
उपराज+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
उपराजम्	सिद्ध हुआ।

- **अध्यात्मम् -(आत्मनि इति)**

आत्मन्+घि+अधि यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

आत्मन्+घि+अधि	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
आत्मन्+अधि	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
अधि+आत्मन्	'इकोयणचि' सूत्र से इ को य
अध्+य्+आत्मन्	'अनश्च' सूत्र से टच् प्रत्यय हुआ
अध्यात्मन्+टच्	ट् की 'चुटू' सूत्र से और च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
अध्यात्मन्+अ	'नस्तद्धिते' सूत्र से टि अन् का लोप
अध्यात्म्+अ -अध्यात्म	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
अध्यात्म+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
अध्यात्म+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
अध्यात्मम्	सिद्ध हुआ।

- **नपुंसकादन्यतरस्याम्**

अन् अन्त वाला जो नपुंसकलिंग, तदनत अव्ययीभाव से विकल्प से तद्धितसंज्ञक टच् होता है।

- **उपचर्मम्, उपचर्म-(चर्मणः समीपम्)**

चर्मन्+घस्+उप	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई
चर्मन्+घस्+उप	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
चर्मन्+उप	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
उपचर्मन्	'नपुंसकादन्यतरस्याम्' सूत्र से टच् प्रत्यय हुआ
उपचर्मन्+टच्	ट् की 'चुटू' सूत्र से और च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
उपचर्मन्+अ	'नस्तद्धिते' सूत्र से टि अन् का लोप
उपचर्म्+अ -उपचर्म	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
उपचर्म+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
उपचर्म+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
उपचर्मम्	सिद्ध हुआ और टच् न होने पर उपचर्मन् है
उपचर्मन्	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
उपचर्मन्+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप
उपचर्मन्	'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर
उपचर्म	सिद्ध हुआ।

- **झयः**

  झयन्त अव्ययीभाव से टच् प्रत्यय विकल्प से हो।

- **उपसमिधम्, उपसमित् -(समिधः समीपम्)**

समिध्+घस्+उप यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध--' सूत्र से समास होकर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से इसमें प्रातिपदिक संज्ञा हुई

समिध्+घस्+उप	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
समिध्+उप	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अनु की उपसर्जन संज्ञा कर 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होकर
उपसमिध्	'झयः' सूत्र से टच् प्रत्यय हुआ

उपसमिध्+च्	ट् की 'चुटू' सूत्र से और च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।
उपसमिध्+अ -उपसमिध	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
उपसमिध+सु	'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से सु को अम् आदेश
उपसमिध+अम्	'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर
उपसमिधम्	सिद्ध हुआ और टच् न होने पर उपसमिध् है
उपसमिध्	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
उपसमिध्+सु	'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सु का लोप
उपसमिध्	'झलां जशोऽन्ते' सूत्र से ध् को द्
उपसमिद्	'वाऽवसाने' सूत्र से द् को चर्त्व त्
उपसमित्	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. सह+हरि में सह को स आदेश किस सूत्र से हुआ?
2. पञ्चगङ्गम् में समास विधायक सूत्र है?
3. नस्तद्धिते सूत्र का कार्य है ?
4. उपराजम् में किस सूत्र से टच् प्रत्यय हुआ?
5. झयः सूत्र से कौन सा प्रत्यय हुआ?

9.7 सारांश

इस इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित समास प्रकरण के 907 से 924 सूत्रों एवं वार्तिकों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत समास प्रकरण के केवल एवं अव्ययीभाव समास का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत इकाई विद्यार्थियों को समास की सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझने में सहायक सिद्ध होगी। यह समास प्रकरण की प्रथम इकाई है।

9.8 कठिन शब्दावली

- **समास**
  संक्षेप को समास कहते हैं।
- **अव्यय**
  जिन शब्दों में लिंग, वचन, पुरुष तथा काल आदि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, उन्हें अव्यय कहते हैं।

- **उपसर्जन**

  वह शब्द जिसका अपना मूल स्वतंत्र स्वरूप व्युत्पत्ति के कारण या रचना में प्रयुक्त होने के कारण नष्ट हो गया हो और जब कि वह दूसरे शब्द के अर्थ का भी निर्धारण करे।

9.9 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. पाँच।
2. केवलसमास।
3. प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्।
4. नपुंसकलिंग।
5. कृतद्धितसमासाश्च।

अभ्यास प्रश्न 2

1. अव्ययीभावे चाकाले।
2. नदीभिश्च।
3. टि लोप।
4. अनश्च।
5. टच्।

9.10 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

9.11 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-

प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्, नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः, अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः। तृतीया सप्तम्योर्बहुलम्। नदीभिश्च। नपुंसकाद् अन्यतरस्याम्।

2. निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-

भूतपूर्वः, उपराजम्, अधिगोपम्, सक्षत्रम्, साग्नि, अध्यात्मम्, उपचर्मम्।

दशम इकाई
समास-2

संरचना

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 तत्पुरुष समास एवं उसके भेद

10.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित समासप्रकरण के 925 से 966 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

10.5 सारांश

10.6 कठिन शब्दावली

10.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

10.8 सहायक ग्रन्थ

10.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

10.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों, पिछली इकाई में आपने समास का अर्थ, भेद, केवल समास तथा अव्ययीभाव समास के विषय में अध्ययन किया। समास प्रकरण के अन्तर्गत केवलसमास एवं अव्ययीभाव समास के अन्तर्गत आने वाले सूत्रों और उदाहरणों की सिद्धि प्रकिया का अध्ययन किया है। इस इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी के समास प्रकरण के अन्तर्गत तत्पुरुष समास के सूत्रों एवं उनके उदाहरणों की रूप सिद्धि का अध्ययन किया जायेगा।

10.2 उद्देश्य

इस अध्याय के पश्चात् आप जानने में सक्षम होंगे-

- तत्पुरुष समास का अर्थ।
- तत्पुरुष समास के भेद।
- तत्पुरुष समास के सूत्रों के अर्थ और उदाहरण सहित उनकी सिद्धि प्रक्रिया को सिद्ध करने में भी सक्षम हो जायेंगे।

10.3 तत्पुरुष समास एवं उसके भेद

तत्पुरुष समास में प्रथम शब्द विशेषण होता है और दूसरा शब्द विशेष्य होता है। इसमें प्रायः दूसरे पद की प्रधानता होती है। तत्पुरुष समास के मुख्यतः दो भेद हैं-

1. व्यधिकरण तत्पुरुष

2. समानाधिकरण तत्पुरुष

व्यधिकरण तत्पुरुष समास उसे कहते हैं जिसमें प्रथम शब्द प्रथमा विभक्ति को छोड़कर किसी अन्य विभक्ति में रहता है। अर्थात् इसमें विभिन्न विभक्तियाँ रहती है। पूर्वपद की विभक्ति के आधार पर तत्पुरुष के द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी तथा सप्तमी, ये छः भेद होते हैं।

- **द्वितीया तत्पुरुष समास**

जब समास का प्रथम शब्द द्वितीया में होता है, तब उसे द्वितीया तत्पुरुष समास कहते हैं।

10.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित समासप्रकरण के 925 से 952 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- **द्वितीया श्रितातीत-पतित-गतात्यस्त-प्राप्तापन्नैः**

द्वितीया विभक्ति से युक्त समर्थ सुबन्त का श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त और आपन्न, इन प्रातिपदिकों से बने हुए सुबन्तों के साथ विकल्प से समास होता है और उसकी तत्पुरुष संज्ञा होती है।

- **कृष्णश्रितः-(कृष्णं श्रितः)**

कृष्ण+अम्+श्रित+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'द्वितीया श्रितातीत-पतित-गतात्यस्त-प्राप्तापन्नैः' सूत्र से समास हुआ।

कृष्ण+अम्+श्रित+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
कृष्ण+श्रित	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
कृष्णश्रित+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कृष्णश्रित+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
कृष्णश्रित+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कृष्णश्रित+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
कृष्णश्रितः	सिद्ध हुआ।

- **तृतीया तत्पुरुष समास**

जब तत्पुरुष समास का प्रथम शब्द तृतीया विभक्ति में हो, तब वह तृतीया तत्पुरुष समास कहलाता है।

- **तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन**

तृतीयान्त का तृतीयान्त के अर्थ से किए हुए गुणवाचक शब्द के साथ तथा अर्थ शब्द के साथ समास होता है।

- **शष्कुलाखण्डः-(शष्कुलया खण्डः)**

शष्कुला+टा+खण्ड+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से समास हुआ।

शष्कुला+टा+खण्ड+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
शष्कुला+खण्ड	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

शष्कुलाखण्ड+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

शष्कुलाखण्ड+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

शष्कुलाखण्ड+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

शष्कुलाखण्ड+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

शष्कुलाखण्डः सिद्ध हुआ।

- **धान्यार्थः-(धान्येन अर्थः)**

धान्य+टा+अर्थ+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से समास हुआ।

धान्य+टा+अर्थ+सु 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

धान्य+अर्थ 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर

धान्यार्थ+सु इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु िवभक्ति हुई

धान्यार्थ+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

धान्यार्थ+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

धान्यार्थ+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

धान्यार्थ+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

धान्यार्थः सिद्ध हुआ।

- **कर्तृकरणे कृता बहुलम्**

  कर्ता और करण में जो तृतीया, तदन्त पद का कृदन्त के साथ बहुलतया समास होता है।

- **हरित्रतः-(हरिणा त्रतः)**

हरि+टा+त्रत+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' सूत्र से समास हुआ।

हरि+टा+त्रत+सु 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

हरि+त्रत इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

हरित्रत+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

हरित्रत+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

हरित्रत+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

हरित्रत+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

हरित्रतः सिद्ध हुआ।

- **नखनिर्भिन्नः-(नखैः निर्भिन्नः)**

नख+भिस्+निर्भिन्न+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' सूत्र से समास हुआ।

नख+भिस्+निर्भिन्न+सु 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

नख+निर्भिन्न इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

नखनिर्भिन्न+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

नखनिर्भिन्न+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

नखनिर्भिन्न+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

नखनिर्भिन्न+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

नखनिर्भिन्नः सिद्ध हुआ।

- **चतुर्थी तत्पुरुष समास**

जब तत्पुरुष समास का प्रथम शब्द चतुर्थी में रहता है तब उसे चतुर्थी तत्पुरुष समास कहते हैं।

- **चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः**

चतुर्थ्यन्त के अर्थ के निमित्त जो वस्तु हो, उसके वाचक पद के साथ तथा अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित, इन पदों के साथ चतुर्थ्यन्त का समास होता है।

- **यूपदारु-(यूपाय दारु)**

यूप+घे+दारु+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः' सूत्र से समास हुआ।

यूप+घे+दारु+सु 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

यूप+दारु इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

यूपदारु+सु 'स्वमोर्नपुंसकात्' सूत्र से सु का लोप होकर

यूपदारु सिद्ध हुआ।

- **द्विजार्थः-(द्विजाय अर्थः)**

द्विज+घे+अर्थ+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः' से

'अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम' वार्तिक से समास हुआ।

द्विज+घे+अर्थ+सु 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

द्विज+अर्थ 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर

द्विजार्थ इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

द्विजार्थ+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

द्विजार्थ+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

द्विजार्थ+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

द्विजार्थ+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

द्विजार्थः सिद्ध हुआ।

- **द्विजार्था-**

द्विज+घे+अर्थ+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः' से 'अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गताचेति वक्तव्यम' वार्तिक से समास हुआ।

द्विज+घे+अर्थ+सु 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

द्विज+अर्थ 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर

द्विजार्थ 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से टाप् प्रत्यय

द्विजार्थ+टाप् 'चुटू' सूत्र से ट् की और 'हलन्त्यम्' सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर आ शेष रहा।

द्विजार्थ+आ 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर

द्विजार्था इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

द्विजार्था+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

द्विजार्था+स् 'हलघ्याब्भ्योदीर्घात् सुतिस्य पृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप

द्विजार्था सिद्ध हुआ।

- **द्विजार्थम्-(द्विजाय अर्थम्)**

द्विज+घे+अर्थ+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः' से 'अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम' वार्तिक से समास हुआ।

द्विज+घे+अर्थ+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
द्विज+अर्थ	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर
द्विजार्थ	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
द्विजार्थ+सु	'अतोऽम्' से सु को अम्
द्विजार्थ+अम्	'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप
द्विजार्थम्	सिद्ध हुआ।

- **भूतबलिः-(भूतेभ्यो बलिः)**

भूत भ्यस् बलि सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः' सूत्र से समास हुआ।

भूत+भ्यस्+बलि+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
भूत+बलि	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
भूतबलि+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
भूतबलि+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
भूतबलि+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
भूतबलि+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
भूतबलिः	सिद्ध हुआ।

- **गोहितम्, गोसुखम्, गोरक्षितम् -(गवे हितम्, गवे सुखम्, गवे रक्षितम्)**

गो+घे+हित, सुख, रक्षित+सु	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः' सूत्र से समास हुआ।
गो+घे+हित, सुख, रक्षित+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
गोहित, गोसुख, गोरक्षित	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
गोहित, गोसुख, गोरक्षित+सु	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम्
गोहित, गोसुख, गोरक्षित+अम्	'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप होकर
गोहितम्, गोसुखम्, गोरक्षितम्	सिद्ध हुआ।

- **पञ्चमी तत्पुरुष समास**

जब तत्पुरुष समास का प्रथम शब्द पञ्चमी विभक्ति में हो तब वह पञ्चमी तत्पुरुष समास कहलाता है।

- **पञ्चमी भयेन**

पञ्चम्यन्त का भयवाचक शब्द के साथ समास होता है।

- **चोरभयम् -(चोरात् भयम्)**

चोर+घसि+भय+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'पञ्चमी भयेन' सूत्र से समास हुआ।

चोर+घसि+भय+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
चोर+भय	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
चोरभय+सु	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम्
चोरभय+अम्	'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप होकर
चोरभयम्	सिद्ध हुआ।

➢ **स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन**

स्तोक, अन्तिक और दूर के अर्थ के वाचक और कृच्छ्र, इन सुबन्तों का क्तप्रत्ययान्त सुबन्त के साथ समास होता है।

- **स्तोकान्मुक्तः-(स्तोकात् मुक्तः)**

स्तोक+घसि+मुक्त+सु	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन' सूत्र से समास हुआ।
स्तोक+घसि+मुक्त+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सु का लोप किन्तु घसि का 'पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः' सूत्र से लोप नहीं हुआ।
स्तोक+घसि+मुक्त	'टाघसिघसामिनात्स्याः' सूत्र से घसि को आत्
स्तोक+आत्+मुक्त	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर
स्तोकात्+मुक्त	'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' सूत्र से त् को न्
स्तोकान्मुक्त	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
स्तोकान्मुक्त+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
स्तोकान्मुक्त+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
स्तोकान्मुक्त+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
स्तोकान्मुक्त+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
स्तोकान्मुक्तः	सिद्ध हुआ।

➢ **षष्ठी तत्पुरुष समास**

षष्ठी तत्पुरुष समास में प्रथम शब्द षष्ठी में होता है।

➢ **षष्ठी**

षष्ठ्यन्त का सुबन्त के साथ समास होता है।

- **राजपुरुषः -(राज्ञः पुरुषः)**

राजन्+घस्+पुरुष+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'षष्ठी' सूत्र से समास हुआ।

राजन्+घस्+पुरुष+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
राजन्+पुरुष	'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप होकर
राजपुरुष	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
राजपुरुष+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
राजपुरुष+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
राजपुरुष+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
राजपुरुष+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
राजपुरुषः	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. तत्पुरुष समास के मुख्य रूप से कौन से दो भेद हैं?
2. कृष्णश्रितः में कौन सा समास है?
3. नखनिर्भिन्नः में किस सूत्र से समास हुआ?
4. भूतबलिः समास का विग्रह है?
5. राजपुरुषः में समास विधायक सूत्र है?

➢ **पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे**

पूर्व, अपर, अधर और उत्तर इन अवयव वाचक शब्दों का अवयवीवाचक शब्द के साथ समास होता है, यदि अवयवी एकत्व संख्या युक्त हो अर्थात् एकवचनान्त हो।

- **पूर्वकायः, अपरकायः-(पूर्वं कायस्य,अपरं कायस्य)**

काय+घस्+पूर्व, अपर+सु समास	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे' सूत्र से हुआ।
काय+घस्+पूर्व, अपर+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
काय+पूर्व, अपर	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से पूर्व की उपसर्जन संज्ञा और उसका 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से पूर्व प्रयोग होकर
पूर्वकाय, अपरकाय	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

पूर्वकाय, अपरकाय+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
पूर्वकाय, अपरकाय+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
पुर्वकाय, अपरकाय+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
पूर्वकाय, अपरकाय+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
पूर्वकायः, अपरकायः	सिद्ध हुआ।

- **अर्धं नपुंसकम्**

  बराबर आधे भाग का वाचक जो नित्य नपुंसक अर्ध शब्द है, उसका सुबन्त के साथ समास होता है।

- **अर्धपिप्पली-(अर्धं पिप्पल्याः)**

पिप्पली+ङस्+अर्ध+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'अर्धं नपुंसकम्' सूत्र से समास हुआ।

पिप्पली+ङस्+अर्ध+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
पिप्पली+अर्ध	'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से पूर्व की उपसर्जन संज्ञा और उसका 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से पूर्व प्रयोग होकर
अर्धपिप्पली	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
अर्धपिप्पली+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
अर्धपिप्पली+स्	'हलङ्याब्भ्योदीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से सु का लोप
अर्धपिप्पली	सिद्ध हुआ।

- **सप्तमी तत्पुरुष समास**

जिसका प्रथम शब्द सप्तमी विभक्ति में रहता है, वह सप्तमी तत्पुरुष समास कहलाता है।

- **सप्तमी शौण्डैः**

  सप्तम्यन्त पद का शौण्ड आदि शब्दों के साथ समास होता है।

- **अक्षशौण्डः-(अक्षेषु शौण्डः)**

अक्ष+सुप्+शौण्ड+सु	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'सप्तमी शौण्डैः' सूत्र से समास हुआ।
अक्ष+सुप्+शौण्ड+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
अक्ष+शौण्ड	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
अक्षशौण्ड+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

अक्षशौण्ड+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
अक्षशौण्ड+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
अक्षशौण्ड+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
अक्षशौण्डः	सिद्ध हुआ।

- **समानाधिकरण तत्पुरुष समास**

समानाधिकरण तत्पुरुष समास उसे कहते हैं जिसमें दोनों शब्द प्रथमा विभक्ति मेेंं रहते हैं। ऐसी वस्तुएँ जिनका अधिकरण एक हो उसे समानाधिकरण कहते हैं। समानाधिकरण तत्पुरुष समास को कर्मधारय भी कहते हैं। द्विगु समास भी इसी के अन्तर्गत आता है। पहले उसको समझते हैं।

- **द्विगु समास**

यह भी तत्पुरुष समास का ही भेद है। यदि समास में प्रथम शब्द संख्यावाची हो और दूसरा शब्द संज्ञा होउसेद्विगु समास कहते हैं। द्विगु समास में या तो उसके अनन्तर कोई तद्धित प्रत्यय लगता है या वह किसी और शब्द के साथ समास में आता है।द्विगु समास का अर्थ समाहार एकवचन होता है।

- **दिक्संख्ये संज्ञायाम्**

दिशावाची और संख्यावाची सुबन्तों का समर्थ सुबन्त के साथ संज्ञा में समास होता है।

- **सप्तर्षयः-(सप्त च ते ऋषयः)**

सप्तन्+जस्+ऋषि+जस् यह अलौकिक विग्रह होने पर 'दिक्संख्ये संज्ञायाम्' सूत्र से समास हुआ।

सप्तन्+जस्+ऋषि+जस्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
सप्तन्+ऋषि	'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप
सप्त+ऋषि	'आदगुणः' सूत्र से गुण
सप्तर्षि	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से जस् विभक्ति हुई
सप्तर्षि+जस्	ज् की 'चुटू' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
सप्तर्षि+अस्	'जसि च' सूत्र से ए गुण होकर
सप्तर्ष्+ए+अस्	'एचोऽयवायावः' सूत्र से ए को अय् आदेश
सप्तर्ष्+अय्+अस्-सप्तर्षयस्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
सप्तर्षयरु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
सप्तर्षयर्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
सप्तर्षयः	सिद्ध हुआ।

- **तद्धितार्थोत्तरपरसमाहारे च**

तद्धिताऽर्थ के विषय में उत्तरपद रहते और समाहार जब वाच्य हो तब दिशावाचक और संख्यावाचकों का समास होता है।

- **दिक्पूर्वपदादसञ्ज्ञायां ञः**

  जिसके पूर्व दिशावाचक शब्द हो उससे भव अर्थ में ञ प्रत्यय होता है, पर संज्ञा में नहीं होता है।

- **तद्धितेष्वचामादेः**

ञित् और णित् तद्धित प्रत्यय परे रहते अचों में आदि अच् को वृद्धि हो।

➢ **पौर्वशालः -(पूर्वस्यां शालायां भवः)**

पूर्वा+घि+शाला+घि यह अलौकिक विग्रह होने पर 'तद्धितार्थोत्तरपरसमाहारे च' सूत्र से समास हुआ।

पूर्वा+घि+शाला+घि	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप होकर
पूर्वा+शाला	'सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुंवद्भावः' वार्तिक से पूर्वा को पुंवद्भाव होकर
पूर्वशाला	'दिक्पूर्वपदादसञ्ज्ञायां ञः' सूत्र से ञ प्रत्यय
पूर्वशाला+ञ	'चुटू' सूत्र से ञ् की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा
पूर्वशाला+अ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि अच् की वृद्धि होकर
पौर्वशाला+अ	'यस्येति च' सूत्र से ला के आ को लोप
पौर्वशाल्+अ -पौर्वशाल	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
पौर्वशाल+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
पौर्वशाल+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
पौर्वशाल+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
पौर्वशाल+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
पौर्वशालः	सिद्ध हुआ।

- **गोरतद्धितलुकि**

  गो शब्द जिसके अन्त में हो, ऐसे तत्पुरुष से टच् प्रत्यय समासान्त हो, परन्तु तद्धित प्रत्यय का जहाँ लोप हुआ हो, वहाँ न हो।

➢ **पञ्चगवधनः-(पञ्च गावो धनं यस्य)**

पञ्चन्+जस्+गो+जस्+धन+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'द्वन्द्वतत्पुरुषयोरुत्तरपदे नित्यसमासवचनम्' वार्तिक से समास हुआ।

पञ्चन्+जस्+गो+जस्+धन+सु 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति लोप

पञ्चन्+गो+धन 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप

पञ्च+गो+धन 'गोरतद्धितलुकि' सूत्र से टच् प्रत्यय

पञ्च+गो+टच्+धन ट् की 'चुटू' से और च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

पञ्च+गो+अ+धन 'एचोऽयवायावः' सूत्र से ओ को अव् आदेश

पञ्च+ग्+अव्+अ+धन इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

पञ्चगवधन+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

पञ्चगवधन+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

पञ्चगवधन+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

पञ्चगवधन+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

पञ्चगवधनः सिद्ध हुआ।

- **पञ्चगवम्-(पञ्चानां गवां समाहारः)**

पञ्चन्+आम्+गो+आम् यह अलौकिक विग्रह होने पर 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' सूत्र से समास हुआ।

पञ्चन्+आम्+गो+आम् 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति लोप

पञ्चन्+गो 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न् का लोप

पञ्च+गो 'गोरतद्धितलुकि' सूत्र से टच् प्रत्यय

पञ्च+गो+टच् ट् की 'चुटू' से और च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा।

पञ्च+गो+अ 'एचोऽयवायावः' सूत्र से ओ को अव् आदेश

पञ्च+ग्+अव्+अ इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

पञ्चगव+सु 'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश

पञ्चगव+अम् 'अमिपूर्वः' से पूर्व रूप होकर

पञ्चगवम् सिद्ध हुआ।

- **कर्मधारय समास**

यह तत्पुरुष समास का ही एक प्रकार है। जिसे समास में पूर्वपद और उत्तरपद एक ही विभक्ति में हो, उस समास की कर्मधारय संज्ञा होती है-तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः। इसके पूर्व जो तत्पुरुष आये हैं उनमें पूर्व और उत्तरपद भिन्न विभक्त्यन्त हैं। अतः उन्हें व्यधिकरण तत्पुरुष कहते हैं।

- **विशेषणं विशेष्येण बहुलम्**

  समान विभक्ति वाले भेदक = विशेषण का भेद्य = विशेष्य के साथ बहुलता से समास होता है।

➢ **नीलोत्पलम्-(नीलम् उत्पलम्)**

नील+सु+उत्पल+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' सूत्र से समास हुआ।

नील+सु+उत्पल+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति लोप
नील+उत्पल	'आदगुणः' सूत्र से गुण होकर
नीलोत्पल	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
नीलोत्पल+सु	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश
नीलोत्पल+अम्	'अमिपूर्वः' से पूर्व रूप होकर
नीलोत्पलम्	सिद्ध हुआ।

➢ **कृष्णसर्पः-(कृष्णश्चासौ सर्पः)**

कृष्ण+सु+सर्प+सु	यह अलौकिक विग्रह होने पर 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' सूत्र से समास हुआ।
कृष्ण+सु+सर्प+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप
कृष्ण+सर्प	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
कृष्णसर्प+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कृष्णसर्प+स्	'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु
कृष्णसर्प+रु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
कृष्णसर्प+र्	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर
कृष्णसर्पः	सिद्ध हुआ।

- **उपमानानि सामान्यवचनैः**

  उपमानवाचक सुबन्त का समान-विभक्तिक सामान्यवचन वाले सुबन्तों के साथ समास होता है।

➢ **घनश्यामः-(घन इव श्यामः)**

घन+सु+श्याम+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'उपमानानि सामान्यवचनैः' सूत्र से समास हुआ।

घन+सु+श्याम+सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सु का लोप
घनश्याम	इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई
घनश्याम+सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

घनश्याम+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

घनश्याम+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

घनश्याम+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

घनश्यामः सिद्ध हुआ।

- **शाकपार्थिवः-(शाकप्रियः पार्थिवः)**

शाकप्रिय+सु+पार्थिव+सु यह अलौकिक विग्रह होने पर 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' सूत्र से समास हुआ।

शाकप्रिय+सु+पार्थिव+सु 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

शाकप्रिय+पार्थिव 'शाकपार्थिवादीनां सिद्धय उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम्' वार्तिक से उत्तरपद प्रिय का लोप होकर

शाकपार्थिव इसमें प्रातिपदिक संज्ञा पूर्व से ही होने पर 'स्वौजस-' सूत्र से सु विभक्ति हुई

शाकपार्थिव+सु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से सु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

शाकपार्थिव+स् 'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु

शाकपार्थिव+रु 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर

शाकपार्थिव+र् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से र् को विसर्ग होकर

शाकपार्थिवः सिद्ध हुआ।

- **नञ् समास**

यदि तत्पुरुष समास में प्रथम शब्द न रहे और दूसरा संज्ञा या विशेषण तो वह नञ् तत्पुरुष समास कहलाता है। नञ् इस अव्यय का समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है।

- **नलोपो नञः**

उत्तरपद के परे होने पर नञ् के नकार का लोप होता है।

- **अब्राह्मणः -(न ब्राह्मणः)**

न ब्राह्मण सु इस अलौकिक विग्रह के साथ नञ् सूत्र से समास

न ब्राह्मण सु 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

न ब्राह्मण 'नलोपो नञः' सूत्र से न् का लोप

अ ब्राह्मण सु आदि कार्य करके

अब्राह्मण सिद्ध हुआ।

- **तस्मान्नुडचि**

जिसके नकार का लोप हो चुका है ऐसे नञ् से परे अजादि उत्तरपद को नुट का आगम होता है।

- **अनश्वः -(घोड़े से भिन्न)**

न अश्व सु इस अलौकिक विग्रह के साथ नञ् सूत्र से समास

न अश्व सु 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

न अश्व 'नलोपो नञः' सूत्र से न् का लोप

अ अश्व 'तस्मान्नुडचि' सूत्र से नुट् आगम

अ न् अश्व

अनश्व सु आदि कार्य करके

अनश्व सिद्ध हुआ।

➢ **कुगतिप्रादयः**

समर्थ सुबन्त शब्दों के साथ कु-शब्द, गतिसंज्ञक शब्द और प्र आदि का समास होता है।

कुपुरुषः- (कुत्सितः पुरुषः)

कु पुरुष सु इस अलौकिक विग्रह के साथ 'कुगतिप्रादयः' सूत्र से समास हुआ।

कु पुरुष सु 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से विभक्ति का लोप

कुपुरुष सु आदि कार्य करके

कुपुरुषः सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. अर्धपिप्पली में समास विधायक सूत्र है?
2. अक्षशौण्डः में समास है?
3. दिशावाची एवं संख्यावाची सुबन्तों में समास होता है?
4. पौर्वशालः में समास है ?
5. घनश्यामः में समास विधायक सूत्र है?

10.5 सारांश

इस इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित समास प्रकरण के 925 से 966 सूत्रों एवं वार्तिकों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत समास प्रकरण तत्पुरुष समास का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत इकाई विद्यार्थियों को समास की सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझने में सहायक सिद्ध होगी। यह समास प्रकरण की दूसरी इकाई है।

10.6 कठिन शब्दावली

- **नखभिन्नः-** नखों से फाड़ा हुआ।
- **द्विजार्थः सूपः-** ब्राह्मण के लिए सूप-दाल।

- **पूर्वकालः-** शरीर का अगला भाग।
- **दिग्वाचक-** दिशावाचक।
- **नीलोत्पलम्-** नीला कमल।

10.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. व्यधिकरण तत्पुरुष तथा समानाधिकरण तत्पुरुष।
2. द्वितीया तत्पुरुष समास।
3. कर्तृकरणे कता बहुलम्।
4. भूतेभ्यो बलिः।
5. षष्ठी।

अभ्यास प्रश्न 2

1. अर्ध नपुंसकम्।
2. सप्तमी तत्पुरुष समास।
3. द्विगु समास।
4. द्विगु समास।
5. उपमानानि सामान्यवचनैः।

10.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

10.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-

तत्पुरुषः। द्विगुश्च। तृतीया तत्कृताऽर्थेन गुणवचनेन। पञ्चमी भयेन। पञ्चम्याः स्तोकाऽदिभ्यः। अर्ध नपुंसकम्।

2. निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-

कृष्णश्रितः, धान्यार्थः, यूपदारु, स्तोकान्मुक्तः, पूर्वकायः, राजपुरुषः सप्तर्षयः, पौर्वशालः, पञ्चगवधनः, निलोत्पलम् तथा शाकपार्थिवः।

एकादश इकाई
समास-3

संरचना

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 बहुब्रीहि समास

11.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित समासप्रकरण के 967 से 984 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

11.5 सारांश

11.6 कठिन शब्दावली

11.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

11.8 सहायक ग्रन्थ

11.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

11.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों, पिछली इकाई में आपने तत्पुरुष समास एवं उसके भेदों के विषय में अध्ययन किया। पूर्व इकाई में समास प्रकरण के अन्तर्गत तत्पुरुष समास के अन्तर्गत आने वाले सूत्रों और उदाहरणों की सिद्धि प्रकिया का अध्ययन किया। प्रस्तुत इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी के समास प्रकरण के अन्तर्गत बहुब्रीहि समास के सूत्रों एवं उनके उदाहरणों की रूप सिद्धि का अध्ययन किया जायेगा।

11.2 उद्देश्य

इस अध्याय के पश्चात् आप जानने में सक्षम होंगे-

- बहुब्रीहि समास का अर्थ।
- बहुब्रीहि समास के उदाहरण।
- बहुब्रीहि समास के सूत्रों के अर्थ और उदाहरण सहित उनकी सिद्धि प्रक्रिया को सिद्ध करने में भी सक्षम हो जायेंगे।

11.3 बहुब्रीहि समास एवं द्वन्द्व समास

- **बहुब्रीहि समास**

जब समासयुक्त पद अन्य पदार्थ (पूर्वपद और उत्तरपद) के अर्थों से अतिरिक्त अर्थ के बोधक हों या जब दोनों या दो से अधिक सभी समस्त शब्द किसी अन्य शब्द के विशेषण होकर रहते हैं तब उसे बहुब्रीहि

समास कहते हैं। बहुब्रीहि समास प्रथमान्त पदों का होता है। इसमें दोनों ही शब्द अप्रधान रहते हैं और एक तीसरा ही शब्द प्रधान रहता है, जिसके दोनों समस्त शब्द मिलकर विशेषण होते हैं।

11.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित समासप्रकरण के 967 से 984 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- **अनेकमन्यपदार्थे**

अन्य पद के अर्थ में विद्यमान एक से अधिक प्रथमान्त पद परस्पर में विकल्प से समास को प्राप्त हों और उसे बहुब्रीहि समास कहा जाय।

- **सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ**

बहुब्रीहि समास में सप्तम्यन्त शब्द तथा विशेषण शब्द का पूर्व में प्रयोग होता है।

- **कण्ठेकालः (कण्ठे कालः यस्य)**

कण्ठ घि काल सु	इस अलौकिक विग्रह का 'सप्तमी विशेषणे बहुब्रीहौ' सूत्र से समास होकर
कण्ठ घि काल सु	'हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्' सूत्र से सप्तमी के लुक् का निषेधकर
कण्ठ घि काल सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से केवल सु का लोप होकर
कण्ठ घि काल	'लशक्कतद्धिते' सूत्र से घ् की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप होकर
कण्ठ इ काल	'आदगुणः' से गुण होकर
कण्ठे काल	एकदेशविकृतन्यायेन प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति
कण्ठेकाल सु	सु को रुत्व विसर्ग होकर
कण्ठेकालः	सिद्ध हुआ।

- **पीताम्बरः (पीतम् अम्बरं यस्य)**

पीत सु अम्बर सु	इस अलौकिक विग्रह का 'अनेकमन्येपदार्थे' सूत्र से समास हुआ।
पीत सु अम्बर सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर
पीत अम्बर	'अकः सवर्णे दीर्घः' सेत्र से सवर्ण दीर्घ होकर
पीताम्बर	एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति
पीताम्बर सु	सु को रुत्व विसर्ग होने पर
पीताम्बरः	सिद्ध हुआ।

- **स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूघ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु**

प्रवृत्तिनिमित्त समान होते हुए जो उक्तपुंस्क शब्द उससे परे ऊघ् प्रत्यय जहाँ न किया गया हो ऐसे स्त्रीवाचक शब्द का पुंवाचक शब्द के समान रूप होता है। समान विभक्तिक स्त्रीलिंगशब्द उत्तरपद परे होने पर, किन्तु पूरणार्थक प्रत्ययान्त शब्दों तथा प्रिया आदि शब्दों के परे रहते नहीं होता।

- **चित्रगुः (चित्रः गावः यस्य)**

चित्र जस् गो जस्	इस अलौकिक विग्रह में 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से समास हुआ
चित्र जस् गो जस्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर

चित्र गो	'स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूघ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु' सूत्र से पुंवद्भाव होकर
चित्र गो	'गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य' सूत्र से गो के ओकार को ”स्व
चित्रगु	एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति
चित्रगु सु	सु को रुत्व विसर्ग होने पर
चित्रगुः	सिद्ध हुआ।

- **बहुब्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्**

  स्वाङ्गवाची सक्थि या अक्षि शब्द जिसके अन्त में हो, ऐसे बहुब्रीहि से समासान्त षच् प्रत्यय होता है।

- **दीर्घसक्थः (दीर्घे सक्थिनी यस्य)**

दीर्घ औ सक्थि औ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर
दीर्घसक्थि	'बहुबीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाघŏात् षच्' सूत्र से षच् प्रत्यय होकर
दीर्घसक्थि षच्	षच् के ष् की 'षः प्रत्ययस्य' से च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अ शेष रहा
दीर्घसक्थि अ	'यस्येति च' सूत्र से इ का लोप होकर
दीर्घसक्थ् अ दीर्घसक्थ	एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति
दीर्घसक्थ सु	सु को रुत्व विसर्ग होने पर
दीर्घसक्थः	सिद्ध हुआ।

- **जलजाक्षी (जलजे इव अक्षिणी यस्याः)**

जलजा औ अक्षि औ	इस अलौकिक विग्रह में 'अनेकमन्येपदार्थे' सूत्र से समास हुआ।
जलजा औ अक्षि औ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर
जलजा अक्षि	'बहुबीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्' सूत्र से षच् प्रत्यय होकर
जलजा अक्षि षच्	षच् के ष् की 'षः प्रत्ययस्य' से च् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' से उनका लोप होकर अ शेष रहा
जलजा अक्षि अ	'यस्येति च' सूत्र से इ का लोप होकर
जलजा अक्ष् अ	अकः सवर्णे दीर्घः सेत्र से सवर्ण दीर्घ होकर
जलजाक्ष	'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से ङीष् प्रत्यय करके
जलजाक्ष ई	'यस्येति च' सूत्र से क्ष के अकार का लोप
जलजाक्ष् ई जलजाक्षी	एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति
जलजाक्षी सु	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से सु का लोप करके
जलजाक्षी	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. कण्ठेकालः का विग्रह होगा?
2. पीताम्बरः में समास है?
3. सप्तमीविशेषणे बहुब्रीहौ सूत्र का कार्य?
4. षच् प्रत्यय विधायक सत्र है?
5. जलजाक्षी में समास विधायक सूत्र है?

➢ **द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः**

बहुब्रीहि समास में द्वि और त्रि शब्दों से परे यदि मूर्धन् शब्द हो तो उससे समासान्त ष प्रत्यय होता है।

- **द्विमूर्धः, त्रिमूर्धः (द्वौ मूर्धनौ यस्य सः, त्रयो मूर्धानो यस्य सः)**

द्वि औ मूर्धन् औ, त्रि जस् मूर्धन् जस् इस अलौकिक विग्रह में 'अनेकमन्येपदार्थे' सूत्र से समास हुआ।

द्वि औ मूर्धन् औ, त्रि जस् मूर्धन् जस् 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर

द्विमूर्धन्, त्रिमूर्धन् 'द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः' सूत्र से ष प्रत्यय होकर

द्विमूर्धन्, त्रिमूर्धन् ष ष् की 'षः प्रत्ययस्य' से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर अ शेष रहा

द्विमूर्धन्, त्रिमूर्धन् अ 'नस्तद्धिते' सूत्र से टिसंज्ञक अन् का लोप होकर

द्विमूर्ध् अ, त्रिमूर्ध् अ

द्विमूर्ध, त्रिमूर्ध एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति

द्विमूर्ध सु, त्रिमूर्ध सु सु को रुत्व विसर्ग होने पर

द्विमूर्धः, त्रिमूर्धः सिद्ध हुआ।

➢ **पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः**

हस्ती आदि शब्दों से भिन्न उपमानवाचक शब्द से परे पाद शब्द का बहुब्रीहि समास में समासान्त लोप होता है।

- **व्याघ्रपात् (व्याघ्रपादौ इव पादौ यस्य सः)**

व्याघ्रपाद औ पाद औ इस अलौकिक विग्रह में 'अनेकमन्येपदार्थे' सूत्र के 'अन्तर्गत सप्तम्युपमानपूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च' इस वार्तिक से समास तथा पूर्वपद के उत्तरपद पाद का लोप होकर

व्याघ्र औ पाद औ 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर

व्याघ्रपाद	'पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः' सूत्र से अलोऽन्त्यस्य की सहायता से पाद के अकार का लोप
व्याघ्रपाद्	एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति
व्याघ्रपाद् सु	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से सु का लोप करके
व्याघ्रपाद्	वाऽवसाने से द् को त्
व्याघ्रपात्	सिद्ध हुआ।

- **संख्यासुपूर्वस्य**

संख्यावाचक शब्दपूर्वक और सु अव्यय पूर्वक पाद शब्द का समासान्त बहुब्रीहि समास में लोप होता है।

द्विपात्, सुपात्। व्याघ्रपात् के समान सिद्ध होंगे।

- **पूर्णाद्विभाषा**

पूर्ण शब्द से परे काकुद शब्द का विकल्प से समासान्त बहुब्रीहि समास में लोप होता है।

पूर्णकाकुत्, पूर्णकाकुदः। सभी क्रियायें पूर्ववत्।

- **उरः प्रभृतिभ्यः कप्**

उरस् आदि जिसके अन्त में हो ऐसे बहब्रीहि समास से समासान्त कप् प्रत्यय होता है।

- **सोऽपदादौ**

पाश्, कल्प, क, काम्य इन प्रत्ययों के परे रहते विसर्ग के स्थान पर स आदेश होता है।

- **कस्कादिषु च**

कस्क आद गणपठित शब्दों में इण् प्रत्याहार से परे विसर्ग को षकार आदेश होता है अन्यत्र सकार आदेश होता है।

- **व्यूढोरस्कः (व्यूढम् उरो यस्य)**

व्यूढ सु उरस् सु	इस अलौकिक विग्रह में 'अनेकमन्येपदार्थे' सूत्र से समास हुआ।
व्यूढ सु उरस् सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर
व्यूढ उरस्	'आदगुणः' से गुण होकर
व्यूढोरस्	'उरः प्रभृतिभ्यः कप्' सूत्र से कप् प्रत्यय होकर
व्यूढोरस् कप्	प् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप करके
व्यूढोरस् क	ससजुषोः रुः से रुत्व होकर
व्यूढोर रु क	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से इत्संज्ञा तस्य लोपः से लोप होकर
व्यूढोर र् क	खरवसानयोर्विसर्जनीयः से र् को विसर्ग
व्यूढोरःक	कस्कादिषु च की सहायता से सोऽपदादौ से सकार आदेश
व्यूढोरस्	एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति
व्यूढोरस्क सु	रुत्व विसर्ग करके

व्यूढोरस्कः		सिद्ध हुआ।

- **इणः षः**

  इण् से परे विसर्ग के स्थान पर षकार आदेश होता है पाश, कल्प, क, काम्य के परे होने पर।

- **प्रियसर्पिष्कः (प्रियं सर्पिः यस्य)**

प्रिय सु सर्पिस् सु	इस अलौकिक विग्रह में 'अनेकमन्येपदार्थे' सूत्र से समास हुआ।
प्रिय सु सर्पिस् सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर
प्रिय सर्पिस्	'उरः प्रभृतिभ्यः कप्' सूत्र से कप् प्रत्यय होकर
प्रियसर्पिस् कप्	प् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप करके
प्रियसर्पिस् क	ससजुषोः रुः से रुत्व होकर
प्रियसर्पि रु क	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से इत्संज्ञा तस्य लोपः से लोप होकर
प्रियसर्पि र् क	खरवसानयोर्विसर्जनीयः से र् को विसर्ग
प्रियसर्पिःक	इणः षः विसर्ग को षकार आदेश
प्रियसर्पिष्क	एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति
प्रियसर्पिष्क सु	रुत्व विसर्ग करके
प्रियसर्पिष्कः	सिद्ध हुआ।

- **निष्ठा**

  बहुब्रीहि समास में निष्ठाप्रत्ययान्त शब्द का पूर्व में प्रयोग होता है।

- **शेषाद्विभाषा**

  जिस बहुब्रीहि में कोई समासान्त न कहा गया हो तो उससे कप् प्रत्यय होता है विकल्प से।

- **महायशस्कः (महत् यशः यस्य)**

महत् सु यशस् सु	इस अलौकिक विग्रह में 'अनेकमन्येपदार्थे' सूत्र से समास हुआ।
महत् सु यशस् सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर
महत् यशस्	'आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः' सूत्र से तकार के स्थान पर आकार आदेश
मह आ यशस्	अकः सवर्णे दीर्घः से सवर्ण दीर्घ होकर
महायशस्	'शेषाद्विभाषा' सूत्र से कप् प्रत्यय होकर
महायशस् कप्	प् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप करके
महायशस् क	एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति
महायशस्क सु	रुत्व विसर्ग करके
महायशस्कः	सिद्ध हुआ।

- **महायशाः(महत् यशः यस्य)**

महत् सु यशस् सु	इस अलौकिक विग्रह में 'अनेकमन्येपदार्थे' सूत्र से समास हुआ।
महत् सु यशस् सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर

महत् यशस्	'आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः' सूत्र से तकार के स्थान पर आकार आदेश
मह आ यशस्	अकः सवर्णे दीर्घः से सवर्ण दीर्घ होकर
महायशस्	एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति
महायशस् सु	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से सुब्लुक्
महायशस्	'अत्वसन्तस्य चाधातोः' सूत्र से उपधा दीर्घ होकर
महायशास्	रुत्व विसर्ग होकर
महायशाः	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः सूत्र का कार्य है?
2. व्याघ्रपात् शब्द में समास विधायक सूत्र है?
3. सोऽपदादौ सूत्र का कार्य है?
4. महायशस्कः शब्द का विग्रह होगा?
5. कप् प्रत्यय विधायक सूत्र है?

11.5 सारांश

इस इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित समास प्रकरण के 967 से 984 सूत्रों एवं वार्तिकों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत समास प्रकरण के बहुब्रीहि समास का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत इकाई विद्यार्थियों को समास की सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझने में सहायक सिद्ध होगी। यह समास प्रकरण की तृतीय इकाई है।

11.6 कठिन शब्दावली

- **बहुब्रीहि**
  प्रायः अन्य पदार्थ प्रधान समास को बहुब्रीहि की संज्ञा दी गई है।
- **स्वाङ्ग**
  प्राणी में स्थित अङ्ग को स्वाङ्ग कहा जाता है।

11.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. कण्ठ ङि काल सु।
2. बहुब्रीहि समास।
3. बहुब्रीहि समास में सप्तम्यन्त शब्द तथा विशेषण का पूर्व में प्रयोग।
4. बहुब्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्।
5. अनेकमन्यपदार्थे।

अभ्यास प्रश्न 2

1. ष प्रत्यय।
2. अनेकमन्यपदार्थे।
3. विसर्ग को स आदेश।
4. महत् सु यशस् सु।
5. शेषाद्विभाषा।

11.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

11.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-

अनेकम् अन्य पदार्थे। हलदन्तात्सप्तम्याः संज्ञायाम्। अप्पूरणीप्रमाण्योः। द्वि-त्रिभ्यां ष मूर्ध्नः।

2. निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-

रूपवद्भार्यः, दीर्घसक्थः, द्वि-मूर्धः, त्रि-मूर्धः, व्याघ्रपात्, व्यूढोरस्कः।

द्वादश इकाई

समास-4

संरचना

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 द्वन्द्व समास

12.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित समासप्रकरण के 985 से 992 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

12.5 सारांश

12.6 कठिन शब्दावली

12.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

12.8 सहायक ग्रन्थ

12.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

12.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों, पिछली इकाई में आपने बहुब्रीहि समास एवं उसके उदाहरणों के विषय में अध्ययन किया। पूर्व इकाई में समास प्रकरण के अन्तर्गत बहुब्रीहि समास के अन्तर्गत आने वाले सूत्रों और उदाहरणों की सिद्धि प्रकिया का अध्ययन किया। प्रस्तुत इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी के समास प्रकरण के अन्तर्गत द्वन्द्व समास के सूत्रों एवं उनके उदाहरणों की रूप सिद्धि का अध्ययन किया जायेगा।

12.2 उद्देश्य

इस अध्याय के पश्चात् आप जानने में सक्षम होंगे-

- द्वन्द्व समास का अर्थ।
- द्वन्द्व समास के भेद।
- द्वन्द्व समास के सूत्रों के अर्थ और उदाहरण सहित उनकी सिद्धि प्रक्रिया को सिद्ध करने में भी सक्षम हो जायेंगे।

12.3 द्वन्द्व समास

जिस समास में दोनों पदों की प्रधानता रहती है, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। इसमें पद प्रायः प्रथमान्त ही रहता है। इसमें दो या दो से अधिक संज्ञाएँ 'च' शब्द से जोड़ दी जाती है।

12.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित समासप्रकरण के 985 से 992 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- **चार्थे द्वन्द्वः**

चकार के अर्थ में वर्तमान अनेक सुबन्तों का समास होता है और उसकी द्वन्द्व संज्ञा होती है।

- **राजदन्तादिषु परम्**

  राजदन्त आदि गण में पूर्वनिपात के योग्य पद का परनिपात होता है।

- **राजदन्ताः (दन्तानां राजा)**

दन्त आम् राजन् सु	इस अलौकिक विग्रह में 'षष्ठी' सूत्र से समास हुआ।
दन्त आम् राजन् सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर
दन्त राजन्	'राजदन्तादिषु परम् ' सूत्र से परप्रयोग
राजन् दन्त	'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' से न् लोप
राजदन्त	एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति
राजदन्त सु	रुत्व विसर्ग करके
राजदन्तः	सिद्ध हुआ।

- **द्वन्द्वे घि**

  द्वन्द्व समास में घिसंज्ञक शब्द पूर्व में प्रयुक्त होता है।

- **हरिहरौ (हरिश्च हरश्च)**

हरि सु हर सु	इस अलौकिक विग्रह में 'चार्थे द्वन्द्वः' से समास हुआ।
हरि सु हर सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर
हरिहर	'द्वन्द्वे घि' सूत्र से हरि का पूर्व प्रयोग
हरिहर	एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर औ विभक्ति
हरिहर औ	वृद्धिरेचि से वृद्धि कर
हरिहरौ	सिद्ध हुआ।

- **अजाऽऽद्यदन्तम्**

  द्वन्द्व समास में जो शब्द अजादि और अदन्त हो तो उसका पूर्व में प्रयोग करना चाहिए।

- **ईशकृष्णौ (ईशश्च कृष्णश्च)**

ईश सु कृष्ण सु	इस अलौकिक विग्रह में 'चार्थे द्वन्द्व' से समास हुआ।
ईश सु कृष्ण सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर
ईशकृष्ण	'अजाद्यदन्तम्' सूत्र से ईश का पूर्वप्रयोग
ईशकृष्ण	एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर औ विभक्ति
ईशकृष्ण औ	वृद्धिरेचि से वृद्धि कर
ईशकृष्णौ	सिद्ध हुआ।

- **अल्पाऽच्तरम्**

  द्वन्द्व समास के सभी शब्दों में जो शब्द अत्यन्त कम अच् वाला हो, उसका ही पूर्वप्रयोग होता है।

- **शिवकेशवौ (शिवश्च केशवश्च)**

शिव सु केशव सु — इस अलौकिक विग्रह में 'चार्थे द्वन्द्व' सूत्र से समास हुआ।

शिव सु केशव सु — 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर

शिव केशव — 'अल्पाच्तरम्' सूत्र से शिव का पूर्वप्रयोग

शिवकेशव — एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर औ विभक्ति

शिवकेशव औ — वृद्धिरेचि से वृद्धि कर

शिवकेशवौ — सिद्ध हुआ।

- **पिता मात्रा**

  मातृ शब्द के साथ उच्चरित पितृ शब्द का विकल्प से शेष होता है।

- **पितरौ (माता च पिता च)**

मातृ सु पितृ सु — इस अलौकिक विग्रह में 'चार्थे द्वन्द्व' सूत्र से समास हुआ।

मातृ सु पितृ सु — 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर

मातृ पितृ — 'पिता मात्र' सूत्र से पितृ शेष

पितृ — एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर औ विभक्ति

पितृ औ — 'ऋतो घिसर्वनामस्थानयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण होकर

पित् अर् औ-पितरौ — सिद्ध हुआ।

- **मातापितरौ (माता च पिता च)**

मातृ सु पितृ सु मातृ सु पितृ सु — इस अलौकिक विग्रह में 'चार्थे द्वन्द्व' सूत्र से समास हुआ।

मातृ सु पितृ सु — 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर

मातृ पितृ — 'आनघ् ऋतो द्वन्द्वे' सूत्र से मातृ के ऋकार को आनघ् आदेश

मात् आन् पितृ — 'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' से न् का लोप

मातापितृ — एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर औ विभक्ति

मातापितृ औ — 'ऋतो घिसर्वनामस्थानयोः' सूत्र से ऋ को अर् गुण होकर

मातापित् अर् औ मातापितरौ — सिद्ध हुआ।

- **द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्**

  प्राणी के अंग, वाद्य के अंग और सेना के अंगों में यदि द्वन्द्व समास हो तो उनमें समाहार एकवचन ही हो।

- **पाणिपादम् (पाणी च पादौ च)**

पाणि औ पाद औ — इस अलौकिक विग्रह में 'चार्थे द्वन्द्व' सूत्र से समास हुआ।

पाणि औ पाद औ — 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर

पाणिपाद	'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्' सूत्र से एकवचन विधान
पाणिपाद	एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति
पाणिपाद सु	'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् होकर
पाणिपाद अम्	'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप होकर
पाणिपादम्	सिद्ध हुआ।

- **द्वन्द्वाच्चुदषहाऽन्तात् समाहारे**

  चवर्गान्त, दकारान्त, षकारान्त और हकारान्त द्वन्द्व से समासान्त टच् प्रत्यय होता है समाहार में।

- **वाक्त्वचम् (वाक् च त्वक् च)**

वाच् सु त्वच् सु	इस अलौकिक विग्रह में 'चार्थे द्वन्द्व' सूत्र से समास हुआ।
वाच् सु त्वच् सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक् होकर
वाच् त्वच्	चोः कु सूत्र से च् को क्
वाक्त्वच्	'द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे' सूत्र से टच् प्रत्यय (टच् का अ शेष रहता है)
वाक्त्वच् अ वाक्त्वच	एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति
वाक्त्व सु	अतोऽम् से सु को अम् आदेश
वाक्त्वच अम्	अमिपूर्वः से पूर्वरूप होकर
वाक्त्वचम्	सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार त्वक्स्रजम्, शमीदृशदम्, वाक्त्विषम् आदि सिद्ध होते हैं।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न

1. चार्थे द्वन्द्व सूत्र क्या कार्य करता है?
2. द्वन्द्व समास में घि संज्ञक वर्ण कहाँ प्रयुक्त होता है?
3. राजदन्ताः में समास विधायक सूत्र है?
4. शिवकेशवौ का विग्रह होगा?
5. पाणिपादम् में सु को अम् करने वाला सूत्र है?

12.5 सारांश

इस इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित समास प्रकरण के 985 से 992 सूत्रों एवं वार्तिकों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत समास प्रकरण के द्वन्द्व समास का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत इकाई विद्यार्थियों को समास की सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझने में सहायक सिद्ध होगी। यह समास प्रकरण की अन्तिम इकाई है।

12.6 कठिन शब्दावली

- **द्वन्द्व**

  जिस समास में दोनों पदों की प्रधानता हो, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं।
- **समुच्चय**

  परस्पर-निरपेक्ष अनेक पदार्थों के एक पदार्थ में अन्यय को समुच्चय कहते हैं।
- **अन्वाचय**

  समुच्चीयमान पदार्थों में एक का आनुषङ्गिकतया-गौणरूप से अन्वय होने को अन्वाचय कहते हैं।
- **समाहार**

  समूह को समाहार कहते हैं।

12.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न

1. द्वन्द्व समास।
2. पूर्व में।
3. षष्ठी।
4. शिव सु केशव सु।
5. अमिपूर्वः।

12.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

12.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-

चार्थे द्वन्द्व। राजदन्तादिषु परम्। द्वन्द्वे घि। अजाद्यदन्तम्। अल्पाच्तरम्।

2. निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-

अर्थ-धर्मौ, ईश-कृष्णौ, शिवकेशवौ, पितरौ, माता-पितरौ, पाणि-पादम् तथा वाक्त्वचम्।

त्रयोदश इकाई
तद्धित-1

संरचना

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 वर्णित प्रत्यय

13.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित तद्धितप्रकरण के 997 से 1028 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

13.5 सारांश

13.6 कठिन शब्दावली

13.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

13.8 सहायक ग्रन्थ

13.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

13.1 प्रस्तावना

संस्कृत के व्युत्पन्न प्रातिपादिक कृत् प्रत्ययान्त, तद्धित प्रत्ययान्त और समासयुक्त इन तीनों वर्गों में विभक्त किये गये हैं। पिछले इकाईयों में आपने कृत प्रत्ययों के विषय में अध्ययन किया है। तद्धित प्रत्ययों की प्रकृति नाम है अर्थात् नाम पदों के अर्थ परिवर्द्धन के लिए तद्धित प्रत्यय जोड़े जाते हैं। कुछ तद्धित प्रत्यय केवल उपसर्ग से ही भी लग सकते हैं। 'विशाल' में वैयाकरणों ने वि उपसर्ग से शाल प्रत्यय माना है। बहु (बहुच्) एक ऐसा तद्धित प्रत्यय है जो प्रकृति से पूर्व में जुड़ता है। शेष सभी तद्धित प्रत्यय अन्य प्रत्ययों के समान प्रकृति के अन्त में ही जुड़ते हैं। तद्धित प्रत्यय सुबन्त प्रातिपदिकों से होते हैं, धातुओं से नहीं। ये प्रायः किसी अर्थविशेष को लेकर होते हैं। तद्धित प्रत्यय अण्, ठक्, ठञ्, णिनि, मतुप्, घञ्, मयट् आदि अनेकों प्रकार के होते हैं। तद्धित प्रत्यय करने के बाद समास की तरह तद्धितान्त की भी प्रातिपादिक संज्ञा होती है। इस इकाई में तद्धित प्रत्ययों पर विचार किया जायेगा।

13.2 उद्देश्य

इस अध्याय के पश्चात् आप जानने में सक्षम होंगे-

- तद्धित प्रत्यय के अन्तर्गत आने वाले अण्, ण्य, अञ्, नञ्, स्नञ्, यञ्, फक्, इञ्, ढक्, यत्, घ तथा ठक् प्रत्यय की सिद्धि प्रक्रिया।
- इसके अन्तर्गत सभी सूत्रों के अर्थ।
- सभी सूत्रों के अन्तर्गत आने वाले उदाहरणों को भी सिद्ध कर सकेंगे।

13.3 वर्णित प्रत्यय

इस इकाई के अन्तर्गत अण्, ण्य, अञ्, नञ्, स्नञ्, यञ्, फक्, इञ्, ढक्, यत्, घ तथा ठक् प्रत्यय का वर्णन किया जायेगा।

13.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित तद्धितप्रकरण के 997 से 1028 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- **अण् प्रत्यय**

अण् प्रत्यय में णकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा होती है। उसके पश्चात् उसमें णित् होने के कारण वृद्धि आदि भी होंगे।

- **अश्वपत्यादिभ्यश्च**

प्राग्दिव्यतीय अर्थों में अश्वपति आदि गणपठित शब्दों से अण् प्रत्यय होता है।

- **आश्वपतम् (अश्वपतेः अपत्यम्)**

अश्वपति घस् इस अलौकिक विग्रह में 'अश्वपत्यादिभ्यश्च' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ।

अश्वपति घस् अण्	ण् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप होकर
अश्वपति घस् अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
अश्वपति अ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि अच् की वृद्धि
आश्वपति अ	यचि भम् से भसंज्ञा करके यस्येति च से इकार का लोप
आश्वपत् अ आश्वपत	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
आश्वपत सु	अतोऽम् से सु को अम् आदेश
आश्वपत अम्	अमिपूर्वः से पूर्वरूप होकर
आश्वपतम्	सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार गाणपतम् को भी सिद्ध किया जा सकता है।

- **दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्यः**

प्राग्दिव्यतीय अर्थों में दिति, अदिति, आदित्य शब्द और पति उत्तरपद में हो ऐसे शब्दों से ण्य प्रत्यय होता है।

- **दैत्यः (दितेः अपत्यम्)**

दिति घस्	इस अलौकिक विग्रह में 'दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्यः' सूत्र से ण्य प्रत्यय
दिति घस् ण्य	ण् की चुटू से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप होकर
दिति घस् य	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
दिति य	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि अच् की वृद्धि
दैति य	यचि भम् से भसंज्ञा करके यस्येति च से इकार का लोप
दैत्य	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
दैत्य सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
दैत्यः	सिद्ध हुआ।

- **हलो यमां यमि लोपः**

  हल् से परे यम् का विकल्प से लोप होता है यम् के परे रहने पर।
- **आदित्यः (आदित्यस्य अपत्यम्)**

आदित्य घस्	इस अलौकिक विग्रह में 'दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्यः' सूत्र से ण्य प्रत्यय
आदित्य घस् ण्य	ण् की चुटू से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप होकर
आदित्य घस् य	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
आदित्य य	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि अच् की वृद्धि
आदित्य य	यचि भम् से भसंज्ञा अकार का यस्येति च से लोप
आदित्् य	'हलो यमां यमि लोपः' सूत्र से प्रथम यकार का लोप
आदित्य	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
आदित्य सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
आदित्यः	सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार प्राजापत्यः को सिद्ध किया जा सकता है।

- **किति च**

  कित् तद्धित प्रत्यय के परे होने पर अचों में आदि अच् की वृद्धि होती है।
- **बाहीकः (बहिर्भवः)**

बहिस् से	'ईकक् च' इस वार्तिक से ईकक् प्रत्यय तथा टि इस् का लोप
बह् ईकक्	क् की हलन्यत्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप
बह् ईक बहीक	'किति च' से आदिवृद्धि
बाहीक	कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा तथा स्वौजस- सूत्र से सु विभक्ति
बाहीक सु	रुत्व विसर्ग करके
बाहीकः	सिद्ध हुआ।

- **उत्सादिभ्योऽञ्**

  प्राग्दीव्यतीय अर्थों में उत्स आदि गणपठित शब्दों में अञ् प्रत्यय होता है।
- **औत्सः (उत्से भवः)**

उत्स ङि	इस अलौकिक विग्रह में 'उत्सादिभ्योऽञ्' सूत्र से अञ् प्रत्यय
उत्स ङि अञ्	ञ् की हलन्त्यम् सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा और तस्य लोपः से उसका लोप करके
उत्स ङि अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
उत्स अ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि अच् की वृद्धि
औत्स अ	यचि भम् से स के अ की भसंज्ञा करके यस्येति च से अकार का लोप
औत्स् अ औत्स	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
औत्स सु	सु को रुत्व विसर्ग करके

औत्सः	सिद्ध हुआ।

- **स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात्**

  स्त्री और पुंस् प्रातिपदिकों से तद्धितसंज्ञक क्रमशः नञ् और स्नञ् प्रत्यय होते हैं।

- **स्त्रैणः (स्त्रियाः अपत्यम्)**

स्त्री घस्	इस अलौकिक विग्रह में 'स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात्' सूत्र से नञ् प्रत्यय
स्त्री घस् नञ्	ञ् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप होकर
स्त्री घस् न	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
स्त्री न	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदिवृद्धि होकर ईकार को ऐकार
स्त्रै न	'अटकुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से नकार को णकार
स्त्रै ण	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
स्त्रैण सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
स्त्रैणः	सिद्ध हुआ।

- पौंस्नः (पुंसः अपत्यम्)

पुंस् घस्	इस अलौकिक विग्रह में 'स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात्' सूत्र से स्नञ् प्रत्यय
पुंस् घस् स्नञ्	ञ् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप होकर
पुंस् घस् स्न	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
पुंस् स्न	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदिवृद्धि होकर उकार को औकार
पौंस् स्न	'संयोगान्तस्य लोपः' से स् का लोप
पौंस्न	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
पौंस्न सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
पौंस्नः	सिद्ध हुआ।

- **गर्गादिभ्यो यञ्**

  गर्ग आदि गणपठित शब्दों में गोत्रपत्य अर्थ में यञ् प्रत्यय होता है।

- **गार्ग्यः, वात्स्यः (गर्गस्य गोत्रपत्यं पुमान्, वत्सस्य गोत्रपत्यं पुमान्)**

गर्ग, वत्स ङस्	इन अलौकिक विग्रह में 'गर्गादिभ्यो यञ्' सूत्र से यञ् प्रत्यय हुआ।
गर्ग, वत्स घस् यञ्	ञ् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप
गर्ग, वत्स घस् य	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
गर्ग, वत्स य	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदिवृद्धि होकर अकार को आकार
गार्ग, वात्स य	'यस्येति च' से अ का लोप
गार्ग्, वात्स् य गार्ग्य, वात्स्य	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति

गार्ग्य, वात्स्य सु		सु को रुत्व विसर्ग करके

गार्ग्यः, वात्स्यः		सिद्ध हुआ।

- **यिञिञोश्च**

  गोत्रर्थ में यञ् और अञ् प्रत्यय और तदन्त से युवापत्य अर्थ में तद्धितसंज्ञक फक् प्रत्यय होता है।

- **आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययदीनाम्**

  प्रत्ययों के आदि में स्थित फ् के स्थान पर आयन्, ढ् के स्थान पर एय्, ख् के स्थान पर ईन्, छ् के स्थान पर ईय् और घ् के स्थान पर इय् आदेश होते हैं।

- **गार्ग्यायणः, वात्सयायनः (गर्गस्य गोत्रपत्यम्, वत्सस्य गोत्रपत्यम्)**

गर्ग, वत्स घस् इस अलौकिक विग्रह में 'गर्गादिभ्यो यञ्' सूत्र से यञ् प्रत्यय हुआ।

गर्ग, वत्स घस् यञ्		ञ् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप

गर्ग, वत्स घस् य		'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्

गर्ग, वत्स य		'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदिवृद्धि होकर अकार को आकार

गार्ग, वात्स य		'यस्येति च' से अ का लोप

गार्ग्, वात्स् य गार्ग्य, वात्स्य	यिञिञोश्च सूत्र से फक् प्रत्यय

गार्ग्य, वात्स्य फक्		क् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तस्य लोपः से उसका लोप होकर

गार्ग्य, वात्स्य फ		'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययदीनाम्' सूत्र से फ् को आयन् आदेश

गार्ग्य, वात्स्य आयन् अ		'यस्येति च' से य के अ का लोप

गार्ग्य्, वात्स्य् आयन् अ -गार्ग्यायन, वात्सयायन

गार्ग्यायन, वात्सयायन		'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से रेफ से परे नकार को णकार

गार्ग्यायण, वात्सयायन		एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति

गार्ग्यायण, वात्स्यायन सु		सु को रुत्व विसर्ग करके

गार्ग्यायणः, वात्स्यायनः		सिद्ध हुआ।

- **अत इञ्**

अपत्य अर्थ में अकारान्त षष्ठयन्त समर्थ प्रातिपदिक से इञ् प्रत्यय होता है।

- **दाक्षिः (दक्षस्य अपत्यं पुमान्)**

दक्ष घस्		इस अलौकिक विग्रह में 'अत इञ्' सूत्र से इञ् प्रत्यय हुआ।

दक्ष घस् इञ्		ञ् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप

दक्ष घस् इ		'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्

दक्ष इ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदिवृद्धि होकर अकार को आकार
दाक्ष इ	'यस्येति च' से अ का लोप
दाक्ष् इ दाक्षि	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
दाक्षि सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
दाक्षिः	सिद्ध हुआ।

- **बाह्वादिभ्यश्च**

  बाहु आदि गणपठित शब्दों से अपत्य अर्थ में इञ् प्रत्यय होता है।

- **बाहविः (बाहोः अपत्यम्)**

बाहु घस्	इस अलौकिक विग्रह में 'बाह्वादिभ्यश्च' सूत्र से इञ् प्रत्यय हुआ।
बाहु घस् इञ्	ञ् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप
बाहु घस् इ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
बाहु इ	'ओर्गुण' सूत्र से उ को ओ गुण
बाहो इ	'एचोऽयवायावः' सूत्र से ओ को अव् आदेश
बाह् अव् इ बाहवि	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
बाहवि सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
बाहविः	सिद्ध हुआ।

- **औडुलोमिः (उडुलोम्नः अपत्यम्)**

उडुलोमन् घस् अलौकिक विग्रह में 'बाह्वादिभ्यश्च' सूत्र से इञ् प्रत्यय हुआ।

उडुलोमन् घस् इञ्	ञ् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप
उडुलोमन् घस् इ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
उडुलोमन् इ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि वृद्धि उ को औ
औडुलोमन् इ	'नस्तद्धिते' सूत्र से टि अन् का लोप
औडुलोम् इ औडुलोमि	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
औडुलोमि सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
औडुलोमिः	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. अश्वपत्यादिभ्यश्च सूत्र का कार्य है?
2. दैत्यः में कौन सा प्रत्यय हुआ?
3. यम् लोप विधायक सूत्र है?

4. बाहीकः में अच् की वृद्धि विधायक सूत्र है?
5. यञ् प्रत्यय विधायक सूत्र है?

- **शिवादिभ्योऽण्**

  अपत्यार्थ में शिवादिगण पठित शब्दों से तद्धितसंज्ञक अण् प्रत्यय होता है।

- **शैवः, गाङ्गः (शिवस्य अपत्यम्, गङ्गायाः अपत्यम्)**

शिव ङस्, गङ्गा ङस्	इस अलौकिक विग्रह में 'शिवादिभ्योऽण्' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ।
शिव, गङ्गा ङस् अण्	ण् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप
शिव, गङ्गा ङस् अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
शिव, गङ्गा अ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि वृद्धि इकार को ऐकार और अकार को आकार
शैव, गङ्गा अ	'यस्येति च' से वकार के अ तथा गाघöा आ का लोप
शैव् गाङ्ग अ शैव गाङ्ग	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
शैव, गाङ्ग सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
शैवः, गाङ्गः	सिद्ध हुआ।

- **ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च**

  ऋषिवाचकों तथा अन्धक, वृष्णि, कुरु इन तीनों वंशों में उत्पन्न व्यक्ति के वाचक शब्दों से अपत्य अर्थ में तद्धितसंज्ञक अण् प्रत्यय होता है।

- **वासिष्ठः, वैश्वामित्रः (वसिष्ठस्य अपत्यम्, विश्वामित्रस्य अपत्यम्)**

वसिष्ठ, विश्वामित्र ङस्	इस अलौकिक विग्रह में 'ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ।
वसिष्ठ, विश्वामित्र घस् अण्	ण् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप
वसिष्ठ, विश्वामित्र घस् अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
वसिष्ठ, विश्वामित्र अ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि वृद्धि अकार को आकार और इकार को ऐकार
वसिष्ठ, वैश्वामित्र अ	'यस्येति च' से ठकार के अ तथा त्र के अ का लोप
वसिष्ठ् अ, वैश्वामित्र् अ	वर्ण सम्मेलन करने पर
वसिष्ठ, वैश्वामित्र	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
वसिष्ठ, वैश्वामित्र सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
वसिष्ठः, वैश्वामित्रः	सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार श्वाफल्कः, वासुदेवः, नाकुलः, साहदेवः को भी सिद्ध किया जा सकता है।

- **मातुरुत्संख्यासम्भद्रपूर्वायाः**

संख्यापूर्व, सम्पूर्व तथा भद्रपूर्व मातृशब्द को अपत्य अर्थ में ह्रस्व उकार अन्तादेश होता है और इससे परे तद्धितसंज्ञक अण् प्रत्यय भी होता है।

- **द्वैमातुरः (द्वयोः मात्रेः अपत्यम्)**

द्वि ओस् मातृ ओस् इस अलौकिक विग्रह में 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' से समास हुआ।

द्वि ओस् मातृ ओस्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
द्विमातृ	'मातुरुत्संख्यासम्भद्रपूर्वायाः' सूत्र से ऋ को उर् तथा अण् प्रत्यय
द्विमात् उर् द्विमातुर् अण्	ण् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप कर
द्विमातुर् अ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि वृद्धि इकार को ऐकार
द्वैमातुर् अ	वर्ण सम्मेलन करने पर
द्वैमातुर	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
द्वैमातुर सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
द्वैमातुरः	सिद्ध हुआ।

- **साम्मातुरः (संमातुः अपत्यम्)**

सम् मातृ सु इस अलौकिक विग्रह में 'कुगतिप्रादयः' सूत्र से समास हुआ।

सम् मातृ सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
सम्मातृ	'मातुरुत्संख्यासम्भद्रपूर्वायाः' सूत्र से ऋ को उर् तथा अण् प्रत्यय
सम्मात् उर् अण् सम्मातुर् अण्	ण् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप कर
सम्मातुर् अ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि वृद्धि अकार को आकार
साम्मातुर् अ	वर्ण सम्मेलन करने पर
साम्मातुर	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
साम्मातुर सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
साम्मातुरः	सिद्ध हुआ।

- **भाद्रमातुरः (भद्रमातुः अपत्यम्)**

भद्रा सु मातृ सु इस अलौकिक विग्रह में 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' से समास हुआ।

भद्रा सु मातृ सु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
भद्रामातृ	'पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु' सूत्र से भद्रा को पुंवद्भाव होकर
भद्रमातृ	'मातुरुत्संख्यासम्भद्रपूर्वायाः' सूत्र से ऋ को उर् तथा अण् प्रत्यय
भद्रमात् उर् अण् भद्रमातुर् अण्	ण् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप कर

भद्रमातुर् अ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि वृद्धि अकार को आकार
भाद्रमातुर् अ	वर्ण सम्मेलन करने पर
भाद्रमातुर	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
भाद्रमातुर सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
भाद्रमातुरः	सिद्ध हुआ।

- **स्त्रीभ्यो ढक्**

  अपत्य अर्थ में स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों से ढक् प्रत्यय होता है।

- **वैनतेयः (विनतायाः अपत्यम्)**

विनता घस् इस अलौकिक विग्रह में 'स्त्रीभ्यो ढक्' सूत्र से ढक् प्रत्यय हुआ।

विनता घस् ढक्	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
विनता ढक्	क् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर
विनता ढ	'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से ढ को एय् आदेश
विनता एय्	'किति च' सूत्र से आदि वृद्धि इकार को ऐकार
वैनता एय	'यस्येति च' से आकार का लोप
वैनत् एय	वर्ण सम्मेलन करने पर
वैनतेय	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
वैनतेय सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
वैनतेयः	सिद्ध हुआ।

- **राजश्वशुराद्यत्**

  राजन् और श्वशुर शब्दों से अपत्य अर्थ में यत् प्रत्यय होता है।

- **ये चाभावकर्मणोः**

  यकारादि तद्धित प्रत्यय के परे रहते अन् को प्रकृतिभाव होता है, यदि तद्धित प्रत्यय भाव और कर्म अर्थ में न हुए हों तो।

- **राजन्यः (राज्ञः अपत्यम्)**

राजन् घस् इस अलौकिक विग्रह में 'राजश्वशुराद्यत्' सूत्र से यत् प्रत्यय हुआ।

राजन् घस् यत्	त् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप करके
राजन् घस् य	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
राजन् य	वर्ण सम्मेलन करने पर
राजन्य	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
राजन्य सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
राजन्यः	सिद्ध हुआ।

- **श्वशुर्यः (श्वशुरस्य अपत्यम्)**

श्वशुर ङस् इस अलौकिक विग्रह में 'राजश्वशुराद्यत्' सूत्र से यत् प्रत्यय हुआ।

श्वशुर ङस् यत्	त् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप करके
श्वशुर ङस् य	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
श्वशुर य	'यस्येति च से र के अ का लोप
श्वशुर् य	वर्ण सम्मेलन करने पर
श्वशुर्य	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
श्वशुर्य सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
श्वशुर्यः	सिद्ध हुआ।

- **क्षत्राद् घः**
  क्षत्र प्रातिपदिक से अपत्य जाति अर्थ में घ प्रत्यय होता है।
- **क्षत्रियः (क्षत्रस्य अपत्यम्)**

क्षत्र ङस् इस अलौकिक विग्रह में 'क्षत्राद् घः' सूत्र से घ प्रत्यय हुआ।

क्षत्र ङस् घ	'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से घ को इय् आदेश
क्षत्र इय्	'यस्येति च' से अकार का लोप
क्षत्र् इय	वर्ण सम्मेलन करने पर
क्षत्रिय	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
क्षत्रिय सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
क्षत्रियः	सिद्ध हुआ।

- **रेवत्यादिभ्यष्ठक्**
  रेवती आदि गण में पठित प्रातिपदिकों से अपत्य अर्थ में तद्धिसंज्ञक ठक् प्रत्यय होता है।
- **ठस्येकः**
  अंग से परे ठ् के स्थान पर इक आदेश होता है। (इक यह आदेश अदन्त है।)
- **रैवतिकः (रेवत्याः अपत्यम्)**

रेवती ङस् अलौकिक विग्रह में 'रेवत्यादिभ्य"क्' सूत्र से ठक् प्रत्यय हुआ।

रेवती ङस् ठक्	क् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप करके
रेवती ङस् ठ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक्
रेवती ठ	'ठस्येकः' सूत्र से ठ को इक आदेश
रेवती इक	'किति च' से आदि वृद्धि
रैवती इक	'यस्येति च' से ईकार का लोप
रैवत् इक	वर्ण सम्मेलन करने पर
रैवतिक	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति

रैवतिक सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
रैवतिकः	सिद्ध हुआ।

- **जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ्**

  जनपद विशेष का वाचक शब्द यदि उस नाम वाले क्षत्रियविशेष का भी वाचक हो तो उससे अपत्य अर्थ में तद्धित संज्ञक अञ् प्रत्यय होता है।

- **पाञ्चालः (पञ्चालस्य अपत्यम्)**

पञ्चाल ङस् इस अलौकिक विग्रह में 'जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ्' सूत्र से अञ् प्रत्यय हुआ।

पञ्चाल ङस् अञ्	ञ् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप
पञ्चाल ङस् अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
पञ्चाल अ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि वृद्धि अकार को आकार
पाञ्चाल अ	'यस्येति च' से ल के अ का लोप
पाञ्चाल अ	वर्ण सम्मेलन करने पर
पाञ्चाल	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
पाञ्चाल सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
पाञ्चालः	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. शैवः में अण् प्रत्यय विधायक सूत्र है?
2. वासिष्ठः में कौन सा प्रत्यय हुआ है?
3. द्वैमातुरः में समास विधायक सूत्र है?
4. राजश्वशुराद्यत् सूत्र कौन सा प्रत्यय करता है?
5. पाञ्चालः में अञ् प्रत्यय विधायक सूत्र है?

13.5 सारांश

इस इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित तद्धित प्रकरण के 997 से 1028 सूत्रों एवं वार्तिकों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत तद्धित प्रकरण के अण्, ण्य, अञ्, नञ्, स्नञ्, यञ्, फक्, इञ्, ढक्, यत्, घ तथा ठक् प्रत्यय का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत इकाई विद्यार्थियों को तद्धितों की सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझने में सहायक सिद्ध होगी। यह तद्धित प्रकरण की प्रथम इकाई है।

13.6 कठिन शब्दावली

- **तद्धित**

  जो प्रत्यय धातुओं को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण आदि के अन्त में जोड़े जाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

- **पौंस्नः**
  पुरुषों का समूह।

13.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. अण् प्रत्यय।
2. ण्य प्रत्यय।
3. हलो यमां यमि लोपः।
4. किति च।
5. गर्गादिभ्यो यञ्।

अभ्यास प्रश्न 2

1. शिवादिभ्योऽण्।
2. अण्।
3. तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च।
4. यत्।
5. जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ्।

13.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

13.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-

समर्थानां प्रथमाद् वा। अश्व पत्यादिभ्यश्च। हलो यमां यमि लोपः। किति च। वहिषष्टि लोपो यञ् च।

2. निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-

दैत्यः, आदित्यः, बाहीकः, औत्सः, पौंस्नः, गार्ग्यः, दाक्षिः, वैश्वामित्रः।

चतुर्दश इकाई
तद्धित-2

संरचना

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देश्य

14.3 वर्णित प्रत्यय

14.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित तद्धितप्रकरण के 1029 से 1125 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

14.5 सारांश

14.6 कठिन शब्दावली

14.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

14.8 सहायक ग्रन्थ

14.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

14.1 प्रस्तावना

पूर्व इकाई में तद्धित प्रकरण के 997 से 1028 सूत्रों एवं वार्तिकों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत तद्धित प्रकरण के अण्, ण्य, अञ्, नञ्, स्नञ्, यञ्, फक्, इञ्, ढक्, यत्, घ तथा ठक् प्रत्यय का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत इकाई में तद्धित प्रकरण के 1029 से 1125 सूत्रों एवं वार्तिकों की व्याख्या सहित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया को हल किया जाएगा। यह इकाई विद्यार्थियों को तद्धितप्रकरण के सूत्रों एवं उनके उदाहरणों को समझने में सहायक सिद्ध होगी। इसे आप सभी ध्यानपूर्वक देखें।

14.2 उद्देश्य

इस अध्याय के पश्चात् आप जानने में सक्षम होंगे-

- तद्धित प्रत्यय के अन्तर्गत आने वाले ण्य, अण्, ट्यण्, डामहच्, तल्, वुन्, घ, ख तथा ठक् प्रत्यय की सिद्धि प्रक्रिया।
- इसके अन्तर्गत सभी सूत्रों के अर्थ।
- सभी सूत्रों के अन्तर्गत आने वाले उदाहरणों को भी सिद्ध कर सकेंगे।

14.3 वर्णित प्रत्यय

इस इकाई के अन्तर्गत ण्य, अण्, ट्यण्, डामहच्, तल्, वुन्, घ, ख तथा ठक् प्रत्यय का वर्णन किया जायेगा।

14.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित तद्धितप्रकरण के 1029 से 1125 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- **कुरुनादिभ्यो ण्यः**

कुरु शब्द या नकारादिशब्द जब जनपद और क्षत्रिय दोनों के वाचक हों तो उनसे अपत्य अर्थ में तद्धितसंज्ञक ण्य प्रत्यय होता है।

- **कौरव्यः (कुरोः अपत्यम्)**

कुरु घस् इस अलौकिक विग्रह में 'कुरुनादिभ्यो ण्यः' सूत्र से ण्य प्रत्यय हुआ।

कुरु घस् ण्य	चुटू से ण् की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप होकर
कुरु घस् य	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक्
कुरु य	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से उ की आदिवृद्धि
कौरु य	'ओर्गुणः' से उ को गुण होकर
कौरो य	'वान्तो यि प्रत्यये' सूत्र से ओ का अव् आदेश
कौर् अव् य	वर्ण सम्मेलन करने पर
कौरव्य	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
कौरव्य सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
कौरव्यः	सिद्ध हुआ।

- **नैषध्यः (निषधस्य अपत्यम्)**

निषध घस् इस अलौकिक विग्रह में नकारादि होने के कारण 'कुरुनादिभ्यो ण्यः' सूत्र से ण्य प्रत्यय हुआ।

निषध घस् ण्य	चुटू से ण् की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप होकर
निषध घस् य	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुब्लुक्
निषध य	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से इ को ऐ आदिवृद्धि
नैषध य	'यस्येति च' सूत्र से ध के अ का लोप
नैषध् य	वर्ण सम्मेलन करने पर
नैषध्य	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
नैषध्य सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
नैषध्यः	सिद्ध हुआ।

- **तेन रक्तं रागात्**

  उससे रंगा हुआ इस अर्थ में तृतीयान्त रंगवाचक शब्द से अण् प्रत्यय होता है।

- **काषायम् (काषायेण रक्तम्)**

कषाय टा इस अलौकिक विग्रह में 'तेन रक्तं रागात्' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ।

कषाय टा अण्	ण् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप करके
कषाय टा अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक् करके
कषाय अ	'तद्धितेष्वचामादेः' से आदिवृद्धि होकर
काषाय अ	'यस्येति च' से यकार के अ का लोप

काषाय् अ	वर्ण सम्मेलन करने पर
काषाय	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
काषाय सु	'अतोऽम्' से सु को अम् आदेश
काषाय अम्	'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप होकर
काषायम्	सिद्ध हुआ।

- **संस्कृतं भक्षाः**

सप्तम्यन्त समर्थ प्रातिपदिक से 'उससे संस्कार किया गया' इस अर्थ में तद्धिसंज्ञक अण् प्रत्यय होता है परन्तु संस्कृत पदार्थ भक्ष अर्थात् खाने की वस्तु होनी चाहिए।

- **भ्राष्ट्राः (भ्राष्ट्रेषु संस्कृताः भक्षाः)**

भ्राष्ट्र सुप् इस अलौकिक विग्रह में 'संस्कृतं भक्षाः' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ।

भ्राष्ट्र सुप् अण्	ण् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप करके
भ्राष्ट्र सुप् अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक् करके
भ्राष्ट्र अ	'यस्येति च' से ट्र के अ का लोप
भ्राष्ट्् अ	वर्ण सम्मेलन करने पर
भ्राष्ट्र	एकदेशविकृतन्याय से जस् विभक्ति
भ्राष्ट्र जस्	'चुटू' से ज् की इत्संज्ञा तस्य लोपः से उसका लोप होकर
भ्राष्ट्र अस्	'अकः सवर्णे दीर्घः' से दीर्घ होकर
भ्राष्ट्रास्	रुत्व विसर्ग होकर
भ्राष्ट्राः	सिद्ध हुआ।

- **साऽस्य देवता**

देवतावाचक प्रथमान्त समर्थ प्रातिपदिक से 'वह इसका देवता है' इस अर्थ में अण् प्रत्यय होता है।

- **ऐन्द्रम् (इन्द्रः देवता अस्य)**

इन्द्र सु इस अलौकि अलौकिक विग्रह में 'साऽस्य देवता' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ।

इन्द्र सु अण्	ण् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप करके
इन्द्र सु अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक् करके
इन्द्र अ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदिवृद्धि
ऐन्द्र अ	'यस्येति च' से द्र के अ का लोप
ऐन्द् र् अ	वर्ण सम्मेलन करने पर
ऐन्द्र	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
ऐन्द्र सु	'अतोऽम्' से सु को अम्

ऐन्द्र अम्	'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप
ऐन्द्रम्	सिद्ध हुआ।

- **पाशुपतम् (पशुपतिः देवता अस्य)**

पशुपति सु इस अलौकिक विग्रह में 'अश्वपत्यादिभ्यश्च' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ।

पशुपति सु अण्	ण् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप करके
पशुपति सु अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक् करके
पशुपति अ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदिवृद्धि
पाशुपति अ	'यस्येति च' से इ का लोप
पाशुपत् अ	वर्ण सम्मेलन करने पर
पाशुपत	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
पाशुपत सु	'अतोऽम्' से सु को अम् आदेश
पाशुपत अम्	'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप होकर
पाशुपतम्	सिद्ध हुआ।

- **सोमाट् ट्यण्**

  प्रथमान्त समर्थ प्रातिपदिक सोम से 'वह इसका देवता है' इस अर्थ में ट्यण् प्रत्यय होता है।

- **सौम्यम् (सोमः देवता अस्य)**

सोम सु इस अलौकिक विग्रह में 'सोमाट् ट्यण्' सूत्र से ट्यण् प्रत्यय हुआ। ट् की चुटू से तथा ण् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उनका लोप करके य शेष रहता है। शेषकार्य पूर्ववत्।

- **पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः**

  पिता के भ्राता अर्थात् चाचा अर्थ में पितृव्य, माता के भ्राता अर्थात् मामा अर्थ में मातुल, माता के पिता अर्थात् नाना अर्थ में मातामह और पिता के पिता अर्थात् दादा अर्थ में पितामह का निपातन किया जाता है।

- **पितृव्यः (पितुः भ्राता)**

पितृ घस् इस अलौकिक विग्रह में व्यत् प्रत्यय हुआ। अनुबन्ध लोप करने के पश्चात् पितृव्य बनता है। शेष कार्य पूर्ववत्। मातुलः (मातुः भ्राता) मातृ घस् इस अलौकिक विग्रह में डुलच् प्रत्यय हुआ। अनुबन्ध लोप करने पर मातृ उल शेष रहा। टेः इस सूत्र से ऋकार का लोप होने पर मातुल बनता है। शेष कार्य पूर्ववत्

- **मातामहः, पितामहः (मातुः पिता, पितुः पिता)**

मातृ घस्, पितृ घस्	इस अलौकिक विग्रह में डामहच् प्रत्यय हआ।
मातृ, पितृ डामहच्	ड् की 'चुटू' से तथा च् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उनका लोप करके आमह शेष रहा।
मातृ, पितृ आमह	'टेः' सूत्र से ऋकार का लोप होने पर

मात्, पित् आमह	वर्ण सम्मेलन करने पर
मातामह, पितामह	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
मातामह, पितामह सु	सु को रुत्व विसर्ग
मातामहः, पितामहः	सिद्ध हुआ।

- **भिक्षादिभ्योऽण्**

  षष्ठयन्त समर्थ भिक्षादि गणपठित प्रातिपदिकों से 'उसका समूह' अर्थ में तद्धितसंज्ञक अण् प्रत्यय होता है।

- **यौवनम् (युवतीनां समूहः)**

युवति आम् इस अलौकिक विग्रह में 'भिक्षादिभ्योऽण' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ।

युवति आम् अण्	ण् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' से उसका लोप करके अ शेष रहा।
युवति आम् अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
युवति अ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदिवृद्धि
यौवति अ	'भस्याढे तद्धिते' से युवति को पुम्वत्
युवन् अ	तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदिवृद्धि
यौवन् अ	वर्ण सम्मेलन करने पर
यौवन	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
यौवन सु	अतोऽम् से सु को अम् आदेश
यौवन अम्	अमिपूर्वः से पूर्वरूप
यौवनम्	सिद्ध हुआ।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. कौरव्यः में प्रत्यय है?
2. नैषध्यः में ण्य प्रत्यय विधायक सूत्र है?
3. तेन रक्तं रागात् सूत्र से प्रत्यय होता है?
4. ऐन्द्रम् में अण् विधायक सूत्र है?
5. यौवनम् में आदिवृद्धि करने वाला सूत्र है?

- **ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्**

  ग्राम, जन और बन्धु इन षष्ठयन्त समर्थ प्रातिपदिकों से समूह अर्थ में तद्धितसंज्ञक तल् प्रत्यय होता है।

- **ग्रामता, जनता, बन्धुता (ग्रामाणां समूहः, जननां समूहः, बन्धूनां समूहः)**

ग्राम, जन, बन्धु घस् इस अलौकिक विग्रह में 'ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्' सूत्र से तल् प्रत्यय हुआ।

ग्राम, जन, बन्धु घस् तल्	ल् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
ग्राम, जन, बन्धु घस् त	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
ग्राम, जन, बन्धु त	वर्ण सम्मेलन करने पर
ग्रामत, जनत, बन्धुत	'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से टाप् प्रत्यय
ग्रामत, जनत, बन्धुत टाप्	ट् की चुटू से और प् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर
ग्रामत, जनत, बन्धुत आ	'अकः सवर्णे दीर्घः' से दीर्घ होकर
ग्रामता, जनता, बन्धुता	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
ग्रामता, जनता, बन्धुता सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से सु के उ की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप करके स् शेष रहा
ग्रामता, जनता, बन्धुता स्	'हलघ्याब्भ्योदीर्घात् सुतिस्य पृक्तं हल्' से स् का लोप
ग्रामता, जनता, बन्धुता	सिद्ध हुआ।

- **गजसहायाभ्यां चेति वक्तव्यम्**
  गज और सहाय इन षष्ठयन्त समर्थ प्रातिपदिकों से भी समूह अर्थ में तल् प्रत्यय होता है।

- **गजता, सहायता (गजानां समूहः, सहायानां समूहः)**

गज, सहाय घस् इस अलौकिक विग्रह में 'गजसहायाभ्यां चेति वक्तव्यम्' इस वार्तिक से तल् प्रत्यय हुआ।

गज, सहाय घस् तल्	ल् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
गज, सहाय घस् त	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
गज, सहाय त	वर्ण सम्मेलन करने पर
गजत, सहायत	'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से टाप् प्रत्यय
गजत, सहाय टाप्	ट् की चुटू से और प् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर
गजत, सहाय आ	'अकः सवर्णे दीर्घः' से दीर्घ होकर
गजता, सहायता	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
गजता, सहायता सु	'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से सु के उ की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप करके स् शेष रहा
गजता, सहायता स्	'हलघ्याब्भ्योदीर्घात् सुतिस्य पृक्तं हल्' से स् का लोप
गजता, सहायता	सिद्ध हुआ।

- **तदधीते तद्वेद**

  उसे पढ़ता है, उसे जानता है इन अर्थों में द्वितीयान्त समर्थ प्रातिपदिक से अण् प्रत्यय होता है।

- **नय्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वो तु ताभ्यामैच्**

  पदान्त यकार वकार से परे अच् की वृद्धि नहीं होती किन्तु उनसे पूर्व के वर्णों को ऐच् अर्थात् ऐ, औ का क्रमशः आगम होता है।

- **वैयाकरणः (व्याकरणम् अधीते वेत्ति वा)**

व्याकरण अम् इस अलौकिक विग्रह में 'तदधीते तद्वेद' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ।

व्याकरण अम् अण्	ण् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
व्याकरण अम् अ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
व्याकरण अ	'नय्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वो तु ताभ्यामैच्' सूत्र से य से पूर्व ऐ का आगम
व् ऐ याकरण अ	वर्ण सम्मेलन करने पर
वैयाकरण अ	'यस्येति च' से ण् के अ का लोप होकर
वैयाकरण् वैयाकरण	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
वैयाकरण सु	रुत्व विसर्ग करने पर
वैयाकरणः	सिद्ध हुआ।

- **क्रमादिभ्यो वुन्**

  द्वितीयान्त समर्थ क्रम आदि प्रातिपदिकों से पढ़ता है, जानता है अर्थों में वुन् प्रत्यय होता है।

- **शिक्षकः (शिक्षाम् अधीते, शिक्षां वेद)**

शिक्षा अम् अलौकिक विग्रह में 'क्रमादिभ्यो वुन्' सूत्र से वुन् प्रत्यय हुआ।

शिक्षा अम् वुन्	न् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर
शिक्षा अम् वु	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
शिक्षा वु	'युवोरनाकौ' सूत्र से वु को अक आदेश
शिक्षा अक	'यस्येति च' से क्षा के आ का लोप होकर
शिक्ष् अक	वर्ण सम्मेलन करने पर
शिक्षक	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
शिक्षक सु	रुत्व विसर्ग करने पर
शिक्षकः	सिद्ध हुआ।

- **राष्ट्रावारपाराद् घखौ**

  शेष अर्थ में राष्ट्र और अवारपार शब्द से क्रमशः घ और ख प्रत्यय होते हैं।

- **राष्ट्रियः (राष्ट्रे जातः)**

राष्ट्र ङि इस अलौकिक विग्रह में 'राष्ट्रावारपाराद् घखौ' सूत्र से घ प्रत्यय हुआ।

राष्ट्र ङि घ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
राष्ट्र घ	'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से घ् को इय् आदेश
राष्ट्र इय् अ	'यस्येति च' से र के अ का लोप
राष्ट् र् इय् अ	वर्ण सम्मेलन करने पर
राष्ट्रिय	एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
राष्ट्रिय सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
राष्ट्रियः	सिद्ध होता है।

- **तेन दीव्यति खनति जयति जितम्**

  खेलने वाल, खोदने वाला, जीतने वाला, जीता गया इन अर्थों में तृतीयान्त प्रातिपदिकों से ठक् प्रत्यय होता है।

- **आक्षिकः (अक्षैः दीव्यति, खनति, जयति, जितम्)**

अक्ष भिस् इस अलौकिक विग्रह में 'तेन दीव्यति खनति जयति जितम्' सूत्र से ठक् प्रत्यय हुआ।

अक्ष भिस् ठक्	क् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः स उसका लोप होकर
अक्ष भिस् ठ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
अक्ष ठ	'ठस्येकः' सूत्र से ठ को इक आदेश
अक्ष इक	'किति च' से आद्विवृद्धि
आक्ष इक	'यस्येति च' से क्ष के अ का लोप
आक्ष् इक	वर्ण सम्मेलन करने पर
आक्षिक	'एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
आक्षिक सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
आक्षिकः	सिद्ध होता है।

- **रक्षति**

  उसकी रक्षा करता है इस अर्थ में द्वितीयान्त प्रातिपदिक से ठक् प्रत्यय होता है।

- **सामाजिकः (समाजं रक्षति)**

समाज अम् इस अलौकिक विग्रह में 'रक्षति' सूत्र से ठक् प्रत्यय हुआ।

समाज अम् ठक्	क् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः स उसका लोप होकर
समाज अम् ठ	'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुब्लुक्
समाज ठ	'ठस्येकः' सूत्र से ठ को इक आदेश
समाज इक	'किति च' से आद्विवृद्धि

सामाज इक	'यस्येति च' से क्ष के अ का लोप
सामाज् इक	वर्ण सम्मेलन करने पर
सामाजिक	'एकदेशविकृतन्याय से सु विभक्ति
सामाजिक सु	सु को रुत्व विसर्ग करके
सामाजिकः	सिद्ध होता है।

- **धर्मं चरति**

  धर्म का आचरण करता है इस अर्थ में द्वितीयान्त प्रातिपदिक धर्म शब्द से ठक् प्रत्यय होता है।

- **धार्मिकः (धर्मं चरति)**

धर्म अम् इस अलौकिक विग्रह में 'धर्मं चरति' सूत्र से ठक् प्रत्यय हुआ। शेष सामाजिक के समान।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. जनता रूप किस प्रत्यय से बनता है?
2. सहायता में तल् प्रत्यय विधायक वार्तिक है?
3. तदधीते तद्वेद सूत्र का कार्य है?
4. वैयाकरणः रूप में प्रत्यय हुआ?
5. राष्ट्रियः में घ प्रत्यय विधायक सूत्र है?

14.5 सारांश

इस इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित तद्धित प्रकरण के 1029 से 1125 सूत्रों एवं वार्तिकों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत तद्धित प्रकरण के अण्, ण्य, अञ्, नञ्, स्नञ्, यञ्, फक्, इञ्, ढक्, यत्, घ तथा ठक् प्रत्यय का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत इकाई विद्यार्थियों को तद्धितों की सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझने में सहायक सिद्ध होगी। यह तद्धित प्रकरण की प्रथम इकाई है।

14.6 कठिन शब्दावली

- **पाञ्चालः**

  पाञ्चाल देश का राजा।

- **पौरवः**

  पूरु क्षत्रियों का राजा।

- **परिवृत**

  उससे घिरा हुआ।

- **भैक्षम**

  भिक्षा का समूह।

14.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. ण्य।

2. कुरुनादिभ्यो ण्यः।

3. अण् प्रत्यय।

4. सास्य देवता।

5. तद्धितेष्वचामादेः।

अभ्यास प्रश्न 2

1. तल् प्रत्यय।

2. गजसहायाभ्यां चेति वक्तव्यम्।

3. अण् प्रत्यय।

4. अण् प्रत्यय।

5. राष्ट्रावारपाराद् घखौ।

14.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

14.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-

नय्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच्, झयः, नद्यादिभ्यो ढक्, दिगादिभ्यो यत्, धर्मं चरति, सघ्खयाया अवयवे तयप्।

2. निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-

पञ्चालाः, दाक्षिणात्यः, अस्मदीयः, राष्ट्रियः, हास्तिकः, पार्थिवः, बान्धवः।

पञ्चदश इकाई
स्त्रीप्रत्यय-1

संरचना

15.1 प्रस्तावना

15.2 उद्देश्य

15.3 वर्णित प्रत्यय

15.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित तद्धितप्रकरण के 1247 से 1261 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

15.5 सारांश

15.6 कठिन शब्दावली

15.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

15.8 सहायक ग्रन्थ

15.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

15.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों पिछली इकाई में आपने तद्धित प्रकरण का अध्ययन किया। प्रस्तुत इकाई में आप स्त्री प्रत्यय का अध्ययन करेंगे। इसमें लघुसिद्धान्तकौमुदी के स्त्रीप्रत्यय प्रकरण के अन्तर्गत पाठ्यक्रम में निर्धारित टाप्, ङीप्, ङीष् तथा चाप् प्रत्यय का वर्णन किया जा रहा है। इस इकाई में सूत्र सहित प्रत्यय को समझाने का प्रयास किया गया है। इसे आप सभी ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।

15.2 उद्देश्य

इस इकाई के पश्चात् आप -

- टाप् प्रत्यय को सिद्ध कर सकेंगे।
- ङीप् प्रत्यय को जानने में सक्षम होंगे।
- ङीष् प्रत्यय को सिद्ध कर सकेंगे।

15.3 वर्णित प्रत्यय

प्रस्तुत इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित स्त्रीप्रत्यय के अन्तर्गत टाप्, ङीप् तथा ङीष् प्रत्यय का वर्णन किया जाएगा।

15.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित तद्धितप्रकरण के 1247 से 1261 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

टाप् प्रत्यय

- **स्त्रियाम्**

यह अधिकार सूत्र है।

➢ **अजाद्यतष्टाप्**

अज आदि गण में पढ़े गए शब्द अथवा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् प्रत्यय होता है।

- **अजा (बकरी)**

यह अज अजादिगणीय शब्द है। अतः अजाद्यतष्टाप् से टाप् प्रत्यय हुआ।

अज + टाप् ट् की चुटू तथा प् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके आ शेष रहा।

अज + आ अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ होकर

अजा प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय हुआ।

अजा + सु उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

अजा + स् अपृक्त एकाल् प्रत्ययः सूत्र से अपृक्तसंज्ञा होकर हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्त संज्ञक हल् स् का लोप होकर

अजा सिद्ध हुआ।

- **एडका** (मादा भेड़) एडक शब्द से अजाद्यतष्टाप् से टाप् प्रत्यय हुआ

एडक + टाप् ट् की चुटू तथा प् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके आ शेष रहा।

एडक + आ अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ होकर

एडका प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय हुआ।

एडका + सु उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

एडका + स् अपृक्त एकाल् प्रत्ययः सूत्र से अपृक्तसंज्ञा होकर हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

एडका सिद्ध हुआ।

- **अश्वा** अश्व शब्द से यह अज अजादिगणीय शब्द है। अतः अजाद्यतष्टाप् से टाप् प्रत्यय हुआ।

अश्व + टाप् ट् की चुटू तथा प् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके आ शेष रहा।

अश्व + आ अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ होकर

अश्वा प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय हुआ।

अश्वा + सु उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

अश्वा + स् अपृक्त एकाल् प्रत्ययः सूत्र से अपृक्तसंज्ञा होकर हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

अश्वा सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार चटक से चटका, मूषक से मूषिका, होड से होडा (कन्या), मन्द से मन्दा (कन्या) विलात से विलाता (कन्या), गङ्ग से गङ्गा तथा सर्व से सर्वा बना सकते हैं।

- **त्रिफला** त्रिफल में संख्यापूर्व होने से द्विगोः सूत्र से ङीप् प्रत्यय होना चाहिए था किन्तु इस शब्द के अजादिगण में पाठ होने के कारण इसको बाधकर अजाद्यष्टाप् से टाप् हुआ।

त्रिफल त्रिफल में अजाद्यष्टाप् से टाप् प्रत्यय।

त्रिफल+टाप् ट् की चुटू तथा प् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके आ शेष रहा।

त्रिफल+आ अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ होकर

त्रिफला प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय हुआ।

त्रिफला+सु उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

त्रिफला+स् हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से स् का लोप होकर

त्रिफला सिद्ध हुआ।

- **एता** एत शब्द से अजाद्यष्टाप् से टाप् प्रत्यय।

एत+टाप् ट् की चुटू तथा प् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके आ शेष रहा।

एत+आ अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ होकर

एता प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय हुआ।

एता+सु उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

एता+स् हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से स् की का लोप होकर

एता सिद्ध हुआ।

- **रोहिता** रोहित शब्द से अजाद्यष्टाप् से टाप् प्रत्यय।

रोहित+टाप् ट् की चुटू तथा प् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके आ शेष रहा।

रोहित+आ अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ होकर

रोहिता प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय हुआ।

रोहिता+सु उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

रोहिता+स् हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से स् का लोप होकर

रोहिता सिद्ध हुआ।

- **गोपालिका** गोपालक शब्द से 'पालकान्तान्न' वार्तिक से ङीष् प्रत्यय का निषेध कर 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से टाप् प्रत्यय

गोपालक+टाप् ट् की चुटू तथा प् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके आ शेष रहा।

गोपालक+आ प्रत्ययस्थात् कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः इस सूत्र से ल के अकार को इकार आदेश

गोपालिक+आ अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ होकर

गोपालिका प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय हुआ।

गोपालिका+सु   उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

गोपालिका+स्   हल्ड्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से स् का लोप होकर

गोपालिका   सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार अश्वपालिका, सर्विका, कारिका, मूषिका, पाचिकाआदि भी आप बना सकते हैं।

ङीप् प्रत्यय

- **उगितश्च**

जिसमें उक् अर्थात् उ, ट्ट, लृ की इत्संज्ञा हो गई हो ऐसे प्रातिपादिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है।

- **भवती** (आप, स्त्री, महिला)   भवत् शब्द से उगितश्च सूत्र से ङीप् प्रत्यय हुआ।

भवत्+ङीप्   लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

भवत्+ई=   भवती   प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

भवती+सु   उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

भवती+स्   हल्ड्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

भवती   सिद्ध हुआ।

- **भवन्ती** (होने वाली)   भू धातु से शतृ प्रत्यय

भू+शतृ   शतृ प्रत्यय में श के श् की लशक्वतद्धिते से तथा तृ में ट्ट की उपदेशेऽजनुनासिक इत् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उनका लोप करके अत् शेष रहता है।

भू+अत्   कर्तरि शप् से शप् प्रत्यय

भू+शप्+अत्   शप् के श् की लशक्वतद्धिते से तथा प् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उनका लोप करके अ शेष रहता है।

भू+अ+अत्   अतो गुणे से पररूप करके

भू+अत्   सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण होकर

भो+अत्   एचोऽयवायावः सूत्र से ओ को अव् आदेश

भ्+अव्+अत्=भवत्   भवत् से उगितश्च सूत्र से ङीप् प्रत्यय हुआ।

भवत्+ङीप्   लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

भवत्+ई   शप्श्यनोर्नित्यम् सूत्र से नुम् आगम

भव+नुम्+त्+ई नु के उ की उपदेशेऽजनुनासिक इत् से तथा म् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप करके न् शेष रहा।

भवन्ती प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

भवन्ती+सु उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

भवन्ती+स् हल्ड्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

भवन्ती सिद्ध हुआ।

- **पचन्ती** पच् धातु से शतृ प्रत्यय

पच्+शतृ शतृ प्रत्यय में श के श् की लशक्वतद्धिते से तथा तृ में ट्ट की उपदेशेऽजनुनासिक इत् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उनका लोप करके अत् शेष रहता है।

पच्+अत्=पचत्

पचत् पचत् से उगितश्च सूत्र से ङीप् प्रत्यय हुआ।

पचत्+ ङीप् लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

पचत्+ई शप्श्यनोर्नित्यम् सूत्र से नुम् आगम

पच+नुम्+त्+ई नु के उ की उपदेशेऽजनुनासिक इत् से तथा म् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उसका लोप करके न् शेष रहा।

पचन्ती प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

पचन्ती+सु उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

पचन्ती+स् हल्ड्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

पचन्ती सिद्ध हुआ।

- **दीव्यन्ती** दीव्यत् शब्द से उगितश्च सूत्र से ङीप् प्रत्यय करके दीव्यन्ती रूप सिद्ध होता है। शेष भवन्ती के समान।

➢ **टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः**

अनुपसर्जन जो टित्, ढ, अण्, द्वयसच्, दघ्नच्, मात्रच्, तयप्, ठक्, ठञ्, कञ् और क्वरप् जो प्रत्यय, ऐसे प्रत्ययअन्त में होने वाले अदन्त प्रातिपदिक, उनसे स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् होता है।

➢ **कुरुचरी** कुरुचर से 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय

कुरुचर+ङीप् लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

कुरुचर+ई कुरुचर की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

कुरुचर्+ई वर्ण सम्मेलन करके

कुरुचरी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

कुरुचरी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

कुरुचरी+स्	हल्ड्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् की का लोप हुआ

कुरुचरी	सिद्ध हुआ।

- **नदी** नद से 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय

नद+ङीप्	लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

नद+ई	नद की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

नद्+ई	वर्ण सम्मेलन करके

नदी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

नदी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

नदी+स्	हल्ड्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

नदी	सिद्ध हुआ।

इसी तरह देव से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय करने पर देवी बनता है।

- **सौपर्णेयी** **सौपर्णेय** 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय

सौपर्णेय+ङीप्	लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

सौपर्णेय+ई	सौपर्णेय की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

सौपर्णेय्+ई	वर्ण सम्मेलन करके

सौपर्णेयी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

सौपर्णेयी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

सौपर्णेयी+स्	हल्ड्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् की का लोप हुआ

सौपर्णेयी	सिद्ध हुआ।

- **ऐन्द्री** ऐन्द्र शब्द से 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय

ऐन्द्र+ङीप्	लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

ऐन्द्र+ई	ऐन्द्र की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

ऐन्द्र्+ई	वर्ण सम्मेलन करके

ऐन्द्री	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

ऐन्द्री+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

ऐन्द्री+स्	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

ऐन्द्री	सिद्ध हुआ।

- **औत्सी** औत्स शब्द से 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय

औत्स+ङीप्	लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

औत्स+ई	औत्स की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

औत्स्+ई	वर्ण सम्मेलन करके

औत्सी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

औत्सी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

औत्सी+स्	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

औत्सी	सिद्ध हुआ।

- **ऊरुद्वयसी**	ऊरुद्वयस शब्द से 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय

ऊरुद्वयस+ङीप्	लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

ऊरुद्वयस+ई	ऊरुद्वयस की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

ऊरुद्वयस्+ई	वर्ण सम्मेलन करके

ऊरुद्वयसी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

ऊरुद्वयसी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

ऊरुद्वयसी+स्	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

ऊरुद्वयसी	सिद्ध हुआ।

इसी तरह उक्त सूत्र से ऊरुदघ्नी और ऊरुमात्री शब्द सिद्ध होते हैं।

- **पञ्चतयी** पञ्चतय से 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय

पञ्चतय+ङीप्	लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

पञ्चतय+ई	पञ्चतय की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

पञ्चतय्+ई	वर्ण सम्मेलन करके

पञ्चतयी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

पञ्चतयी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

पञ्चतयी+स्	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् की का लोप हुआ
पञ्चतयी	सिद्ध हुआ।

- **आक्षिकी** आक्षिक शब्द से 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय

आक्षिक+ङीप्	लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

आक्षिक+ई	आक्षिक की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

आक्षिक+ई	वर्ण सम्मेलन करके

आक्षिकी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

आक्षिकी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

आक्षिकी+स्	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

आक्षिकी	सिद्ध हुआ।

- **लावणिकी**	लावणिक 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय

लावणिक+ ङीप् लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

लावणिक+ई	लावणिक की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

लावणिक्+ई	वर्ण सम्मेलन करके

लावणिकी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

लावणिकी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

लावणिकी+स्	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

लावणिकी	सिद्ध हुआ।

- **यादृशी**

यादृश से	'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय

यादृश+ ङीप्	लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

यादृश+ई	यादृश की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

यादृश्+ई	वर्ण सम्मेलन करके

यादृशी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

यादृशी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

यादृशी+स्	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

यादृशी सिद्ध हुआ।

- **इत्वरी**

इत्वर से 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दध्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय

इत्वर+ङीप् लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

इत्वर+ई इत्वर की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

इत्वर्+ई वर्ण सम्मेलन करके

इत्वरी प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

इत्वरी+सु उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

इत्वरी+स् हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

इत्वरी सिद्ध हुआ।

- **नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसंख्यानम्**

नञ्-प्रत्ययान्त, स्नञ्-प्रत्ययान्त, ईकक्-प्रत्ययान्त और ख्यनु-प्रत्ययान्त प्रातिपदिकों से तथा तरुण, तलुन प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है।

- **स्त्रैणी** स्त्रैण से 'नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसंख्यानम्' इस वार्तिक से ङीप् प्रत्यय हुआ।

स्त्रैण+ङीप् लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

स्त्रैण+ई स्त्रैण की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

स्त्रैण्+ई वर्ण सम्मेलन करके

स्त्रैणी प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

स्त्रैणी+सु उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

स्त्रैणी+स् हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

स्त्रैणी सिद्ध हुआ।

- **पौंस्नी** पौंस्न से 'नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसंख्यानम्' इस वार्तिक से ङीप् प्रत्यय हुआ।

पौंस्न+ङीप् लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

पौंस्न+ई पौंस्न की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

पौंस्न्+ई वर्ण सम्मेलन करके

पौंस्नी प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

पौंस्नी+सु उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

पौंस्नी+स् हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

पौंस्नी सिद्ध हुआ।

- **शाक्तीकी, याष्टीक** शाक्तीक तथा याष्टीक से 'नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसंख्यानम्' इस वार्तिक से ङीप् प्रत्यय हुआ।

शाक्तीक,याष्टीक+ङीप् लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

शाक्तीक,याष्टीक+ई शाक्तीक और याष्टीक की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

शाक्तीक्,याष्टीक्+ई वर्ण सम्मेलन करके

शाक्तीकी,याष्टीकी प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

शाक्तीकी,याष्टीकी+सु उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

शाक्तीकी,याष्टीकी+स् हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

शाक्तीकी,याष्टीकी सिद्ध हुए।

आढ्यङ्करण, तरुण और तलुन से भी उक्त वार्तिक से ङीप् प्रत्यय करने पर आढ्यङ्करणी, तरुणी और तलुनी सिद्ध होते हैं।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. एडका में प्रत्यय है?
2. गोपालिका में टाप् विधायक सूत्र है?
3. भवन्ती में प्रत्यय हुआ ?
4. पचन्ती में ङीप् विधायक सूत्र है?
5. यादृशी में ङीप् प्रत्यय किस सूत्र से हुआ?

- **यञश्च**

स्त्रीत्व की विवक्षा में यञ् प्रत्ययान्त प्रातिपदिक से परे ङीप् प्रत्यय होता है।

- **हलस्तद्धितस्य**

हल् से परे तद्धित के उपधाभूत यकार का लोप होता है, ईकार के परे होने पर।

- गार्गी गर्ग शब्द से गर्गादिभ्यो यञ् सूत्र से यञ् प्रत्यय

गर्ग+यञ्	यञ् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके य शेष रहता है।
गर्ग+य	तद्धितेष्वचामादेः सूत्र से आदिवृद्धि करने पर
गार्ग+य	गार्ग की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके
गा+र्+ग्+य	वर्ण सम्मेलन करके
गार्ग्य	स्त्रीत्व की विवक्षा में यञश्च सूत्र से ङीप् प्रत्यय हुआ।
गार्ग्य+ङीप्	लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।
गार्ग्य+ई	गार्ग्य की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके
गार्ग्य्+ई	वर्ण सम्मेलन करके
गार्ग्य्+ई	हलस्तद्धितस्य से गार्ग्य् के य् का लोप होने पर
गार्ग्+ई	वर्ण सम्मेलन करने पर
गार्गी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया
गार्गी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा
गार्गी+स्	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर
गार्गी	सिद्ध हुआ।

- **प्राचां ष्फ तद्धितः**

  यञन्त से ष्फ प्रत्यय हो स्त्रीलिङ्ग में और वह तद्धित संज्ञक हो।

- **वयसि प्रथमे**

प्रथम अवस्था अर्थात् कौमार अवस्था के सूचक शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् होता है।

- **द्विगोः**

  अदन्त द्विगु से ङीप् प्रत्यय हो।

- **कुमारी** कुमार शब्द से वयसि प्रथमे सूत्र से ङीप् प्रत्यय हुआ।

कुमार+ ङीप्	लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।
कुमार+ई	कुमार की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके
कुमार्+ई	वर्ण सम्मेलन करके
कुमारी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया
कुमारी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा
कुमारी+स्	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर
कुमारी	सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार किशारी भी सिद्ध होता है।

- **द्विगोः**

अदन्त द्विगु समास से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है।

- **त्रिलोकी** त्रिलोक शब्द से द्विगोः सूत्र से ङीप् प्रत्यय हुआ।

त्रिलोक+ङीप् लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

त्रिलोक+ई त्रिलोक की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

त्रिलोकी+ई वर्ण सम्मेलन करके

त्रिलोकी प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

त्रिलाकी+सु उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

त्रिलोकी+स् हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

त्रिलोकी सिद्ध हुआ।

- **वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः**

वर्णवाची जो अनुदात्त तकारोपध शब्द, तदन्त अनुपसर्जन प्रातिपदिक से परे स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से ङीप् प्रत्यय तथ्ज्ञा शब्द में विद्यमान तकार के स्थान पर नकारादेश होता है।

- **एनी** एत शब्द से 'वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय तथा एत के तकार को नकार आदेश हुआ।

एन+ङीप् लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

एन+ई एन की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

एन्+ई वर्ण सम्मेलन करके

एनी प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

एनी+सु उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

एनी+स् हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

एनी सिद्ध हुआ।

- **रोहिणी** रोहित शब्द से 'वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय तथा रोहित के तकार को नकार आदेश हुआ।

रोहिन+ङीप् लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से उसका लोप करके ई शेष रहा।

रोहिन+ई	रोहिन की भसंज्ञा करके अन्त्य अकार का 'यस्येति च' से लोप करके

रोहिन्+ई	वर्ण सम्मेलन करके

रोहिनी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

रोहिनी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा

रोहिनी+स्	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर

रोहिनी	अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि सूत्र से न को णत्व होकर

रोहिणी	सिद्ध हुआ।

ङीष् प्रत्यय

- **षिद्गौरादिभ्यश्च**

जिस शब्द में षकार की इत्संज्ञा हो गई हो ऐसे शब्दों से और गौर आदि गणपठित शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

- **गार्ग्यायणी**

गर्ग शब्द से 'गर्गादिभ्यो यञ्' सूत्र से यञ् प्रत्यय हुआ।

गर्ग+यञ्	ञ् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' सं उसका लोप करके

गर्ग+य	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदिवृद्धि

गार्ग+य	'यस्येति च' सूत्र से ग के अ का लोप होकर

गार्ग्य	'प्राचां ष्फ तद्धितः' सूत्र से ष्फ प्रत्यय हुआ

गार्ग्य+ष्फ	'ष प्रत्ययस्य' से ष् की इत्संज्ञा होकर लोप हुआ

गार्ग्य+फ	'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से फ् को आयन् आदेश

गार्ग्य+आयन्+अ	'यस्येति च' से य के अ का लोप होकर

गार्ग्य्+आयन्+अ	वर्ण सम्मेलन करने पर

गार्ग्यायन	'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से न को ण आदेश

गार्ग्यायण	'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से घीष् प्रत्यय

गार्ग्यायण ङीष्	ङ् की 'लशक्वतद्धिते', ष् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उनका लोप कर ई शेष रहता है।

गार्ग्यायण+ई	'यस्येति च' से ण के अ का लोप होकर

गार्ग्यायण्+ई	वर्णसम्मेलन करने पर

गार्ग्यायणी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु विभक्ति करने पर

गार्ग्यायणी+सु	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् सुब्लुक् होकर

गार्ग्यायणी सिद्ध हुआ।

- **गौरी**

गौर शब्द से 'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से ङीष् प्रत्यय

गौर+ङीष्	ङ् की 'लशक्वतद्धिते', ष् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उनका लोप कर ई शेष रहता है।
गौर+ई	'यस्येति च' से र के अ का लोप होकर
गौर्+ई	वर्णसम्मेलन करने पर
गौरी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु विभक्ति करने पर
गौरी+सु	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् सुब्लुक् होकर
गौरी	सिद्ध हुआ।

- **नर्तकी**

नृत् धातु से 'शिल्पिनि ष्वुन्' सूत्र से ष्वुन् प्रत्यय हुआ।

नृत्+ष्वुन्	न् की 'हलन्त्यम्' से और ष् की 'षः प्रत्ययस्य' सूत्र से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उसका लोप कर वु शेष रहा।
नृत्+वु	'युवोरनाकौ' सूत्र से वु को अक आदेश
नृत्+अक	ऋ को अर् गुण होकर
न्+अर्+त्+अक	वर्ण सम्मेलन करने पर
नर्तक	'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से घीष् प्रत्यय
नर्तक+ङीष्	ङ् की 'लशक्वतद्धिते', ष् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से उनका लोप कर ई शेष रहता है।
नर्तक+ई	'यस्येति च' से र के अ का लोप होकर
नर्तक्+ई	वर्णसम्मेलन करने पर
नर्तकी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु विभक्ति करने पर
नर्तकी+सु	'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से सुब्लुक् होकर
नर्तकी	सिद्ध हुआ।

- **वोतो गुणवचनात्**

ह्रस्व उकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व विवक्षा में वैकल्पिक ङीष् प्रत्यय होता है।

- **मृद्वी, मृदुः**

मृदु शब्द से 'वोतो गुणवचनात्' सूत्र से ङीष् प्रत्यय हुआ।

मृदु+ङीष्	ष् की हलन्त्यम् से और ङ् की लशक्वतद्धिते से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उनका लोप होकर
मृदु+ई	'इकोयणचि' सूत्र से उ को व्
मृद्+व्+ई	वर्ण सम्मेलन करने पर
मृद्वी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया
मृद्वी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा
मृद्वी+स्	हल्ड्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर
मृद्वी	सिद्ध हुआ।

मृदु से अभाव पक्ष में रुत्व विसर्ग करने पर मृदुः सिद्ध होता है।

- **बह्वादिभ्यश्च**

  बहु आदि गण में पठित प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।

- **बह्वी, बहुः**

बहु शब्द से	'बह्वादिभ्यश्च' सूत्र से ङीष् प्रत्यय हुआ।
बहु+ङीष्	ष् की हलन्त्यम् से और ङ् की लशक्वतद्धिते से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उनका लोप होकर
बहु+ई	'इकोयणचि' सूत्र से उ को व्
बह्+व्+ई	वर्ण सम्मेलन करने पर
बह्वी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया
बह्वी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा
बह्वी+स्	हल्ड्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर
बह्वी	सिद्ध हुआ।

बहु से अभाव पक्ष में रुत्व विसर्ग करने पर बहुः सिद्ध होता है।

- **रात्री, रात्रिः**

रा धातु से	'रा शादिभ्यस्त्रिप्' सूत्र से त्रिप् प्रत्यय हुआ।
रा+त्रिप्	प् की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से उसका लोप होकर त्रि शेष रहा।
रा+त्रि	'कृदिकारादक्तिनः' वार्तिक से विकल्प से ङीष् प्रत्यय हुआ।
रात्रि+ङीष्	ष् की हलन्त्यम् से और ङ् की लशक्वतद्धिते से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से उनका लोप होकर

रात्रि+ई	'यस्येति च' सूत्र से त्रि के इ का लोप होकर
रात्+ई	वर्ण सम्मेलन करने पर
रात्री	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया
रात्री+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा
रात्री+स्	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर
रात्री	सिद्ध हुआ।

ङीष् न होने पर रात्रि से स्वादिकार्य करने पर रात्रिः सिद्ध होता है।

- **पुंयोगादाख्यायाम्**

पुरुष के समान सम्बन्ध के कारण जब पुंवाचक शब्द स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है तो उस अदन्त शब्द से ङीष् प्रत्यय होता है।

- **गोपी**

गोप शब्द से 'पुंयोगादाख्यायाम्' सूत्र से ङीष् प्रत्यय हुआ। शेष कार्य पूर्ववत्।

- **पालकाऽन्तात् न**

  पालकान्त शब्द से पुंयोग में ङीन् न हो।

- **प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्याऽत 'इद्' आप्य्सुपः**

  प्रत्ययस्थ ककार से पूर्व अकार को इकार आदेश हो आप् परे रहते, यदि वह आप् प्रत्यय सुप् से पर न हो।

- **सूर्याद् देवतायां चाप् वाच्यः**

  देवता जाति की स्त्री रूप अर्थ में पुंयोग में वर्तमान सूर्य शब्द से चाप् प्रत्यय हो।

- **सूर्या**

  यहाँ पुंयोग से स्त्री के अर्थ में वर्तमान सूर्य शब्द से सूर्याद् देवतायां चाप् वाच्यः सूत्र से चाप् प्रत्यय हुआ

सूर्य चाप्	इत्संज्ञा तथा लोप होने पर आ शेष
सूर्य आ	यस्येति च से सूर्य के य का अकार लोप
सूर्या	सिद्ध हुआ।

- **सूर्यागस्त्ययोश्छे च ङ्यां च यलोपः**

  सूर्य और अगस्त्य शब्दों के यकार का लोप हो च और ङी प्रत्यय परे रहते।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. यञश्च सूत्र से प्रत्यय होता है?
2. कुमारी में ङीप् प्रत्यय विधायक सूत्र है?

3. वर्णादनुदात्तात्तोपधातो नः सूत्र का कार्य है?
4. गार्ग्यायणी मे प्रत्यय हुआ?
5. सूर्या में चाप् प्रत्यय विधायक वार्तिक है?

15.5 सारांश

इस इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित स्त्रीप्रत्यय प्रकरण के 1247 से 1261 सूत्रों एवं वार्तिकों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत तद्धित प्रकरण के टाप्, ङीप्, ङीष् तथा चाप् प्रत्यय का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत इकाई विद्यार्थियों को तद्धितों की सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझने में सहायक सिद्ध होगी। यह तद्धित प्रकरण की प्रथम इकाई है।

15.6 कठिन शब्दावली

- **ऐन्द्री**
  इन्द्र जिसका देवता है।
- **पञ्चतयी**
  पाँच अवयय वाली।
- **आक्षिकी**
  पासों से खेलने वाली।

15.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. टाप्।
2. अजाद्यतष्टाप्।
3. शतृ।
4. उगितश्च।
5. टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः।

अभ्यास प्रश्न 2

1. ङीप्
2. वयसी प्रथमे।
3. तकार को नकारादेश।
4. यञ्।
5. सूर्याद् देवतायां चाप् वाच्यः

15.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

15.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-

अजाद्यतष्टाप। उगितश्च। हलस्तद्धितस्य। प्राचां ष्फ तद्धितः। षिद् गौरादिभ्यश्च। वयसि प्रथमे।

2. निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-

अजा, सर्वा, भवन्ती, कुरुचरी, पञ्चतयी, यादृशी, शक्तीकी, गार्गी, अनड्वाही, त्रिलोकी, रोहिणी, रात्री, रात्रिः।

षोडश इकाई
स्त्रीप्रत्यय-2

संरचना

16.1 प्रस्तावना

16.2 उद्देश्य

16.3 वर्णित प्रत्यय

16.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित तद्धितप्रकरण के 1262 से 1275 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

16.5 सारांश

16.6 कठिन शब्दावली

16.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

16.8 सहायक ग्रन्थ

16.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

16.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों पिछली इकाई में आपने स्त्री प्रत्ययों के अन्तर्गत टाप्, ङीप्, ङीष् तथा चाप् प्रत्ययों का अध्ययन किया। प्रस्तुत इकाई में आप स्त्री प्रत्ययों के शेष ऊङ्, ङीप्, ङीष् आदि प्रत्ययों का अध्ययन करेंगे। इस इकाई में सूत्र सहित प्रत्यय को समझाने का प्रयास किया गया है। इसे आप सभी ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।

16.2 उद्देश्य

इस इकाई के पश्चात् आप -

- ऊङ् प्रत्यय को सिद्ध कर सकेंगे।
- ङीप् प्रत्यय को जानने में सक्षम होंगे।
- ङीन् प्रत्यय को सिद्ध कर सकेंगे।

16.3 वर्णित प्रत्यय

प्रस्तुत इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित स्त्रीप्रत्यय के अन्तर्गत ऊङ्, ङीप् तथा ङीन् प्रत्यय का वर्णन किया जाएगा।

16.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित तद्धितप्रकरण के 1262 से 1275 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

➢ **इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्**

इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल और आचार्य इन बारह शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय एवं इनको ही आनुक् का आगम भी होता है।

- **इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी**

इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड शब्द से 'इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्' सूत्र से आनुक् आगम और ङीष् प्रत्यय हुआ।

इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड+आन्+ई	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से सवर्ण दीर्घ होकर
इन्द्रान्, वरुणान्, भवान्, शर्वान्, रुद्रान्, मृडान्+ई	'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से न को ण आदेश
इन्द्राण्, वरुणान्, भवान्, शर्वाण्, रुद्राण्, मृडान्+ई	वर्ण सम्मेलन करने पर
इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, रुद्राणी, मृडानी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया
इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, रुद्राणी, मृडानी+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा
इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, रुद्राणी, मृडानी+स्	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर
इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, रुद्राणी, मृडानी	सिद्ध हुआ।

- **हिमानी, अरण्यानी** (महद् हिमम्, महद् अरण्यम्)

हिम, अरण्य शब्द से 'हिमारण्ययोर्महत्त्वे' वार्तिक के अनुसार ' इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्' सूत्र से आनुक् आगम और ङीष् प्रत्यय हुआ।

हिम, अरण्य आन् ई	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से सवर्ण दीर्घ होकर
हिमान्, अरण्यान् ई	वर्ण सम्मेलन करने पर
हिमानी, अरण्यानी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया
हिमानी, अरण्यानी सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा
हिमानी, अरण्यानी स्	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर
हिमानी, अरण्यानी	सिद्ध हुआ।

- **यवानी** (दुष्टो यव अर्थात् दूषित जौ या अजवाइन)

यव शब्द से 'यवाद् दोषे' वार्तिक के अनुसार ' इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्' सूत्र से आनुक् आगम और ङीष् प्रत्यय हुआ।

यव आन् ई	'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से सवर्ण दीर्घ होकर

यवान् ई	वर्ण सम्मेलन करने पर
यवानी	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया
यवानी सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा
यवानी स्	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से अपृक्तसंज्ञक हल् स् का लोप होकर
यवानी	सिद्ध हुआ।

- **यवनानी** (यवनानां लिपिः) में यव शब्द से 'यवनाल्लिप्याम्' वार्तिक से उपरोक्त सूत्र से आनुक् और ङीष्

प्रत्यय किया। शेष् कार्य पूर्ववत्।

➢ **स्वाङ्गच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्**

उपधा में संयोग न हो ऐसे उपसर्जनसंज्ञक स्वांगवाची शब्द अन्त में हो ऐसे अदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।

- **अतिकेशी, चन्द्रमुखी** (केशान् अतिक्रान्ता, चन्द्र इव मुखं यस्याः)

➢ अतिकेश, चन्द्रमुख शब्द से 'स्वाङ्गच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्' सूत्र से ङीष् प्रत्यय हुआ।

अतिकेश, चन्द्रमुख ई	यस्येति च से अ लोप होकर
अतिकेश्, चन्द्रमुख् ई	वर्णसम्मेलन करने पर
अतिकेशी, चन्द्रमुखी	शेष कार्य पूर्ववत्।

➢ **जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्**

जो नित्य स्त्रीलिंग न हो और यकार भी उपधा में न हो ऐसे जातिवाचक प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है।

- **तटी, वृषली, कठी, बह्वृची**

तट, वृषल, कठ, बह्वृच शब्द से 'जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्' सूत्र से ङीष् प्रत्यय हुआ।

तट, वृषल, कठ, बह्वृच ई शेष कार्य पूर्ववत्।

➢ **इतो मनुष्यजातेः**

मनुष्यजातिवाचक "स्व इकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है।

- **दाक्षी**

दक्ष शब्द से	'अत इञ्' सूत्र से इ प्रत्यय हुआ।
दक्ष इ	'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदिवृद्धि होकर
दाक्ष इ	'यस्येति च' से अ लोप होकर
दाक्ष् इ	वर्ण सम्मेलन करने पर
दाक्षि	'इतो मनुष्यजातेः' सूत्र से ङीष् प्रत्यय हुआ।

दाक्षि ई	'यस्येति च' से इ का लोप होकर
दाक्ष् ई दाक्षी	शेष कार्य पूर्ववत्।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. इन्द्राणी में प्रत्यय है?
2. हिमानी में ङीष् प्रत्यय एवं आनुक् आगम विधायक सूत्र है?
3. यवानी में सवर्ण दीर्घ विधायक सूत्र है?
4. अतिकेशी में सूत्र है?
5. दाक्षी में इ प्रत्यय विधायक सूत्र है?

ऊङ् प्रत्यय

- **ऊङुतः**

जिसकी उपधा में अकार न हो ऐसे मनुष्यवाची उदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ऊङ् प्रत्यय होता है।

- **कुरूः** कुरु से कुरुनादिभ्यो ण्यः से ण्य प्रत्यय, उसका स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च से लुक् करके कुरु ही बना।

कुरु	ऊङुतः सूत्र से ऊङ् प्रत्यय
कुरु+ऊङ्	ङ् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तस्यलोपः से उसका लोप करके ऊ शेष रहा।
कुरु+ऊ	अकः सवर्णे दीर्घः सूत्र से दीर्घ होकर
कुरू	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया
कुरू+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा
कुरू+स्	ससजुषो रुः सूत्र से स् को रु
कुरू+रु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके र् शेष रहा
कुरू+र्	खरवसानयोविसर्जनीयः सूत्र से र् को विसर्ग होकर
कुरूः	सिद्ध हुआ।

- **पङ्गोश्च**

पङ्गु इस प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ऊङ् प्रत्यय होता है।

- पङ्गूः पङ्गु से पङ्गोश्च सूत्र से ऊङ् प्रत्यय

पङ्गु+ऊङ्	ङ् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तस्यलोपः से उसका लोप करके ऊ शेष रहा।

पङ्गु+ऊ	अकः सवर्णे दीर्घः सूत्र से दीर्घ होकर
पङ्गू	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया
पङ्गू+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा
पङ्गू+स्	ससजुषो रुः सूत्र से स् को रु
पङ्गू+रु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके र् शेष रहा
पङ्गू+र्	खरवसानयोविसर्जनीयः सूत्र से र् को विसर्ग होकर
पङ्गूः	सिद्ध हुआ।

- **श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च**

श्वशुर शब्द में स्त्रीत्व की विवक्षा में ऊङ् प्रत्यय के साथ उकार और अकार का लोप होता है।

- **श्वश्रूः** श्वशुर शब्द से 'श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च' इस वार्तिक से ऊङ् प्रत्यय तथा शु के उकार और र के अकार के लोप होने पर

श्वश्र्+ऊङ्	घ् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तस्यलोपः से उसका लोप करके ऊ शेष रहा।
श्वश्र्+ऊ	वर्ण सम्मेलन करने पर
श्वश्रू	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया
श्वश्रू+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा
श्वश्रू+स्	ससजुषो रुः सूत्र से स् को रु
श्वश्रू+रु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके र् शेष रहा
श्वश्रू+र्	खरवसानयोविसर्जनीयः सूत्र से र् को विसर्ग होकर
श्वश्रूः	सिद्ध हुआ।

- **ऊरूत्तरपदादौपम्ये**

जिसका पूर्वपद उपमानवाची तथा उत्तरपद ऊरु हो तो उससे स्त्रीत्व की विवक्षा में ऊङ् प्रत्यय होता है।

- **करभोरूः**

करभोरु से ऊरूत्तरपदादौपम्ये सूत्र से ऊङ् प्रत्यय

करभोरु+ऊङ्	ङ् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तस्यलोपः से उसका लोप करके ऊ शेष रहा।
करभोरु+ऊ	अकः सवर्णे दीर्घः सूत्र से दीर्घ होकर
करभोरू	प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय आया

करभोरू+सु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके स् शेष रहा
करभोरू+स्	ससजुषो रुः सूत्र से स् को रु
करभोरू+रु	उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सु के उ की इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप करके र् शेष रहा
करभोरू+र्	खरवसानयोविसर्जनीयः सूत्र से र् को विसर्ग होकर
करभोरूः	सिद्ध हुआ।

- **संहितशफलक्षणवामादेश्च**

संहित, शफ, लक्षण, वाम ये आदि में हों और ऊरू उत्तरपद में हो ऐसे प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ऊङ् प्रत्यय होता है।

- संहितोरूः, शफोरूः, लक्षणोरूः वामोरूः में संहितोरु, शफोरु, लक्षणोरु, वामोरु शब्द से

संहितशफलक्षणवामादेश्च सूत्र से ऊघ् प्रत्यय हुआ तथा शेष प्रक्रिया करभोरूः के समान होगी।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. ऊङुतः सूत्र क्या करता है?
2. कुरूः में प्रत्यय है?
3. पङ्गूः में ऊङ् प्रत्यय विधायक सूत्र है?
4. श्वश्रूः में प्रत्यय हुआ?
5. शफोरूः में ऊङ् प्रत्यय विधायक सूत्र है?

16.5 सारांश

इस इकाई में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित स्त्रीप्रत्यय प्रकरण के 1262 से 1275 सूत्रों एवं वार्तिकों की उदाहरण सहित सिद्धि दी गयी है। इसके अन्तर्गत तद्धित प्रकरण के ऊङ्, ङीप्, ङीष् तथा ङीन् प्रत्यय का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत इकाई विद्यार्थियों को स्त्री प्रत्यय की सिद्धि प्रक्रिया को सरलता से समझने में सहायक सिद्ध होगी। यह स्त्रीप्रत्यय प्रकरण की अन्तिम इकाई है।

16.6 कठिन शब्दावली

- **अपृक्त**

  'अपृक्त एकाल् प्रत्ययः' अर्थात् एक अल् (स्वर या व्यञ्जन) मात्र शेष प्रत्यय अपृक्त कहलाता है। जैसे - सु का स्, ति का त्, सि का स्।

- **प्रगृह्य**

  'ईदूदेद्विवचनम् प्रगृह्यम्' अर्थात् ईकारान्त, ऊकारान्त, एकारान्त द्विवचन पद प्रगृह्य कहलाते हैं।

- **अनुबन्ध**

  प्रत्ययों के आदि या अन्त में कुछ स्वर या व्यंजन इस कारण जुटे रहते हैं कि ऐसे प्रत्यय के होने पर गुण, वृद्धि, आगम, आदेश आदि कोई विशेष कार्य हो जाए, ऐसे वर्णों को अनुबन्ध कहते हैं।

16.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. ङीष्।
2. इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्।
3. अकः सवर्णे दीर्घः।
4. ङीष्।
5. अत इञ्।

अभ्यास प्रश्न 2

1. ऊङ् प्रत्यय।
2. ऊङ् प्रत्यय।
3. पङ्गोश्च।
4. ऊङ्।
5. संहितशफलक्षणवामादेश्च।

16.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

16.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों एवं वार्तिकों का अर्थ लिखिए और उदाहरण भी दीजिए-

इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्, ऊङुतः, वोतोगुणवचनात्, क्रीतात् करणपूर्वात्, जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्, यूनस्तिः।

2. निम्नलिखित उदाहरणों की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-

वरुणानि, भवानी, उपाध्यायनी, अर्या, चन्द्रमुखी, गौरमुखा, तटी, दाक्षी, हयी, मनुषी, मानुषी, वामोरूः, ब्राह्मणी।

सप्तदश इकाई

कारक प्रकरण – प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति

संरचना

17.1 प्रस्तावना

17.2 उद्देश्य

17.3 कारक

17.4 कारकों की विवक्षाधीनता

17.5 उपपद विभक्ति

17.6 कारक और विभक्ति

17.7 वर्णित विभक्ति

- स्वयं आकलन प्रश्न

  अभ्यास प्रश्न-1

  अभ्यास प्रश्न-2

17.8 सारांश

17.9 कठिन शब्दावली

17.10 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

17.11 सहायक ग्रन्थ

17.12 अभ्यासार्थ प्रश्न

17.1 प्रस्तावना

गत इकाईयों में आपने लघुसिद्धान्तकौमुदी का अध्ययन किया है। जिसके अन्तर्गत आपने सुप् विभक्तियों के विषय में पढ़ा। ये सुप् विभक्तियाँ सात हैं। सम्बोधन को मिलाकर इनकी संख्या आठ हो जाती है। ये विभक्तियाँ किन अर्थों में प्रयुक्त होती हैं, इस विषय का विवेचन इस इकाई में किया जायेगा।

17.2 उद्देश्य

इस इकाई के पश्चात् आप जानने में सक्षम होंगे-

- कारक शब्द का अर्थ।
- विभक्तियों की पहचान।
- विभिन्न विभक्तियों के सूत्र को समझने में सक्षम होंगे।

17.3 कारक

वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी के कारक प्रकरण में प्रयुक्त कारक शब्द का अर्थ है-करोति इति कारकम् - अर्थात् प्रातिपदिक का वह धर्म जो क्रिया की निवृत्ति में समर्थ होता है, कारक कहलाता है। वाक्य में जिन पदों

का प्रयोग होता है उन पदों का कुछ अर्थ होता है। जिन पदों के अर्थ का क्रिया से सम्बन्ध होता है, उन पदों के अर्थ के धर्म को कारक कहते हैं। यदि वाक्य में प्रयुक्त किसी पद के अर्थ का क्रिया से सम्बन्ध नहीं होता है तो उस पद के अर्थ के धर्म को कारक नहीं कहेंगे। संस्कृत भाषा में वाक्य में प्रयुक्त पदों के इस धर्म य उपाधि को छः प्रकार का माना गया है। इस उदाहरण से इन छः प्रकार के धर्मों को सरलता से समझ सकेंगे-

रामस्य पुत्रः देवदत्तः ग्रामे गोष्ठात्

स्वहस्तेन ब्राह्मणाय गाम् ददाति।

इस वाक्य में 'ददाति' यह क्रियापद है जिसका अर्थ है- देता है। यहाँ 'ददाति' इस क्रिया के करने में पुत्र देवदत्त देने का कार्य करता है। अतः पुत्रः देवदत्तः का ददाति क्रिया से सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध को या इस प्रकार के पद के अर्थ के धर्म को कर्त्ता कहते हैं। ग्राम देने की क्रिया का आधार है जिसे व्याकरण में अधिकरण कहा जाता है। आधार पर क्रिया होती है अतः वह भी क्रिया से सम्बद्ध है।

गोष्ठ (गोशाला) वह स्थान है जहाँ से दी जाने वाली गो अलग हो रही है। अतः गो" का भी देना क्रिया से सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध को अपादान कहते हैं। हस्त देने में सहायक है, अतः वह भी कारक है जिसे करण कहा जाता है। ब्राह्मण को गौ दी जा रही है, अतः ब्राह्मण का भी क्रिया से सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध सम्प्रदान कहलाता है। गौ वह वस्तु है जो दी जा रही है। कर्त्ता देना क्रिया से गौ को चाहता है। अतः गौ भी कारक है तथा इस कारक को कर्म कहते हैं।

उपर्युक्त वाक्य में एक पद ऐसा है जिसके अर्थ का क्रिया से सम्बन्ध नहीं है अपितु दूसरे नाम पद के अर्थ से सम्बन्ध है। यह पद है- रामस्य। राम का सम्बन्ध देवदत्त से है देना क्रिया से नहीं। अतः राम पद का अर्थ जिस पितृत्व सम्बन्ध को कहता है उसका पुत्र से सम्बन्ध है जो देवदत्त का विशेषण है क्रिया से राम का सम्बन्ध नहीं है। इसलिए दो नामार्थों या प्रातिपदिकार्थों के सम्बन्ध की बोधक षष्ठी विभक्ति कारक विभक्ति नहीं होती है। इसलिए स्पष्ट है कि संस्कृत में कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण ये छः ही कारक होते हैं। सम्बोधन कर्त्ता का ही भेद है अलग कारक नहीं है। कर्त्ता के प्रायोजक को हेतु और कर्त्ता दोनों ही नाम दिए जाते हैं परन्तु क्रिया से सम्बन्ध होने के नाते प्रायोजक, कर्त्ता ही होता है। केवल णिच् प्रत्यय के विधान के लिए पाणिनि ने प्रायोजक की हेतु संज्ञा की है। 'देवदत्तः यज्ञदत्तेन पाचयति' इस वाक्य में पकवाने का कार्य देवदत्त ही करा रहा है अतः वह कर्त्ता है परन्तु पकाने की क्रिया यज्ञदत्त करता है अतः यह भी कर्त्ता है। प्रायोजक देवदत्त के व्यापार का बोध कराने के लिए पच् धातु से णिच् प्रत्यय होता है। इसी के लिए प्रायोजक देवदत्त की हेतु संज्ञा की गई है।

17.4 कारकों की विवक्षाधीनता

संस्कृत व्याकरण में एक नियम है -'सर्वेषामेव कारकाणां सम्बन्ध मात्र विवक्षित षष्ट्येव।' अर्थात् सभी कारकों के स्थान पर सम्बन्ध की विवक्षा में षष्ठी ही होती है। इसी बात को 'विवक्षाधीनानि कारणानि भवन्ति' अर्थात् कारक विवक्षा के अधीन होते हैं। इस उक्ति में कहा है 'देवः का" भिनत्ति' में का" कर्म है। वहीं 'का" भिद्यते स्वयमेव' में कर्त्ता हो जाता है। 'देवः काष्ठैः पचति' में का" करण है, परन्तु 'का"ानि पचन्ति'अमें

वही कर्त्ता हो जाता है। 'स्थाल्यां पचति' में स्थाली अधिकरण है, परन्तु 'स्थाली पचति' में वही कर्त्ता बन जाती है।

एक ही वाक्य में एक ही पदार्थ विवक्षा भेद से भिन्न-भिन्न कारकों से संयुक्त हो सकता है। आत्म आत्मना आत्मानं जानाति। इस वाक्य में एक ही आत्मा पदार्थ बुद्धि भेद से कर्त्ता, करण तथा कर्म कारक से युक्त है।

17.5 उपपद विभक्ति

वाक्य में प्रयुक्त किसी विशेष पद के साथ सम्बन्ध होने से जो विभक्ति लगती है उसे उपपद विभक्ति कहते हैं। प्रथमा तथा सम्बोधन को छोड़कर सभी विभक्तियाँ उपपद विभक्तियाँ हो सकती है। रामं प्रति, रामेण सह, रामाय नमः, रामाद् बिना, रामस्य तुल्य और साधु पदों के कारण राम पद से क्रमशः द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी और सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है। इसलिए इन स्थलों में इन्हें उपपद विभक्ति कहेंगे। उपपद विभक्ति दो नामार्थों के सम्बन्ध को ही प्रकट करती है। उसका क्रिया से कोई सम्बन्ध नहीं होता। इसलिए उपपद विभक्ति कारक विभक्ति नहीं होती।

17.6 कारक और विभक्ति

संस्कृत में कारक तथा विभक्ति दो स्वतन्त्र तत्त्व हैं। विभक्ति का सम्बन्ध पद के स्वरूप से है अतः वह शुद्ध रूप से व्याकरण का तत्त्व है परन्तु कारक एक आरोपित तत्त्व है। वास्तव में कारक पदार्थ का एक विशेष धर्म या उपाधि है परन्तु विभक्ति पद का मूर्त अवयव है जो पद के अन्त में सुनाई देता है। 'दधि आनय' जैसे कुछ ही ऐसे स्थल हैं जहाँ विभक्ति का श्रवण नहीं होता तथा उसका अर्थ विद्यमान रहता है। ऐसे स्थलों पर भाषा वैज्ञानिकों ने शून्य विभक्ति की कल्पना की है। पाणिनि ने इसे ही लोप या लुक् कहा है। विभक्ति की दृष्टि से 'तण्डुलाः सन्ति', 'तण्डुलाः पच्यन्ते' इन दोनों में कोई अन्तर नहीं है, क्योंकि दोनों ही वाक्यों में तण्डुलाः पद में प्रथमा विभक्ति है परन्तु कारक की दृष्टि से अन्तर है। पहले वाक्य में तण्डुला कर्त्ता है तथा दूसरे वाक्य में वही कर्म है। इसी प्रकार 'देवदत्तः गच्छति, देवदत्तेन गम्यते' इन दोनों वाक्यों में देवदत्तः तथा देवदत्तेन कर्त्ता है परन्तु विभक्ति की दृष्टि से पहले में प्रथमा तथा दूसरे में तृतीया है। एक ही विभक्ति कई कारकों का बोध करा सकती है। जैसे - कर्त्ता कारक के बोध के लिए प्रथमा, तृतीया या कभी-कभी षष्ठी भी प्रयुक्त होती है। इसलिए कारक और विभक्ति दो स्वतन्त्र तत्त्व होते हैं।

17.7 वर्णित विभक्ति

इस इकाई में आप प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति के सूत्रों एवं उदाहरणों का अध्ययन करेंगे-

- **प्रथमा विभक्ति**

➢ **प्रातिपदिकार्थ-लिङ्ग-परिमाण-वचन-मात्रे प्रथमा**

केवल प्रातिपदिकार्थ, लिङ्ग मात्र अधिक अर्थ, परिमाणमात्र अधिक अर्थ और संख्यामात्र अर्थ में प्रथमा विभक्ति होती है। नियत उपस्थिति वाले अर्थ को अर्थात् जिस अर्थ की प्रतीति अवश्य होती है, उसे

प्रातिपदिकार्थ कहा जाता है। मात्र शब्द का प्रत्येक के साथ सम्बन्ध है। अर्थात् सूत्र में प्रयुक्त मात्र शब्द का सूत्र के अन्य सभी शब्दों के साथ सम्बन्ध होता है। केवल प्रातिपदिकार्थ में, लिंगमात्र आदि की अधिकता में, परिमाण मात्र और संख्यामात्र में प्रथमा विभक्ति होती है। उदाहरण के लिए उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्। ये पाँच प्रातिपदिक के उदाहरण हैं। इनमें प्रथमा विभक्ति प्रातिपदिकार्थ मात्र में आई है अर्थात् इनमें प्रथमा विभक्ति का अर्थ केवल प्रातिपदिक का नियत (अवश्य) प्रतीत होने वाला अर्थ है।

अनियतलिंग शब्द लिंगमात्र के आधिक्य के उदाहरण हैं- तटः, तटी, तटम्। तट शब्द कहने से किसी लिंग का भान स्पष्ट नहीं होता है। तटः कहने पर पुलिंग की तटी कहने पर स्त्रीलिंग की तटम् कहने पर नपुंसकलिंग की प्रतीति होती है, किसी की नियत प्रतीति नहीं होती है। अनियत प्रतीति होने से ये शब् अनियत लिंग हैं अतः प्रातिपदिकार्थ से अधिक लिंगमात्र अर्थ की प्रतीति होने से लिंगमात्र की अधिकता के उदाहरण हैं।

इसी प्रकार द्रोण व्रीहिः (द्रोण भर चावल) इस स्थल पर द्रोण शब्द का अर्थ द्रोण से परिमित है। यहाँ परिमित अर्थ अधिक है, अतः प्रातिपदिकार्थ से परिमाण अर्थ अधिक होने पर भी प्रथमा विभक्ति होती है।

एकः द्वौ, बहवः इन पदों से क्रमशः एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन की विभक्ति नहीं होनी चाहिए क्योंकि जिस एकत्व, द्वित्व और बहुत्व के बोध के लिए 'सु' और 'जस्' विभक्तियाँ आती हैं उनका बोध प्रातिपदिक से हो जाता है फिर विभक्ति किस लिए? इस आपत्ति के निवारण के लिए पाणिनि ने संख्या अर्थ की अधिकता में भी प्रथमा का विधान किया है।

प्रातिपदिकार्थ के अतिरिक्त सम्बोधन अर्थ अधिक होने पर भी प्रथमा विभक्ति होती है। हे राम! मां पाहि। यहाँ पर राम प्रातिपदिकार्थ के अर्थ से सम्बोधन अर्थ अधिक होने पर भी प्रथमा विभक्ति होती है।

- **द्वितीया विभक्ति**

➢ **कर्तुरीप्सिततम कर्म**

कर्ता क्रिया के द्वारा जिसे विशेष रूप से प्राप्त करना चाहता है उस कारक की कर्म संज्ञा होती है। जैसे पयसा ओदनं भुच्क्ते। दूध से भात खाता है। इस उदाहरण में भोजन क्रिया के द्वारा भोजन कर्ता के पय और ओदन दोनों इप्सित-इष्ट हैं। क्योंकि वह दोनों को खाता है, परन्तु केवल दूध पीने से सन्तुष्ट नहीं होता है। अपितु दूध मिला भात खाकर ही सन्तुष्टि प्राप्त करता है, अतः इसमें प्रधानता ओदन की ही है, पय तो ओदन का संस्कार करने वाला है, अतः विशेष इष्ट ओदन है, उसकी कर्म संज्ञा होती है। पय तो ओदन के भोजन में सहायक है अर्थात् करण है, कर्म नहीं, करण होने से उसमें तृतीया विभक्ति आई है।

➢ **कर्मणि द्वितीया**

अकथित (अनभिहित, अनुक्त) कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-हरिं भजति। हरि को भजता है। यहाँ भजन क्रिया का कर्म हरि है, क्योंकि कर्ता (भक्त) का भजन क्रिया के द्वारा हरि प्राप्त करने के लिए इष्टतम है, अतः 'कर्तुरीप्सिततम कर्म' इस सूत्र से इसकी कर्म संज्ञा हुई और तब कर्मणि द्वितीया से द्वितीया विभक्ति।

➢ **तथायुक्तं चाऽनीप्सितम्**

ईप्सिततम के समान क्रिया के द्वारा प्राप्त करने के लिए जो अनीप्सित अर्थात् ईप्सित न हो, उस कारक की भी कर्म संज्ञा होती है। ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति। गाँव को जाते हुए तृण को छूता है। इस उदाहरण में जाना क्रिया मुख्य है, उस क्रिया में ईप्सिततम- अत्यन्त इष्ट ग्राम है, उसकी तो '**कर्तुरीप्सिततम कर्म**' सूत्र से कर्म संज्ञा हो जाती है, परन्तु तृण को छूना उसमें ईप्सित नहीं। वह चलते-चलते अनायास ही तृण को स्पर्श करता है। तृण कर्ता का ईप्सित न होने के कारण अनीप्सित है। इसलिए '**तथायुक्तं चाऽनीप्सितम्**' सूत्र से तृण में भी कर्म संज्ञा हो जाती है।

ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते। (भात खाते हुए विष खाता है।) इस उदाहरण में विष ईप्सित नहीं है। वह विष को नहीं खाना चाहता है। वह भात खाना चाहता है। कोई उसे धोखे से विष से युक्त भात खिलाना चाहता है। वह भी भात समझकर उसे खा लेता है। भोजन क्रिया के द्वारा कर्ता का प्राप्य इष्टतम ओदन है। इसलिए 'कर्तुरीप्सिततम कर्म' सूत्र से कर्म संज्ञा हो जाती है। परन्तु भोजन क्रिया के द्वारा कर्ता का प्राप्य इष्टतम विष नहीं, इष्ट भी नहीं है। इसलिए 'तथायुक्तं चाऽनीप्सितम्' सूत्र से विष में भी कर्म संज्ञा का विधान किया जाता है।

- **अकथितं च**

जब किसी कारक की अपादान आदि विशेष संज्ञा न कहनी हो तो उसकी भी कर्म संज्ञा हो जाती है। सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि जब अपादान आदि कारकों को अपादान आदि के रूप में प्रकट करना इष्ट न हो, केवल साधारण रूप में उन्हें कारक ही प्रकट करना हो तो उन्हें कर्म मान लिया जाता है।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. कारक कितने होते हैं?
2. विभक्तियों की संख्या कितनी है?
3. प्रातिपदिक के अर्थ में विभक्ति होती है?
4. कर्म संज्ञा विधायक सूत्र है?
5. हरिं भजति में द्वितीया विधायक सूत्र है?

- **दुह्-याच्-पच्-दण्ड्-रुधि-प्रच्छि-चि-ब्रू-शासु-जि-मथ्-मुषाम्।**
  कर्मयुक् स्याद् अकथितं तथा स्याद् नी हृ-कृष्-वहाम्।।

अर्थात् दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, हृ, कृष् और वह् इन धातुओं के कारक की ही कर्म संज्ञा होती है। उदाहरण-देवदत्तः गां पयः दोग्धि। (देवदत्त गाय से दूध दुहता है।)इस वाक्य में दुह् क्रिया द्वारा कर्त्ता को पयः ईप्सिततम है। अतः पयः 'कर्तुरीप्सिततम कर्म' से कर्म संज्ञक है। पयः इस कर्म से सम्बद्ध अन्य कारक यहाँ गो है जिससे पयः निकाला जा रहा है। अर्थ की दृष्टि से यहाँ गो

अपादान है क्योंकि उससे पयः अलग हो रहा है। पयः के निकालने मे ें गो अवधि भूत (ध्रुव) है अतः वह अपादान है परन्तु दुह् धातु के कर्म पयस् से सम्बद्ध होने के कारण गो की कर्म संज्ञा हो जाती है। कर्म संज्ञा होने से द्वितीया विभक्ति होती है। इसलिए **देवदत्तः गां पयः दोग्धि** में गाम् अकथित कर्म है तथा पयः मुख्य कर्म है। अकथित कर्म को व्याकरण में गौणकर्म भी कहा जाता है।

बलिं याचते वसुधाम्। (बलि से पृथ्वी माँगता है।) इस उदाहरण में बलि अपादान कारक है, पर प्रकृत नियम के अनुसार इनकी अविवक्षा किये जाने पर कर्म संज्ञा होती है और तब उसमें द्वितीया विभक्ति आती है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण भी समझे जा सकते हैं।

तण्डुलान् ओदनं पचति। (चावलों से भात पकाता है।) **गर्गान् शतं दण्डयति।** (गर्गों से सौ रूपये दण्ड लेता है।) **व्रजम् अवरुणद्धि गाम्।** (व्रज में गौ को रोकता है।) **माणवकं पन्थानं पृच्छति।** (लड़के से रास्ता पूछता है।) **वृक्षम् अवचिनोति फलानि।** (वृक्ष से फलों को चुनता है।) **माणवकं धर्मं ब्रूते शास्ति।** (लड़के को धर्म कहता है या समझाता है।) **शतं जयति देवदत्तम्।** (देवदत्त से सौ रूपये जीतता है।) **सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति।** (अमृत के लिए क्षीरसागर को मथता है।) **देवदत्तं शतं मुष्णाति।** (देवदत्त से सौ रूपये चुराता है।) **अजाम् ग्रामं नयति, हरति, कर्षति वहति वा।** (ग्राम में बकरी को ले जाता है या खींचता है या पहुँचाता है।)

- **हृक्रोरन्यतरस्याम्**

हृ और कृ धातुओं का अण्यन्त अवस्था का जो कर्ता हो, वह ण्यन्त अवस्था में विकल्प से कर्मसंज्ञक हो जाता है। **हारयति कारयति वा भृत्यं भृत्येन वा कटम्।** इस उदाहरण में भृत्य चटाई को ले जाता है या भृत्य चटाई को बनाता है, उसकों अन्य के द्वारा प्रेरित किया जा रहा है। अतः भृत्य से चटाई लिवा जाता है या भृत्य से चटाई बनवाता है। इस वाक्य में ले जाना अर्थ में हृ धातु का तथा बनाना अर्थ में कृ धातु का प्रयोग है। इसके प्रयोज्य कर्ता भृत्य की 'हृक्रोरन्यतरस्याम्' सूत्र से कर्मसंज्ञा विकल्प से हो गई, कर्मसंज्ञा पक्ष में प्रयोज्य कर्ता भृत्य से द्वितीया विभक्ति हुई और जब कर्मसंज्ञा नहीं हुई उस पक्ष में कर्ता के अनुक्त होने से तृतीया विभक्ति हुई।

- **अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्म**

अधि उपसर्ग पूर्वक शीघ् (सोना), स्था (रहना) और आस् (बैठना) धातुओं के आधार की कर्मसंज्ञा होती है। अधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते वैकुण्ठं हरिः। (हरि वैकुण्ठ में सोते हैं, रहते हैं।) इन उदाहरणों में क्रिया का आधार वैकुण्ठ है। अधि सप्तमी के अर्थ आधार का द्योतक है। अतः वैकुण्ठ की 'अधिशीस्थाऽऽसां कर्म' सूत्र से कर्म संज्ञा होती है और 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति आती है।

- **अभिनिविशश्च**

'अभि-नि' इसके पूर्व में रहने पर 'विश्' धातु के आधार की कर्मसंज्ञा होती है। अभिनिविंशते सन्मार्गम्। इस उदाहरण में 'अभि-नि' यह विश् धातु के पूर्व में विद्यमान है और सन्मार्ग प्रवेश क्रिया का आधार है, अतः इसकी कर्मसंज्ञा हो गई और कर्मसंज्ञा में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

- **उपान्वध्याङ्वसः**

उप, अनु, अधि और आङ् पूर्वक 'वस्' धातु के आधार की कर्मसंज्ञा होती है। उपवसति, अनुवसति, अधिवसति, आवसति वा वैकुण्ठं हरिः। (अर्थात् हरि वैकुण्ठ में रहते हैं।) इन उदाहरणों में उप, अनु, अधि और आघ् वस् धातु से पूर्व में प्रयुक्त हुए हैं। उस वस् धातु का आधार वैकुण्ठ है। 'उपान्वध्याङ्वसः' इस सूत्र से वैकुण्ठ आधार की कर्मसंज्ञा हुई और कर्मसंज्ञा में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

- **अन्तराऽन्तरेण युक्ते**

अन्तरा (मध्य में) और अन्तरेण (बिना) अव्ययों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। **अन्तरा त्वां मां हरिः।** (तुम्हारे और मेरे बीच में हरि है।)इस उदाहरण में मध्यार्थक 'अन्तरा' के योग में त्वाम् और माम् इन में द्वितीया विभक्ति हुई। **अन्तरेण हरिं न सुखम्।** (हरि के बिना सुख नहीं मिलता।) इस उदाहरण में विनार्थक 'अन्तरेण' शब्द के योग में हरि शब्द से द्वितीया विभक्ति हुई।

- **अनुर्लक्षणे**

अनु उक्तसंज्ञ अर्थात् कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है। यदि लक्षण द्योत्य हो।

- **कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया**

कर्मप्रवचनीय से युक्त से द्वितीया विभक्ति होती है। जपम् अनु प्रावर्षत्। (जप के कारण खूब वर्षा हुई।) इस उदाहरण में अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई। यहाँ जप लक्षण है और वर्षा लक्ष्य। इनके सम्बन्ध को अनु प्रकट करता है। इसलिए 'अनुर्लक्षणे' सूत्र से लक्षण द्योतक होने के कारण अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई और उससे युक्त जप से 'कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति हुई।

- **तृतीयार्थे**

तृतीया के अर्थ साहित्य (सहभाव) प्रकट होता है तो अनु कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है। नदीम् अनु अवसिता सेना। (नदी के साथ सेना संबद्ध-जुड़ी है।) इस उदाहरण में तृतीयार्थ (सहभाव) अनु के द्वारा प्रकट होता है। अतः उसकी कर्मप्रवचनीय संज्ञा हो जाती है और उसके योग में नदी शब्द से द्वितीया विभक्ति 'कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया' सूत्र से हुई।

- **हीने**

हीन अर्थ के प्रकट होने में अनु कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है। अनु हरिं सुराः। (देवता हरि से हीन है। इस उदाहरण में अनु से हीन अर्थ प्रकट हो रहा है अतः उसकी कर्मप्रवचनीयं संज्ञा होती है तब उससे युक्त हरि शब्द से 'कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति आती है।

- **अधि-परी अनर्थकौ**

अधि और परि अनर्थक होने पर अर्थात् जब किसी विशेष अर्थ को न प्रकट करता हो, तब कर्मप्रवचनीयसंज्ञक होते हैं। कुतः अधि आगच्छति, कुतः परि आगच्छति। (कहाँ से आता है।) इन दोनों उदाहरणों का अर्थ समान है। इनमें प्रयुक्त अधि और परि किसी विशेष अर्थ को प्रकट न करने से कर्मप्रवचनीय संज्ञक होते हैं। कर्मप्रवचनीय संज्ञा में द्वितीया विभक्ति होती है।

- **सु पूजायाम्**

सु की प्रशंसा अर्थ में कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है। सु सिक्तम् (अच्छा सींचा), सु स्तुतम् (अच्छी स्तुति की) इन दोनों उदाहरणों में सु का अर्थ प्रशंसा है, अतः इनकी कर्मप्रवचनीय संज्ञा हो जाती है।

- **अतिरतिक्रमणे च**

अतिक्रमण और पूजा या प्रशंसा अर्थों में अति की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है। अति देवान् कृष्णः (कृष्ण संसार के रक्षण में देवताओं से बढ़कर हैं अथवा अच्छे हैं।) इस उदाहरण में अतिक्रमण और प्रशंसा अर्थ में अति की कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई है। तब उससे युक्त देव शब्द से द्वितीया विभक्ति आई है।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. दुह् धातु के योग में विभक्ति होती है?
2. उपवसति में कर्म संज्ञा विधायक सूत्र है?
3. अनु उक्तसंज्ञ की संज्ञा होती है?
4. अनु हरिं सुरा में कर्मप्रवचनीय संज्ञा विधायक सूत्र है?
5. सु पूजायाम् सूत्र करता है?

17.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने कारक, विभक्ति एवं उनके प्रकारों के विषय में जाना। इसके अन्तर्गत प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति, कर्म तथा कर्मप्रवचनीय संज्ञा करने वाले सूत्रों के विषय में अध्ययन किया। इस इकाई में प्रथमा एवं द्वितीय विभक्ति के उदाहरणों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है

17.9 कठिन शब्दावली

- **कारक**

  प्रातिपदिक का वह धर्म जो क्रिया की निवृत्ति में समर्थ होता है, कारक कहलाता है।

- **उपपद विभक्ति**

  किसी विशेष पद के साथ सम्बन्ध होने से प्रयुक्त विभक्ति को उपपद विभक्ति कहते हैं।

17.10 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. छः।
2. सात।
3. प्रथमा।
4. कर्तुरीप्सिततम कर्म।
5. कर्मणि द्वितीया।

अभ्यास प्रश्न 2

1. द्वितीया।

2. उपान्वध्याङ्वसः।

3. कर्मप्रवचनीय।

4. हीने।

5. कर्मप्रवचनीय संज्ञा

17.11 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

17.12 अभ्यासार्थ प्रश्न

निम्नलिखित सूत्रों के अर्थ और उदाहरण स्पष्ट कीजिए-

प्रातिपदिक लिङ्ग परिमाण वचन मात्रे प्रथमा। कर्तुरीप्सिततम कर्म। कर्मणि द्वितीया। तथायुक्तं चानीप्सितम्। अकथितं च।

अष्टादश इकाई

कारक प्रकरण – तृतीया एवं चतुर्थ विभक्ति

संरचना

18.1 प्रस्तावना

18.2 उद्देश्य

18.3 वर्णित विभक्ति – तृतीया विभक्ति

- स्वयं आकलन प्रश्न
  अभ्यास प्रश्न-1

18.4 वर्णित विभक्ति- चतुर्थ विभक्ति

- स्वयं आकलन प्रश्न
  अभ्यास प्रश्न-2

18.5 सारांश

18.6 कठिन शब्दावली

18.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

18.8 सहायक ग्रन्थ

18.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

18.1 प्रस्तावना

पूर्व इकाई में आपने कारक, विभक्तियों एवं उनके प्रकार के विषय में अध्ययन किया । जिसके अन्तर्गत आपने विशेष रूप से प्रथमा तथा द्वितीय विभक्ति के सूत्रों की उदाहरण सहित व्याख्या का अध्ययन किया। प्रस्तुत इकाई में आप तृतीया एवं चतुर्थी विभक्ति के सूत्रों एवं उदाहरणों का अध्ययन करेंगे।

18.2 उद्देश्य

इस इकाई के पश्चात् आप जानने में सक्षम होंगे-

- तृतीया विभक्ति के सूत्रों सहित उदाहरण।
- चतुर्थी विभक्ति के सूत्रों सहित उदाहरण।

18.3 वर्णित विभक्ति- तृतीया विभक्ति

इस इकाई में आप तृतीया एवं चतुर्थी विभक्ति के सूत्रों एवं उदाहरणों का अध्ययन करेंगे-

- **तृतीया विभक्ति**

➢ **साधकतमं करणम्**

क्रिया की सिद्धि में प्रकृष्ट उपकारक कारक की करणसंज्ञक होता है अर्थात् क्रियाफल की सिद्धि में जो सबसे अधिक सहायक होता है उसकी कर्मसंज्ञा होती है।

➢ **कर्तृकरणयोस्तृतीया**

अनुक्त कर्त्ता और करण में तृतीया विभक्ति होती है। रामेण बाणेन हतो बाली (राम ने बाण से बाली को मारा) इस वाक्य में हनन क्रिया में स्वतन्त्र रूप से विवक्षित राम है, उसकी कर्तृसंज्ञा होती है और प्रकृष्ट उपकारक के रूप में विवक्षित बाण है, अतः दोनों से तृतीया विभक्ति हुई।

- **दिव कर्म च**

दिव् धातु के प्रकृष्ट उपकारक कारक की कर्मसंज्ञा भी होती है। अक्षैः अक्षान् वा दीव्यति (पासों से या पासों को खेलता है।) इस वाक्य में देवन (जुआ खेलना) का प्रकृष्ट उपकारक कारक अक्ष हैं, अतः उनकी कर्म और करण संज्ञा हो जाती है। तब करण में 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से तृतीया और कर्म में 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति होती है।

- **सहयुक्तेऽप्रधाने**

सह के अर्थ - सहवाचक के वाचक शब्दों से युक्त अप्रधान में तृतीया विभक्ति आती है। पुत्रेण सहाऽऽगतः पिता (पुत्र के साथ पिता आया।) इस वाक्य में आगमन क्रिया में पिता और पुत्र का सहभाव सह शब्द के योग में अप्रधान पुत्र से तृतीया विभक्ति आई है।

- **येनाऽङ्गविकारः**

जिस अंग के विकृत- विकारयुक्त होने से सम्पूर्ण अंगी -शरीर का विकार प्रतीत होता है, उससे तृतीया विभक्ति होती है। अक्ष्णा काणः (आँख से काना) इस वाक्य में अक्षि शब्द से तृतीया हुई है। अक्षि अंग विकृत है, उसके कारण उस सम्पूर्ण पुरुष को ही काण कहा जा रहा है, अतः विकृत अंग के कारण अंगी के विकार का कथन होने से यहाँ विकृत अंग के वाचक अक्षि शब्द से तृतीया विभक्ति होती है।

- **इत्थंभूतलक्षणे**

इत्थंभूत - प्रकार विशेष को प्राप्त- के ज्ञापक (सूचक) से तृतीया विभक्ति होती है। जटाभिस्तापसः (जटाओं से यह तापस है।) इस वाक्य में तापसत्व रूप अन्य अवस्था को प्राप्त का ज्ञापक जटा है, अतः जटा से तृतीया विभक्ति हो गई है।

- **संज्ञोऽन्यतरस्याम्**

सम् उपसर्ग पूर्वक ज्ञा धातु के कर्म में तृतीया विभक्ति विकल्प से आती है। पित्र पितरं वा संजानीते (पिता को यह पहचानता है।) इस वाक्य में सम् उपसर्ग पूर्वक ज्ञा धातु का कर्म पिता है, उससे पक्ष में तृतीया होती है। पक्ष में कर्म द्वितीया कर्मणि द्वितीया सूत्र से हो ही जाती है।

- **हेतौ**

हेतु बोधक शब्द से तृतीया विभक्ति आती है। पुण्येन दृष्टो हरिः (पुण्य से हरि के दर्शन हुए।) इस वाक्य में दर्शन क्रिया का कारण पुण्य है, अतः यह हेतु है। हेतुबोधक शब्द पुण्य से तृतीया विभक्ति हुई।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. क्रिया की सिद्धि में प्रकृष्ट उपकारक की संज्ञा होती है?

2. रामेण बाणेन हतो बाली में विभक्ति है?

3. अक्षैः अक्षान् वा दीव्यति में कर्म संज्ञा विधायक सूत्र है?

4. अङ्ग विकार के योग में विभक्ति होती है?

5. हेतौ सूत्र का उदाहरण है?

18.4 वर्णित विभक्ति- चतुर्थी विभक्ति

- **कर्मणा यम् अभिप्रैति स सम्प्रदानम्**

दान क्रिया के कर्म के द्वारा कर्त्ता जिसकी ओर विशेष रूप से (दान क्रिया की सिद्धि के लिए) जाता है, उसे सम्प्रदान कहते हैं।

- **चतुर्थी सम्प्रदाने**

सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। विप्राय गां ददाति (ब्राह्मण को गाय देता है।) इस वाक्य में दान क्रिया की सिद्धि के लिए गो रूप कर्म के द्वारा कर्त्ता ब्राह्मण के अभिमुख विशेष रूप से उपस्थित होता है। अतः उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति आई है।

- **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः**

रुचि अर्थ वाले धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण की सम्प्रदान संज्ञा होती है। हरये रोचते भक्तिः। (हरि को भक्ति अच्छी लगती है।)इस वाक्य में रुचि अर्थ के रुच् धातु के प्रीयमाण हरि की सम्प्रदान संज्ञा हुई फिर सम्प्रदान संज्ञा में चतुर्थी विभक्ति आती है।

- **धारेरुत्तमर्णः**

धारि धातु के प्रयोग में उत्तमर्ण (साहूकार) की संप्रदान संज्ञा होती है। भक्ताय धारयति मोक्षं हरि (हरि भक्त के लिए मोक्ष धारण करता है अर्थात् भक्त का हरि के ऊपर मोक्ष ऋण है।) इस वाक्य में धारि धातु का प्रयोग है, जिसका अर्थ ऋण धारण करना होता है। अतः उत्तमर्ण भक्त की संप्रदान संज्ञा होती है और फिर संप्रदान संज्ञा में चतुर्थी विभक्ति आई।

- **स्पृहेरीप्सितः**

स्पृहि (चाहना) धातु के प्रयोग में ईप्सित (इष्ट) की संप्रदान संज्ञा होती है। पुष्पेभ्यः स्पृह्यति (फूलों को चाहता है।) इस वाक्य में स्पृहि धातु का प्रयोग है और कर्त्ता की इच्छा का विषय पुष्प है। अतः पुष्प् की संप्रदान संज्ञा होती है और संप्रदान संज्ञा में चतुर्थी विभक्ति होती है।

- **क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रतिकोपः**

क्रुध्, द्रुह, ईर्ष्या और असूया अर्थों के वाचक धातुओं के योग में जो कोप का विषय हो, उसकी संप्रदान संज्ञा होती है। हरये क्रुध्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति वा (हरि पर क्रोध करता है, हरि से द्रोह, ईर्ष्या, असूया करता है।) इन उदाहरणों में क्रुध्, द्रुह, ईर्ष्य और असूय धातुओं का प्रयोग है, अतः कोप के विषय हरि की सम्प्रदान संज्ञा होती है और तब संप्रदान कारक विभक्ति चतुर्थी उससे आई।

- **क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म**

उपसर्ग से युक्त क्रुध् और द्रुह धातु के योग में जिसके प्रति कोप हो, उस कारक की कर्मसंज्ञा होती है। क्रूरम् अभिक्रुध्यति, अभिद्रुह्यति (क्रूर के प्रति क्रोध या द्रोह करता है।) इन उदाहरणों में अभि उपसर्गसहित क्रुध् और द्रुह् का प्रयोग हुआ है। अतः उपसर्गसहित क्रुध् और द्रुह् का योग होने पर कोप के आलम्बन क्रूर की कर्मसंज्ञा होती है।

- **राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः**

राध् और ईक्ष् धातुओं के उस कारक की जिसके विषय में अनेक प्रश्न किये जा रहे हों, संप्रदान संज्ञा होती है। कृष्णाय राध्यति ईक्षते वा (कृष्ण के विषय में किये गये प्रश्नों पर विचार करता है।) इन उदाहरणों में राध् और ईक्ष् धातुओं का प्रयोग हुआ है। कृष्ण के विषय में प्रश्न किय गये हैं, उन पर विचार किये जाने का यहाँ वर्णन है, अतः कृष्ण की सम्प्रदान संज्ञा हुई और तब सम्प्रदान कारक चतुर्थी विभक्ति आती है।

- **अनुप्रतिगृणश्च**

अनु और प्रति से पर गृ धातु के कारक पूर्व व्यापार प्रेरणा के कर्त्ता की सम्प्रदान संज्ञा होती है। होत्रे अनुगृणाति प्रतिगृणाति वा (होता को प्रोत्साहित करता है।) इन उदाहरणों में अनु और प्रति से पर गृ धातु का प्रयोग है और पूर्व व्यापार शंसन (उच्चारण)का कर्त्ता होता है। अतः होता की सम्प्रदान संज्ञा हो जाती है और सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है।

- **परिक्रयणे संप्रदानम् अन्यतरस्याम्**

परिक्रयण (मजदूरी पर रखना) में अत्यन्त उपकारक की संप्रदान संज्ञा विकल्प से होती है। शतेन शताय वा परिक्रीतः। (सौ रूपये पर लिया है या रखा है।) इस उदाहरण में परिक्रयण का अत्यन्त उपकारक कारक शत है। अतः उसकी विकल्प से संप्रदान संज्ञा हो गई और संप्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति आई और पक्ष में करण कारक होने से यथाप्राप्त तृतीया विभक्ति हुई।

- **तुमर्थाच्च भाववचनात्**

इस सूत्र से तुमुन् प्रत्यय के अर्थ में जिस प्रत्यय का विधान किया गया है, तदन्त शब्द से चतुर्थी विभक्ति आती है। यागाय याति (यज्ञ करने को जाता है।) इस वाक्य मेें याग शब्द तुमुन् के अर्थ में आया है। इसलिए याग शब्द से चतुर्थी विभक्ति आती है।

- **नमः-स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलं-वषड्-योगाच्च**

नमः स्वस्ति (कल्याण), स्वाहा (देवताओं को हवि देना), स्वधा (पितरों को देना), अलम् (समर्थ) और वषट् (देवताओं को हवि देना) इन अव्यय पदों के योग में चतुर्थी विभक्ति आती है। हरये नमः (हरि को नमस्कार।) इस वाक्य में अव्यय पद से युक्त हरिशब्द से चतुर्थी विभक्ति आई है। इसी प्रकार प्रजाभ्यः स्वस्ति, अग्नये स्वाहा, पितृभ्यः स्वधा में भी इस सूत्र से चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

- **मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु**

दिवादि गण के मन् धातु के प्राणि भिन्न कर्म में चतुर्थी विभक्ति विकल्प से होती है यदि तिरस्कार वहाँ प्रतीत होता हो। न त्वां तृणाय मन्ये तृणं वा (मैं तुम्हें तृण भी नहीं समझता हूँ।) यहाँ दिवादि गण के मन् धातु

का प्रयोग है, उसका कर्म तृण है और जो प्राणि नहीं है और तिरस्कार भाव यहाँ प्रकट हो रहा है, अतः कर्म तृण से चतुर्थी विभक्ति आई। पक्ष में यथाप्राप्त कर्म कारक द्वितीया विभक्ति आती है।

- **गत्यर्थ-कर्मणि चेष्टायामनध्वनि**

गत्यर्थक धातुओं के कर्म में द्वितीया और चतुर्थी दोनों विभक्तियाँ आती हैं, यदि गति में चेष्टा (शारीरिक क्रिया) हो और कर्म मार्ग न हो। ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति (गाँव को जाता है।) इस वाक्य में गत्यर्थक गम् धातु का प्रयोग है, उसका कर्म ग्राम है, वह मार्ग से भिन्न है और गति यहाँ शारीरिक चेष्टारूप हैं, अतः यहाँ ग्राम शब्द से द्वितीया और चतुर्थी दोनों विभक्तियाँ आती है।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. दान के अर्थ में विभक्ति होती है?
2. रुच् धातु के योग में विभक्ति होती है?
3. पुष्पेभ्यः स्पृह्यति में संज्ञा हुई?
4. क्रुध् एवं द्रुह् धातु में सम्प्रदान संज्ञा विधायक सूत्र है?
5. नमः एवं स्वस्ति के योग में विभक्ति होती है?

18.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने तृतीय एवं चतुर्थी विभक्ति के विषय में जाना। इसके अन्तर्गत कर्म एवं करण तथा सम्प्रदान संज्ञा करने वाले सूत्रों के विषय में अध्ययन किया। इस इकाई में तृतीया एवं चतुर्थी विभक्ति के उदाहरणों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है।

18.6 कठिन शब्दावली

- **स्वस्ति**

  स्वस्ति का अर्थ है कल्याण अथवा मँगल।

- **स्वधा**

  देवताओं अथवा पितरों को हवि देने हेतु।

18.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. करण।
2. तृतीया।
3. दिव कर्म च।
4. तृतीया।
5. पुण्येन दृष्टो हरिः।

अभ्यास प्रश्न 2

1. चतुर्थी।
2. चतुर्थी।
3. सम्प्रदान संज्ञा।
4. क्रुदद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रतिकोपः।
5. चतुर्थी।

18.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

18.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

निम्नलिखित सूत्रों के अर्थ और उदाहरण स्पष्ट कीजिए-

साधकतमं करणम्। दिव कर्म च। सहयुक्तेऽप्रधाने। येनाङ्गविकारः। इत्थंभूतलक्षणे। हेतौ। कर्मणा यम् अभिप्रैति स सम्प्रदानम्। चतुर्थी सम्प्रदाने। स्पृहेरीप्सितः। अनुप्रतिगृणश्च। नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलं वषड् योगाच्च। मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु।

नवदश इकाई

कारक प्रकरण- पञ्चमी एवं षष्ठी विभक्ति

संरचना

19.1 प्रस्तावना

19.2 उद्देश्य

19.3 वर्णित विभक्ति- पञ्चमी विभक्ति

- स्वयं आकलन प्रश्न

  अभ्यास प्रश्न-1

19.4 वर्णित विभक्ति- षष्ठी विभक्ति

- स्वयं आकलन प्रश्न

  अभ्यास प्रश्न-2

19.5 सारांश

19.6 कठिन शब्दावली

19.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

19.8 सहायक ग्रन्थ

19.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

19.1 प्रस्तावना

पूर्व इकाई में तृतीया तथा चतुर्थी विभक्ति के सूत्रों की उदाहरण सहित व्याख्या का अध्ययन किया। प्रस्तुत इकाई में आप पञ्चमी एवं षष्ठी विभक्ति के सूत्रों सहित उनके उदाहरणों का अध्ययन करेंगे।

19.2 उद्देश्य

इस इकाई के पश्चात् आप जानने में सक्षम होंगे-

- पञ्चमी विभक्ति के सूत्रों सहित उदाहरण।
- षष्ठी विभक्ति के सूत्रों सहित उदाहरण।

19.3 वर्णित विभक्ति- वर्णित विभक्ति- पञ्चमी विभक्ति

इस इकाई में आप पञ्चमी एवं षष्ठी विभक्ति के सूत्रों एवं उदाहरणों का अध्ययन करेंगे-

- **पञ्चमी विभक्ति**
- **ध्रुवम् अपायेऽपादानम्**

  जब वियोग हो रहा हो तो उसमें अवधिरूप् कारक की अपदान संज्ञा होती है।
- **अपादाने पञ्चमी**

  अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। ग्रामाद् आयाति (ग्राम से आता है।) इस वाक्य में आना क्रिया के द्वारा वियोग हो रहा है, उसमें अवधिभूत ग्राम की 'ध्रुवम् अपायेऽपादानम्' सूत्र से अपादान संज्ञा होती है और 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से अपादान संज्ञा में पञ्चमी विभक्ति आती है।

धावतोऽश्वात् पतति (दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।) इस वाक्य में वियोग कारक पतन क्रिया में अवधि होने से अश्व की अपादान संज्ञा 'ध्रुवम् अपायेऽपादानम्' सूत्र से हुई और 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति आई।

- **भीत्रऽर्थानां भयहेतुः**

भय और रक्षा करना के अर्थों के वाचक धातुओं के प्रयोग में भय के हेतु की अपादान संज्ञा होती है।

चोराद् बिभेति, चोराद् त्रयते (चोर से डरता है, चोर से बचाता है।) इन दो वाक्यों में भयार्थक 'भी' और रक्षार्थक 'त्रै' धातुओं का प्रयोग हुआ है। इसलिये यहाँ भय के हेतु चोर की 'भीत्रऽर्थानां भयहेतुः' सूत्र से अपादान संज्ञा हुई और फिर 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति आई।

- **पराजेरसोढः**

परा उपसर्गपूर्वक जि धातु के प्रयोग में असह्य पदार्थ की अपादान संज्ञा होती है।
अध्ययनात् पराजयते (अध्ययन से हारता है।) इस वाक्य में परापूर्वक जि धातु का प्रयोग है और ग्लानि या हारने का हेतु अध्ययन है। अतः उसकी 'पराजेरसोढः' सूत्र से अपादान संज्ञा हुई है और 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से अपादान में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

- **वारर्णानाम् ईप्सितः**

वारणार्थक (रोकने अर्थ वाली) धातुओं के प्रयोग में ईप्सित की अपादान संज्ञा होती है। यवेभ्योः गां वारयति (यवों से गाय को रोकता है।) इस वाक्य में वारणार्थक वारि धातु का प्रयोग है। अतः वारणार्थक के इष्ट यव की 'वारर्णानाम् ईप्सितः' सूत्र से अपादान संज्ञा होती है और तब 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से अपादान में पञ्चमी विभक्ति आती है।

- **अन्तर्द्धौ येनाऽदर्शनम् इच्छति**

व्यवधान होने पर छिपने वाला जिसके द्वारा अपना दर्शन नहीं चाहता, जिसके विषय में यह इच्छा हो कि वह मुझे न देखे, उसकी अपादान संज्ञा होती है।

मातुर्निलीयते कृष्णः (माता से कृष्ण छिपता है।)इस वाक्य में माता की अपादान संज्ञा होती है, क्योंकि छिपने का कर्त्ता कृष्ण चाहता है कि माता मुझे न देखे। माता दर्शन की कर्त्ता है, अतः अपादान संज्ञा होकर उसमें पञ्चमी विभक्ति आ गई है।

- **जनिकर्तुः प्रकृतिः**

उत्पत्ति (जन्म लेना) के कर्त्ता के कारण की अपादान संज्ञा होती है। ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते (ब्रह्म से प्रजा उत्पन्न होती हैं।) इस वाक्य मे जायमान प्रजा है और उसका कारण ब्रह्म है। अतः ब्रह्म की 'जनिकर्तुः प्रकृतिः' सूत्र से अपादान संज्ञा होती है और 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से अपादान ब्रह्म में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

- **भुवः प्रभवः**

प्रकट होने के कर्त्ता के प्रथम प्रकट होने के स्थान की अपादान संज्ञा होती है। हिमवतो गङ्गा प्रभवति (हिमालय से गंगा निकलती है।) इस वाक्य में प्रकट होने का कर्त्ता गंगा है और प्रथम आविर्भाव होने का स्थल हिमवत् (हिमालय) है, अतः आविर्भूत पदार्थ गंगा का प्रभव होने से हिमवत् शब्द की 'भुवः प्रभवः' सूत्र से अपादान संज्ञा होती है और फिर अपादान संज्ञक में 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति आती है।

- **पञ्चम्यपाऽऽङ्परिभिः**

अप्, आङ् और परि कर्मप्रवचनीयों के योग में पञ्चमी विभक्ति आती है। अप हरेः, परि हरेः संसारः (हरि के बिना संसार, जन्म-मरण का चक्र।)इन वाक्यों में अप और परि वर्जन अर्थ में प्रयुक्त हुए है अतः 'अपपरी वर्जने' सूत्र से इसकी कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है और 'पञ्चम्यपाऽऽङ्परिभिः' सूत्र से उसे बाधकर इनके योग में हरि शब्द से पञ्चमी विभक्ति आती है।

- **प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्**

जिसका प्रतिनिधि और जिसका प्रतिदान हो, उससे कर्मप्रवचनीय के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। प्रद्युम्नः कृष्णात्प्रति (प्रद्युम्न कृष्ण का प्रतिनिधि है।) यहाँ प्रतिनिधि अर्थ में प्रयुक्त होने से प्रति की 'प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः' सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है और मुख्य रूप कृष्ण से 'प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति आई है।

तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान् (तिलों के बदले उड़द देता है।) यहाँ प्रति की प्रतिदान अर्थ में प्रयुक्त होने से 'प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः' सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है और फिर जिस तिल का प्रतिदान हो रहा है उससे 'प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्' इस सूत्र से पञ्चमी विभक्ति आती है।

- **विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्**

जब हेतु गुण हो और स्त्रीलिंग न हो, तब उस गुणवाचक शब्द से विकल्प से पञ्चमी विभक्ति आती है।

जाड्याद् जाड्येन वा बद्धः (मूर्खता से कैद हुआ।) यहाँ हेतु जाड्य गुण है और यह स्त्रीलिंग भी नहीं। अतः इससे पञ्चमी विभक्ति 'विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्' सूत्र से आई और पक्ष में हेतु तृतीया।

- **पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्**

पृथक्, विना और नाना अव्यय पदों के योग में तृतीया विभक्ति आती है और पञ्चमी तथा द्वितीया भी।

पृथग् रामेण, रामात्, रामं वा (राम के विना) यहाँ पृथक् के योग में राम शब्द से तृतीया, पञ्चमीऔर द्वितीया विभक्तियाँ पर्याय से आती है। इसी प्रकार विना और नाना के योग में भी तृतीया, पञ्चमी और द्वितीया विभक्ति आती है।

- **दूराऽन्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च**

दूर और अन्तिक (समीप) अर्थो के वाचक शब्दों से द्वितीया विभक्ति आती है।

ग्रामस्य दूरम्, दूरात्, दूरेण वा, अन्तिकम्, अन्तिकेन वा (ग्राम से दूर, ग्राम के निकट) यहाँ पर भी दूर और अन्तिक शब्दों का प्रयोग से तीनों विभक्तियों का प्रयोग हुआ है।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 1

1. **ध्रुवम् अपायेऽपादानम्** सूत्र करता है?
2. **ग्रामाद् आयाति** में पञ्चमी विधायक सूत्र है?
3. **यवेभ्यः गां वारयति** में अपादान संज्ञा विधायक सूत्र है?
4. **हिमवतो गङ्गा प्रभवति** में विभक्ति है?
5. **पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्** से होने वाली विभक्तियाँ हैं?

19.4 वर्णित विभक्ति- षष्ठी विभक्ति

कारक और प्रातिपदिकार्थ से भिन्न स्वस्वामिभाव आदि सम्बन्ध शेष है, उस शेष अर्थ में षष्ठी विभक्ति आती है। राज्ञः पुरुषः (राजा का पुरुष) यहाँ पर राज पदार्थ का पुरुष पदार्थ के साथ स्वस्वामिभाव सम्बन्ध है, उस सम्बन्ध का द्योतन करने के लिए राजन् शब्द से षष्ठी विभक्ति आई।

➢ **षष्ठी हेतुप्रयोगे**

हेतु से षष्ठी आती है, यदि हेतु शब्द का ही प्रयोग किया गया हो और हेतु द्योत्य हो। अन्नस्य हेतोर्वसति (अन्न के निमित्त रहता है।) यहाँ अन्न वास का हेतु है और हेतु शब्द का भी प्रयोग है। अन्न को हेतु बताना इष्ट है, अतः अन्न शब्द से षष्ठीविभक्ति आई।

➢ **सर्वनाम्नस्तृतीया च**

सर्वनाम शब्द यदि हेतु हो और हेतु शब्द का भी प्रयोग वाक्य में प्रयोग हो तो सर्वनाम शब्द से तृतीया विभक्ति आती है और षष्ठीभी। केन हेतुना वसति, कस्य हेतो वसति (किस हेतु से रहता है।) यहाँ हेतु शब्द का प्रयोग है, अतः हेतुवाचक सर्वनाम किम् शब्द से तृतीया विभक्ति आई और पक्ष में षष्ठीविभक्ति भी आती है।

➢ **दिक्शब्द इति पञ्चम्या अपवादः**

इस सूत्र से दिक् शब्द के योग में प्राप्त पञ्चमी का यह अपवाद है। ग्रामस्य दक्षिणतः (ग्राम से दक्षिण दिशा की ओर) यहाँ दक्षिणतः शब्द दिक्वाचक है अतः असके योग में षष्ठी विभक्ति आई है। इसी प्रकार ग्रामस्य पुरः, ग्रामस्य पुरस्तात् (गाँव से पूर्व)और ग्रामस्य उपरि, ग्रामस्य उपरिष्टात् (ग्राम से ऊपर) इन वाक्यों में दिक् शब्द का प्रयोग होने से षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया है।

➢ **एनपा द्वितीया**

एनप् प्रत्ययान्त शब्द के योग में द्वितीया विभक्ति आती है। दक्षिणेन ग्रामं ग्रामस्य वा (ग्राम से दक्षिण ओर) यहाँ दक्षिणेन शब्द एनबन्त हैं, अतः इसके योग में ग्राम शब्द से द्वितीया और षष्ठी विभक्तियाँ आती है।

➢ **दूराऽन्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्**

दूर और अन्तिक अर्थक शब्दों के योग में षष्ठी और पञ्चमी विभक्ति आती है। दूरं निकटं ग्रामस्य ग्रामाद् वा (ग्राम से या ग्राम के दूर या समीप) दूरार्थक दूर और अन्तिकार्थक निकट शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति आती है और पक्ष में पञ्चमी भी रहती है।

- **ज्ञोऽविदर्थस्य करणे**

ज्ञानभिन्नार्थ ज्ञा धातु के करण में शेषत्वसंबन्ध की विवक्षा करने पर षष्ठी विभक्ति आती है। सर्पिषो ज्ञानम् (घी के द्वारा प्रवृत्ति) यह ज्ञानम यह ज्ञा धातु का ल्युट्प्रत्ययान्त रूप है और इसका अर्थ ज्ञान नहीं, अपितु प्रवृत्ति है। अतः ज्ञानभिन्न प्रवृत्त्यर्थक ज्ञा धातु के करण सर्पिष से शेषत्व विवक्षा में षष्ठी विभक्ति आती है।

- **अधीगर्थदयेशां कर्मणि**

अधीगर्थ-स्मरणार्थक धातुओं तथा दय और ईश धातुओं के कर्म में शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति आती है। मातुः स्मरणम् (कर्मीभूत माता सम्बन्धी स्मरण) यहाँ स्मरणार्थ स्मृ धातु का ल्युडन्त प्रयोग स्मरण हैं उसके कर्म मातु से शेषत्व की विवक्षा में षष्ठीआती है। सर्पिषो दयनम् (कर्मीभूत सर्पि सम्बन्धी दया) यहाँ दयनम् यह दय धातु का ल्युट्प्रत्ययान्त रूप है। उसके कर्म सर्पिष् से शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति आई है।

- **रुजाऽर्थानां भाववचनानाम् अज्वरे**

रोग अर्थ के वाचक धातुओं से ज्वरि धातु को छोड़कर कर्म में शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी आती है, ज बवह भावकर्तृक हो। चौरस्य रोगस्य रुजा (रोगकर्तृक चोर सम्बन्धिनी पीड़ा) यहाँ रोग का अर्थ व्याधि और रुजा का अर्थ पीड़ा है। रोग शब्द भाववाचक है। रुजा का कर्त्ता भावकर्तृक होने से रुज् के कर्म चौर से शेषत्वविवक्षा में षष्ठी आई।

- **दिवस्तदर्थस्य**

द्यूतार्थक और क्रय-विक्रय-व्यवहार (व्यापार) अर्थक दिव् धातु के कर्म में षष्ठी विभक्ति आती है। शतस्य दीव्यति (सौ रूपये का जुआ खेलता है या व्यापार करता है।) यहाँ द्यूतार्थक और क्रयविक्रय-व्यवहारार्थक दिव् धातु के कर्म शत शब्द से षष्ठी विभक्ति आई।

- **कर्तृकर्मणोः कृति**

कृत् प्रत्यय के प्रयोग होने पर उसी कृत् प्रत्यय से युक्त अनुक्त कर्त्ता और कर्म कारक में षष्ठी विभक्ति आती है। कृष्णस्य कृतिः (कृष्ण की रचना।) यहाँ कृति शब्द कृ धातु से कृत् प्रत्यय है, उसके योग में करण क्रिया के कर्त्ता कृष्ण से षष्ठी विभक्ति आई। भाव में क्तिन् होने से कर्त्ता अनुक्त है। अनुक्त कर्त्ता में प्राप्त तृतीया का अपवाद यह षष्ठी है। जगतः कर्ता कृष्णः (जगत् का बनाने वाला कृष्ण) यहाँ कर्तृ शब्द कृ धातु से कर्ता में ण्वुल्तृचौ सूत्र से तृच् प्रत्यय होकर बना है, अतः कृदयोग होने के कारण क्रिया के अनुक्त कर्म जगत् से षष्ठी विभक्ति आई है।

- **कृत्यानां कर्तरि वा**

कृत्य प्रत्ययान्तों के प्रयोग में उनके अनुक्त कर्त्ता में षष्ठी विभक्ति विकल्प से आती है। मया मम वा सेव्यो हरिः(मुझे हरि की सेवा करनी चाहिए।) यहाँ सेवार्थक सेव् धातु से कर्म में ऋहलोर्ण्यत् सूत्र से ण्यत् कृत्य

प्रत्यय करने पर सिद्ध हुये सेव्य शब्द के प्रयोग में सेवन क्रिया के अनुक्त कर्त्ता अस्मद् से नित्य प्राप्त षष्ठी का विकल्प हो गया, पक्ष में यथाप्राप्त कर्तृतृतीया विभक्ति आई।

- **तुल्यार्थैरतुलोपमभ्यां तृतीयाऽन्यतरस्याम्**

तुला और उपमा शब्दों से भिन्न तुल्य सदृश अर्थ के वाचक शब्दों के योग में तृतीया विकल्प से आती है, पक्ष में षष्ठी आती है। तुल्यः सदृश समो वा कृष्णेन कृष्णस्य वा (कृष्ण के समान) यहाँ तुल्यार्थक तुल्य, सदृश और सम शब्दों के योग में कृष्ण शब्द से तृतीया विभक्ति आई और पक्ष में षष्ठी।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न 2

1. **राज्ञः पुरुषः** में विभक्ति है?
2. **अन्नस्य हेतोर्वसति** में षष्ठी विधायक सूत्र है?
3. **एनपा द्वितीय** का उदाहरण है?
4. **द्यूतार्थक तथा क्रय-विक्रय** व्यवहार अर्थ वाली दिव् धातु के कर्म में विभक्ति होती है?
5. **मया मम वा सेव्यो हरिः** में षष्ठी विभक्ति विधायक सूत्र है?

19.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने पञ्चमी एवं षष्ठी विभक्ति के विषय में जाना। इसके अन्तर्गत अपादान संज्ञा तथा सम्वन्ध वाले सूत्रों के विषय में अध्ययन किया। इस इकाई में पञ्चमी एवं षष्ठी विभक्ति के उदाहरणों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है।

19.6 कठिन शब्दावली

- **विवक्षा**

  अभिलाषा, बोलने की इच्छा, अर्थ, प्रयोजन।

- **द्रोण**

  एक विशेष तोल का बट्टा।

- **परिमित**

  मापा हुआ, सीमित, मितव्ययी।

19.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1. अपादान संज्ञा।
2. अपादाने पञ्चमी।
3. वारर्णानाम् ईप्सितः।
4. पञ्चमी।

5. तृतीय, पञ्चमी तथा द्वितीया।

अभ्यास प्रश्न 2

1. षष्ठी।
2. षष्ठी हेतुप्रयोगे।
3. दक्षिणेन ग्रामं ग्रामस्य वा।
4. षष्ठी।
5. कृत्यानां कर्तरि वा।

19.8 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हँस', मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

19.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों के अर्थ और उदाहरण स्पष्ट कीजिए-

ध्रुवम् अपायेऽपादानम्। भीत्रार्थानां भयहेतुः। पराजेरसोढः। अनतर्द्धौ येनाऽदर्शनम्। जनिकर्तुः प्रकृतिः। भुवः प्रभवः। प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्। विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्। दूराऽन्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च।

2.निम्नलिखित कोष्ठांकित पदों में लगी विभक्तियों के औचित्य को सप्रमाण सिद्ध कीजिए-

चोरात् बिभेति, यवेभ्योः गां वारयति, ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते, अप हरेः, परि हरेः संसारः, तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान्, ग्रामस्य दूरम् दूरात् दूरेण वा, केन हेतुना वसति, कस्य हेतो वसति, दक्षिणेन ग्रामं ग्रामस्य वा, सर्पिषो ज्ञानम्, जगतः कर्ता कृष्णः, तुल्यः सदृश समो वा कृष्णेन कृष्णस्य वा।

विंशतिः इकाई
कारक-4

संरचना

20.1 प्रस्तावना

20.2 उद्देश्य

20.3 वर्णित विभक्ति

- स्वयं आकलन प्रश्न

20.4 सारांश

20.5 कठिन शब्दावली

20.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

20.7 सहायक ग्रन्थ

20.8 अभ्यासार्थ प्रश्न

20.1 प्रस्तावना

पूर्व इकाई में पञ्चमी तथा षष्ठी विभक्ति के सूत्रों की उदाहरण सहित व्याख्या का अध्ययन किया। प्रस्तुत इकाई में आप सप्तमी विभक्ति के सूत्रों सहित उनके उदाहरणों का अध्ययन करेंगे। यह कारक प्रकरण की अन्तिम इकाई है।

20.2 उद्देश्य

इस इकाई के पश्चात् आप जानने में सक्षम होंगे-

- सप्तमी विभक्ति के सूत्रों की व्याख्या।
- सप्तमी विभक्ति के उदाहरण।

20.3 वर्णित विभक्ति

इस इकाई में आप सप्तमी विभक्ति के सूत्रों एवं उदाहरणों का अध्ययन करेंगे-

- **सप्तमी विभक्ति**

➢ **आधारोऽधिकरणम्**

कर्त्ता और कर्म के द्वारा उनमें रहने वाली क्रिया के आधार कारक की अधिकरण संज्ञा होती है।

➢ **सप्तम्यधिकरणे च**

अधिकरण कारक अर्थ में सप्तमी विभक्ति आती है। आधार तीन प्रकार का होता है- औपश्लेषिक, वैषयिक और अभिव्यापक।

औपश्लेषिक 'उप समीपे श्लेषः संयोग इति उपश्लेषः, तेन निर्वत्तः तत्र भवो वा औपश्लेषिकः' इस व्युत्पत्ति के अनुसार उस आधार को औपश्लेषिक कहा जाता है जिसके साथ आधेय का संयोग सम्बन्ध हो।

वैषयिक 'विषयः प्रतिपाद्योऽर्थः तेन निर्वृत्तो वैषयिकः' इस व्युत्पत्ति के अनुसार प्रतिपाद्य अर्थ को वैषयिक आधार कहते हैं।

अभिव्यापक 'अभिव्याप्नोति सर्वम्' इस व्युत्पत्ति के अनुसार अभिव्यापक आधार वह होता है जिसका आधेय के साथ सर्वावयव संयोग हो।

कटे आस्ते (चटाई पर बैठता है।) यह औपश्लेषिक आधार का उदाहरण है। यहाँ आसन क्रिया का आधार उसका कर्त्ता है और कर्त्ता का आधार कट है। इस प्रकार कर्त्ता के द्वारा क्रिया का आधार होने से कट की अधिकरण संज्ञा होती है और तब उसमें सप्तमी आती है।

मोक्षे इच्छाऽस्ति (मोक्ष की इच्छा है।) यह वैषयिक आधार का उदाहरण है। यहाँ इच्छा का विषय होने से मोक्ष की अधिकरण संज्ञा होती है और तब उसमें सप्तमी विभक्ति आती है।

सर्वस्मिन्नात्माऽस्ति (सब में आत्मा है।) यह अभिव्यापक आधार का उदाहरण है। यहाँ आधेय आत्मा सर्व में अभिव्याप्त है। अतः सर्व की अधिकरण संज्ञा होने पर उससे सप्तमी विभक्त आती है।

तिलेषु तैलम् (तिलों में तेल है।) यह भी अभिव्यापक आधार का उदाहरण माना गया है। यहाँ तैल आधेय का आधार तिलों से सर्वात्मना संयोग है न कि किसी अवयव से।

- **यस्य च भावेन भाव लक्षणम्**

जिस की क्रिया से अन्य क्रिया लक्षित हो, उसमें सप्तमी विभक्ति आती है। गोषु दुह्यमानासु गतः (गायों के दुहे जाने के समय गया।) इस वाक्य में दुहना क्रिया का काल ज्ञात है और गमन क्रिया का काल नहीं। अतः दुहना क्रिया यहाँ प्रसिद्ध है और गमन क्रिया अप्रसिद्ध। तब इस प्रसिद्ध दुहना क्रिया के आश्रय कर्म वाचक गो पद से सप्तमी विभक्ति आई, इसकी क्रिया से अनिर्ज्ञातकाल गमन क्रिया लक्षित होती है। प्रसिद्ध क्रिया के वाचक कृत्प्रत्ययान्त 'दुह्यमान' पद से भी उक्त कर्म के विशेषण होने के कारण सप्तमी विभक्ति आई।

- **षष्ठी चाऽनादरे**

जिसकी क्रिया से अन्य क्रिया लक्षित होती हो, उस कर्तृवाचक और कर्मवाचक शब्द से षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियाँ आती है, यदि अन्य क्रिया की सूचना के अतिरिक्त अनादर भी वहाँ प्रतीत होता हो।

रुदित रुदतो वा प्राव्राजीत् (रोते हुये पुत्र आदि की उपेक्षा करके संन्यासी बन गया।) यहाँ रोदन क्रिया से प्रव्रजन क्रिया लक्षित हो रही है और रोते हुओं की उपेक्षा करने से अनादर की प्रतीति होती है, अतः रोदन क्रिया के कर्त्ता के वाचक पुत्र आदि शब्द से षष्ठी और सप्तमी विभक्तियाँ आई। कर्त्ता के विशेषण उससे अन्वित होने वाली रोदन क्रिया के वाचक रुद् धातु के शतृकृत्प्रत्ययान्त रुदत् शब्द से दोनों विभक्तियाँ आई।

- **आयुक्तकुशलाभ्यां चाऽऽसेवायाम्**

आयुक्त (नियुक्त) और कुशल शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी विभक्तियाँ आती हैं, यदि वहाँ तत्परता अर्थ की प्रतीति हो। आयुक्तः कुशलो वा हरिपूजने हरिपूजनस्य वा (हरि के पूजन में नियुक्त या कुशल)

- **यतश्च निर्धारणम्**

जिससे निर्धारण किया जाय, उस समुदायवाचक शब्द से षष्ठी और सप्तमी विभक्तियाँ आती है। नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः (मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है) इस ब्राह्मण का श्रे"ता रूप विशेषता बताने के उद्देश्य से पृथक्करण किया जा रहा है, अतः निर्धारण होने के कारण समुदाय बोधक नृ शब्द से षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियाँ पर्याय से आई है।

- **साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्येप्रतेः**

साधु और निपुण शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति आती है, यदि प्रशंसा प्रकट करनी हो, किन्तु प्रति के प्रयोग में नहीं। मातरि निपुणो साधुर्वा (माता के प्रति भला करने वाला।) यहाँ साधु और निपुण शब्दों के योग में मातृ शब्द से सप्तमी विभक्ति आई क्योंकि यह प्रशंसा का वचन है।

- **सप्तमी पञ्चम्यौ कारकमध्ये**

दो शक्तियों के मध्य में जो काल और अध्वा (देश) हो, उनके वाचक शब्दों से सप्तमी और पञ्चमी विभक्तियाँ आती हैं। अद्य भुक्त्वा अयं द्व्यहे, द्व्यहाद् वा भोक्ता (आज खाकर यह दो दिन में खायेगा।) यहाँ कर्त्ता एक है, पर उसकी शक्ति कालभेद से भिन्न है। एक शक्ति से आज खाता है और दूसरी से दो दिन बाद। अतः कर्त्ता कारक की दो शक्तियों के मध्य काल वाचक द्व्यह से सप्तमी और पञ्चमी ये दो विभक्तियाँ पर्याय से आती है।

- **यस्माद् अधिकं यस्य चेश्वस्यचनम् तत्र सप्तमी**

जिससे अधिकता बताई जाय और जिसका स्वस्वामिभाव सम्बन्ध कहा जाय, उन शब्दों से कर्मप्रवचनीय के योग में सप्तमी विभक्ति आती है। उप परार्धे हरेर्गुणाः (हरि के गुण परार्ध संख्या से भी अधिक है।)यहाँ उप की अधिक अर्थ में कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है और तब प्रकृत सूत्र से उसके योग में, जिससे अधिकता बताई जाती है, उस परार्ध संख्या के वाचक परार्ध शब्द से सप्तमी विभक्ति आई।

- **विभाषा कृञि**

अधि की कृ धातु पर रहते कर्मप्रवचनीय संज्ञा विकल्प से होती है ईश्वर स्वस्वामिभाव अर्थ में।

यद् अत्र माम् अधिकरिष्यति (यदि इस कार्य में मुझे नियुक्त करेगा।) यहाँ अधि से पर करिष्यति यह कृ धातु है। अतः अधि की विकल्प से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हो जाती है।

स्वयं आकलन कीजिए-

अभ्यास प्रश्न

1. साधु और निपुण शब्दों के प्रयोग में कौन सी विभक्ति होती होती है?
2. आधार के अर्थ में विभक्ति होती है?
3. **कटे आस्ते** किस आधार का उदाहरण है?
4. **रुदित रुदतो वा प्राव्राजीत्** में विभक्ति विधायक सूत्र है?
5. **विभाषा कृञि** का उदाहरण है?

20.4 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने सप्तमी विभक्ति के विषय में जाना। इसके अन्तर्गत अधिकरण संज्ञा तथा सप्तमी विभक्ति करने वाले सूत्रों के विषय में अध्ययन किया। इस इकाई में सप्तमी विभक्ति के उदाहरणों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है। यह कारक प्रकरण की अन्तिम इकाई है जिसे व्याकरसिद्धान्तकौमुदी के अन्तर्गत पाठ्यक्रम में लिया गया है।

20.5 कठिन शब्दावली

- **विकृत**

  परिवर्तित, बदला हुआ।

- **प्रातिपदिकम्**

  विभक्ति चिह्न के जुड़ने से पूर्व संज्ञा शब्द।

- **विभाषा**

  विकल्प, नियम की विकल्पता।

20.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न

1. सप्तमी।
2. सप्तमी।
3. औपश्लेषिक।
4. षष्ठी चाऽनादरे।
5. यद् अत्र माम् अधिकरिष्यति।

20.7 सहायक ग्रन्थ

1. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

2. वरदराजप्रणीता लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्दशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

3. श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितविरचिता वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार: श्रीधरानन्द घिल्डियाल, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

4. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल ‘हँस’, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

20.8 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों के अर्थ और उदाहरण स्पष्ट कीजिए-

आधारोऽधिकरणम्। सप्तम्यधिकरणे च। यस्य च भावेन भाव लक्षणम्। षष्ठी चाऽनादरे। यतश्च निर्धारणम्। सप्तमी पञ्चम्यौ कारकमध्ये। विभाषा कृञि।

2.निम्नलिखित कोष्ठांकित पदों में लगी विभक्तियों के औचित्य को सप्रमाण सिद्ध कीजिए-

कटे आस्ते, मोक्षे इच्छास्ति, सर्वस्मिन्नात्माऽस्ति, गोषु दुह्यमानासु गतः, आयुक्तः कुशलो वा हरिपूजने हरिपूजनस्य वा, नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः, मातरि निपुणो साधुर्वा।

समनुदेशन (Assignment) हेतु प्रश्न

समनुदेशन (Assignment) लिखकर अन्तर्राष्ट्रीय दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त अध्ययन केन्द्र को भेजे।

निर्देश - निम्नलिखित में से चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1 निम्न में से दो सूत्रें का अर्थ लिखिए तथा उदाहरण भी दीजिए-

तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः । ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् । चजोः कु घिण्यतोः । युवोरनाकौ ।
रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः । समासेऽनञ् पूर्वे क्त्वो ल्यप्।

प्रश्न 2 निम्नलिखित में से दो की सिद्धि प्रक्रिया लिखिए-

पचेलिमः, ग्लेयम्, स्तुत्यः, भोज्यम्, स्थायी, गृहम्, जनमेजयः, अवावा, पण्डितमन्यः, शीर्णः, उच्छून, जगन्वान्, योक्त्रम्, द्रष्टुम्, पवित्रमम्, उपधिः, सूपानः, प्रहृत्य, हित्वा।

प्रश्न 3 निम्नलिखित सूत्रें में से दो की सोदाहरण व्याख्या कीजिए-

(क) प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्। (ख) नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः।

(ग) एकविभक्ति चापूर्वनिपाते। (घ) तत्रेपपदं सप्तमीस्थम्।

(घ) गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य। (च) सप्तमीविशेषणे बहुब्रीहौ।

प्रश्न 4 निम्नलिखित में से पाँच का विग्रह बतलाते हुए समास प्रक्रिया लिखिए-

उपराजम्, अधिगोपम्, साग्नि, गोहितम्, पूर्वकायः, पौर्वशालः, पञ्चगवम्, अनश्वः, शुक्लीकृत्य, निष्कौशाम्बि, व्याघ्री, द्विरात्रम्, महाराजः, वीर-पुरुषो ग्रामः, चित्रगुः, त्रिमुर्धः, धर्मार्थौ, पाणिपादम्, पितरौ, सखिपथः।

प्रश्न 5 निम्नलिखित सूत्रें में से दो का अर्थ उदाहरण सहित लिखिए-

कर्तुरीप्सिततमं कर्म। तथा युक्तं चानीप्सितम्। ध्रुवमपायेऽपादानम्। कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्। अधिशीङ्ग स्थासां कर्म। गम्यमानाऽपि क्रिया कारक विभक्तौ प्रयोजिका।

प्रश्न 6 निम्नलिखित कोष्ठांकित पदों में लगी विभक्तियों में से दो के औचित्य को सप्रमाण सिद्ध कीजिए-

(विषं) भुङ्क्ते, (गां) दोग्धि पयः, (अक्ष्णा) काणः, (उपाध्यायाद्) अधीते, (क्रूराय) द्रुह्यति, (सर्पिषो) ज्ञानम् ।